10वां संशोधित एवं परिमार्जित संस्करण

भारतीय इतिहास

अति-विशिष्ट

30,000

परीक्षोपयोगी बिन्दु

प्रधान संपादक
आनन्द कुमार महाजन
संपादक
प्रदीप कुमार सिंह
(UPPCS में चयनित)
संपादकीय कार्यालय
यूथ कॉम्पिटिशन टाइम्स
12, चर्च लेन, इलाहाबाद-2
फोन्स : 2466803, 2465650

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन
सभी विवाद इलाहाबाद उच्च न्यायालय के अधीन तय होंगे।

मूल्य : 195/- रुपये

अनुक्रमणिका

भारतीय इतिहास : एक नजर

- प्रमुख भारतीय राजवंश एवं उनकी वंशावली ..... iii-iv
- इतिहास का वर्गीकरण v
- सैंधवकालीन समय निर्धारण v
- वैदिक कालीन शब्द vi
- वेदांग, पुराण एवं स्मृतियां vii
- प्राचीन नदियों और उनके वर्तमान रूप vii
- कला के प्राचीन स्कूल vii
- महाजनपद viii
- संगमकालीन अधिकारी एवं प्रशासनिक इकाइयां ix
- दक्षिण भारत की विभिन्न समाधियां ix
- धार्मिक आंदोलन : जैन, बौद्ध, भागवत धर्म xi
- अशोक कालीन शिलालेख : एक नजर 2
- शुंग एवं सातवाहन वंश 3
- गुप्तकालीन शब्दावली : एक नजर 4
- चोल प्रशासन : शब्दावलियां 5
- भारत में प्रचलित संवत् 6
- दिल्ली सल्तनत : एक नजर 8
- विजय नगर साम्राज्य : एक नजर 9
- भारत में सूफी सिलसिले : एक नजर 10
- मुगल साम्राज्य : एक नजर 11
- मुगलकालीन इमारतें : एक नजर 11
- सिख गुरू एवं सिख मिसलें 12
- बंगाल के नवाब एवं गवर्नर जनरल 12
- गोलमेज सम्मेलन 13
- प्रमुख विद्रोह एवं आंदोलन : एक नजर 14
- स्वाधीनता सेनानियों के प्रमुख नारे 16

प्राचीन भारत का इतिहास

- प्रागैतिहासिक काल 19-26
- प्राचीन इतिहास के स्रोत 27-31
- सैन्धव सभ्यता 32-44
- वैदिक संस्कृति 45-56
- महाकाव्य काल 57-60
- संगम युग 61-65
- धार्मिक आंदोलन (जैन धर्म, बौद्ध धर्म) 66-67
- भागवत सम्प्रदाय एवं ब्राह्मण सम्प्रदाय 78-87
- मौर्य साम्राज्य 88-101
- पूर्व गुप्तकालीन राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक दशा 102-109
- गुप्तकाल 110-122
- गुप्तोत्तर कालीन आर्थिक एवं राजनीतिक स्थिति, वर्धन वंश 123-127
- सन् 800-1200 की राजनीतिक तथा सामाजिक दशा 128-134
- चोल वंश 135-146

मध्यकालीन भारत का इतिहास

- मध्ययुगीन भारतीय इतिहास के स्रोत 147-148
- दिल्ली सल्तनत : प्रशासन व कृषि दशा 149-191
- प्रान्तीय राजवंश ; विजय नगर साम्राज्य 192-200
- भारतीय इस्लामी संस्कृति : 15वीं तथा 16वीं शताब्दी के धार्मिक आंदोलन 201-206
- मुगल साम्राज्य (1526-1707) : मुगल राज व्यवस्था, कृषि भूमि संबंध, मुगलकालीन कला तथा स्थापत्य कला एवं संस्कृति 207-262
- यूरोपीय वाणिज्य का प्रारंभ 263-278
- मराठा राज्य तथा राज्य संघ 279-294

आधुनिक भारत एवं भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन

- मुगल साम्राज्य का पतन, स्वायत्त राज्य बंगाल, मैसूर और पंजाब के विशेष संदर्भ में 296-304
- कम्पनी के अधीन संविधान का विकास 305-335
- 1857 का विद्रोह तथा ब्रिटिश शासन के विरुद्ध भारत में ब्रिटिश राज्य का आर्थिक प्रभाव 336-350
- साभाजिक तथा सांस्कृतिक जागृति, निम्न जाति मजदूर संघ तथा किसान आंदोलन 351-388
- स्वतंत्रता संग्राम 389-408
- भारत की स्वतंत्रता से 1964 ई. तक का इतिहास 409-414
- संसदीय पंथ निरपेक्ष, लोकतांत्रिक गणराज्य एवं भारत का संविधान (1950 तक) 415-420
- पं. जवाहर लाल नेहरू का विकासवादी समाजवाद, नेहरू का आर्थिक दर्शन, नेहरू और औद्योगिकवाद, ... 421-424
  नेहरू और गुटनिरपेक्षता, नेहरू की विदेश नीति एवं पंचशील सिद्धान्त, नेहरू की लोकतांत्रिक प्रणाली
- भारत-चीन सीमा विवाद 425-428

विविधा

- प्रमुख ऐतिहासिक व्यक्ति एवं उपनाम/उपाधि 429-430
- प्रमुख परीक्षोपयोगी संदर्भित कथन 431-436
  - प्राचीन भारत 431-432
  - मध्यकालीन भारत 432-433
  - आधुनिक भारत 434-436

प्रमुख भारतीय राजवंश एवं उनकी वंशावली

हर्यक वंश

- बिम्बिसार(544-493ई०पू०)→अजातशत्रु(493-462ई०पू०)→उदायी→अनुरूद्ध→मुण्ड→नागदासक

शिशुनाग वंश

- शिशुनाग→कालाशोक

नन्द वंश

- महापद्मनन्द(357-329ई०पू०)→पण्डुक→पण्डुगति→भूतपाल→राष्ट्रपाल→गौविषाणक→दशसिद्धक→कैवर्त→धनानन्द

मौर्यवंश

- चन्द्रगुप्त (322-298 ई० पू०) → बिन्दुसार (298-273 ई० पू०) → अशोक (269-232ई०पू०)→कुणाल→दशरथ→सम्प्रति→शालिशुक→देववर्मन→शतधनुष→बृहद्रथ(184ई०पू०)

शुंग वंश

- पुष्यमित्र (184-148ई०पू०)→अग्निमित्र→वसुज्येष्ठ→वसुमित्र→आन्ध्रक→पुलिण्डक→घोष→वज्रमित्र→भाग→देवभूति(72ई०पू०)

कण्व वंश

- वसुमित्र(72-63ई०पू०)→भूमिमित्र(63-49ई०पू०)→नारायण(49ई०पू०)→सुशर्मा(37-27ई०पू०)

कुषाण वंश

- कुजुलकेडफिसेस→विमकैडफिसेस→कनिष्क(78ई०पू०)→वासिष्क→हुविष्क→वासुदेव

सातवाहन वंश

- सिमुक→कृष्णा(कान्ह)→सातकर्णी→पूर्णोत्संग→श्रीसातकर्णी→लम्बोदर→आपालक→मेघस्वाति→स्कन्दस्वाति→मृगेन्द्रसातकर्णी→कुन्तलसातकर्णी→सातकर्णी-II→पुलुमावीप्रथम(पुलोमाप्रथम)→अरिष्टकर्ण→हाल→मन्दालक→पुरीन्द्रसेन→सुन्दरसातकर्णी→चकोरसातकर्णी→शिवस्वाति→गौतमीपुत्र→पुलुमावी द्वितीय(पुलोमा द्वितीय)→श्री सातकर्णी→शिव श्री→शिवस्कन्द सातकर्णी→श्रीयज्ञसातकर्णी→श्रीविजय→श्रीचन्द्रसातकर्णी→पुलुमावीतृतीय(पुलोमातृतीय)

गुप्त वंश

- श्रीगुप्त(275-300ई०)→घटोत्कच(300-319ई०)→चन्द्रगुप्तI(319-324ई०)

  काच(324ई०)   रामगुप्त(375-380ई)   स्कन्दगुप्त(455-467ई०)

  → ↗   ↗   ↑

  समुद्रगुप्त(335-375ई०) →चन्द्रगुप्तII(380-414ई०)→कुमारगुप्तप्रथम(414-455ई०)→स्कन्दगुप्त(455-467ई०)→ पुरूगुप्त(467-473ई०) कुमारगुप्तII(473-476ई०)→बुद्धगुप्त(476-495इ०)→वैन्यगुप्त(495-497ई०)→भानुगुप्त→नरसिंहगुप्त बालादित्य→कुमारगुप्त III→विष्णु गुप्त(550ई०)

वर्धन वंश

- नरवर्धन→राज्यवर्धन(प्रथम)→आदित्यवर्धन→प्रभाकरवर्धन(600-606ई०) राज्यवर्धनद्वितीय(606ई०)हर्षवर्धन(606-648ई०)

पल्लव वंश

- सिंहविष्णु(575-600ई०)→महेन्द्रवर्मन-I(600-630ई०)→नरसिंहवर्मन-I(630-668ई०)→महेन्द्रवर्मन-II(668-670ई०)→परमेश्वरवर्मन-I(670-680ई०)→नरसिंहवर्मन-II(680-720ई०)→परमेश्वरवर्मन-II(720-731ई०)→नन्दिवर्मन-II(731-795ई०)→दन्तिवर्मन(795-845ई०)→नन्दिवर्मन-III(845-866ई०)→तुंगवर्मन(866-879ई०)→अपराजितवर्मन(879-897ई०)→नन्दिवर्मन-IV→कम्पवर्मन

राष्ट्रकूट वंश

- दन्तिदुर्ग(752ई०)→कृष्ण I→ध्रुव(779-793ई०)→गोविन्द-III(793-814ई०)→अमोघवर्ष-I(814-878ई०)→कृष्ण-II(878-914ई०)→इन्द्र-III(914-927ई०)→गोविन्द-IV(927-936ई०)→अमोघवर्ष-II(936-939ई०)→कृष्ण-III(939-967ई०)→खोटिख

वातापी (बादामी) का चालुक्य वंश

- जयसिंह→रणराग→पुलकेशिन-I(550-566ई०)→कीर्तिवर्मन-I(566-597ई०)→मंगलेश(597-609ई०)→पुलकेशिन-II(609-642ई०)→विक्रमादित्य-I(654-680ई०)→विनयादित्य(680-696ई०)→विजयादित्य(696-733ई०)→विक्रमादित्य-II(733-745ई०)→कीर्तिवर्मन-II

गुर्जर-प्रतिहार वंश

- नागभट्ट I (उज्जैन शाखा का संस्थापक)→ककुस्थ→देवराज→वत्सराज(775-800ई०)→नागभट्ट II(800-833ई०)→रामभद्र(833-836ई०)→भोज(836ई०-885ई०)→महेन्द्रपालI(885-910ई०)→भोजII(910-912ई०)→महीपाल I(912-945ई०)→महेन्द्रपाल II(945-948ई०)→देवपाल(948-950ई०)→विनायकपाल→महीपाल II→विजयपाल→राज्यपाल→त्रिलोचनपाल→यशपाल

कल्याणी का चालुक्य वंश

- तैलप-II(संस्थापक)→सत्याश्रय(997-1008ई०)→विक्रमादित्य-V(1008-1014ई०)→अय्यन(1014-1015ई०)→जयसिंह-II(1015-1043ई०)→सोमेश्वर-I(1043-1068ई०)→सोमेश्वर-II(1068-1076ई०)→विक्रमादित्य-VI(1076-1126ई०)→सोमेश्वर-III(1126-1138ई०) जगदेकमल्ल-II(1138-1151ई०)→तैल-III(1151-1156ई०)→सोमेश्वर-IV

पालवंश

- गोपाल(संस्थापक)(750-770ई०)→धर्मपाल-(770-810ई०)→देवपाल(810-850ई०)→विग्रहपालI(850-854ई०)→नारायणपाल(854-915ई०)→राज्यपाल(915-940ई०)→गोपालII(940-960ई०)→विग्रहपालII(960-988ई०)→महीपालI(988-1038ई०)→नयपाल(1038-1055ई०)→विग्रहपालIII(1055-1070ई०)→महीपालII(1070-1075ई०)→रामपाल(1075-1120ई०)→कुमारपाल(1120-1125ई०)→गोपालIII(1125-1144ई०)→मदनपाल(1144-1161ई०)→गोविन्दपाल

वेंगी का चालुक्य वंश

- विष्णुवर्धन(621-643ई०)→जयसिंह-I(643-662ई०)→इन्द्रवर्मन(662ई०)→विष्णुवर्धन-II(662-671ई०)→मंगि युवराज(672-696ई०)→जयसिंह-II(696-709ई०)कोक्किल्लविक्रमादित्य(709ई०)→विष्णुवर्धन-II(709-745ई०)→विजयादित्य-I(746-764ई०)→विष्णुवर्धन-IV(764-799ई०)→विजयादित्य-II(799-814ई०)→भीमसालुकि(814ई०)→विजयादित्य-II(817-843ई०)→विष्णुवर्धन-V(843-844ई०)→विजयादित्य-III(844-888ई०)→भीमI(888ई०)→अम्मI(919-926ई०)→विजयादित्य-V(926ई०)→तालI(926ई०)→विक्रमादित्य-II(927-928ई०)→भोज-II(928ई०)→युद्धमल्ल-II(929-935ई०)→भीम-III(935-946ई०)→अम्मII(946-956ई०)→तैलII→अम्मIII→चोड़भीम→शक्तिवर्मन→कुलोतुंगचोल

गहड़वाल वंश

- यशोविग्रह(संस्थापक)→महीचन्द→चन्द्रदेव(1089-1104ई०)→मदनपाल(1104-1114ई०)→गोविन्दचन्द(1114-1154ई०)→विजयचन्द(1155-1169ई०)→जयचन्द(1170-1194ई०)→हरिश्चन्द्र

चन्देल वंश

- नन्नुक(831-844ई०)→वाक्पति(844-870ई०)→जयशक्ति व विजयशक्ति(870-900ई०)→राहिल(900-915ई०)→हर्ष(915-930ई०)→यशोवर्मा(930-950ई०)→धंग(950-1002ई०)→गण्ड(1003-1017ई०)→विद्याधर(1018-1029ई०)→विजयपाल(1030-1050ई०)→देववर्मा(1050-1060ई०)→कीर्तिवर्मा(1060-1100ई०)→सल्लक्षणवर्मा(1100-1115ई०)→जयवर्मा(1115-1120ई०)→पृथ्वीवर्मा(1120-1129ई०)→मदन वर्मा(1129-1163ई०)→यशोवर्मा II(1163-1165ई०)→परमर्दिदेव(1165-1202ई०)→त्रैलोक्य वर्मा(1203-1247ई०)→वीर्य वर्मा(1250-1286ई०)→भोज वर्मा(1286-1288ई०)→हम्मीर वर्मा(1288-1310ई०)

चाहमान वंश

- वासुदेव संस्थापक (551 ई०)→सामन्तराज→नरदेव→अजयराज I→विग्रहराजI→चन्द्रराजI→गोपेन्द्र राज→दुर्लभराजI→गूवकI→चन्द्रराजII→गूवक II→चन्दनराज→वाक्तपतिराज I→सिंहराज→विग्रहराज II→दुर्लभराजII→गोविन्दराजII→वाक्तपतिराजII→वीर्यराम→चामुण्डराज→दुर्लभराज III→विग्रहराज III→पृथ्वीराज I→अजयराज II(1105-1130ई०)→अर्णोराज(1130-1150ई०)→विग्रहराजIV(1150-1164ई०)→अपरगांगेय(1164ई०)→पृथ्वीराजII(1164-1169ई०)→सोमेश्वर(1169-1177ई०)→पृथ्वीराजIII(1178-1192ई०)→हरिराज(1198ई०)

चालुक्य वंश

- मूलराजप्रथम(संस्थापक)(941-996ई०)→चामुण्डराज(997-1009ई०)→वल्लभराज(1009ई०)→दुर्लभराज(1009-1024ई०)→भीम I(1024-1064ई०)→कर्ण(1065-1093ई०)→जयसिंह सिद्धराज(1094-1142ई०)→कुमारपाल(1143-1173ई०)→अजयपाल(1173-1176ई०)→मूलराजII(1176-1178ई०)→भीमII(1178-1241ई०)

परमार वंश

- उपेन्द्राज(790-817ई०)→वैरिसिंहI(817-842ई०)→सीअकI(844-893ई०)→वाक्पतिI(894-920ई०)→वैरिसिंहII(921-945ई०)→सीअकII(945-972ई०)→वाक्पति II (मुंज)(973-996ई०)→सिन्धुराज(996-1010ई०)→भोज(1010-1055ई०)→जयसिंहI(1055-1070ई०)→उदयादित्य(1070-1086ई०)→लक्ष्मदेव(1086-1094ई०)→नरवर्मा(1094-1133ई०)→यशोवर्मा(1134-1142ई०)→जयवर्मन→विन्ध्यवर्मन→सभटवर्मन

कलचुरि वंश

- वामराजदेवसंस्थापक(675-700ई०केबीच)→शंकरगणI→विदरणअनुपलब्ध→कोकल्ल I(850-885ई०)→शंकरगण II(890-910ई०)→युवराज I(915-945ई०)→लक्ष्मणराजII(945-970ई०)→शंकरगणIII(970-980ई०)→युवराज II(980-990ई०)→कोकल्ल II(990ई०-1015ई०)→गांगेयदेव(1019-1040ई०)→लक्ष्मीकर्ण(1041-1072ई०)→यशकर्ण

(1073-1123ई०)→गयाकर्ण(1123-1151ई०)→नरसिंह(1154-1167 ई०)→जयसिंह-(1167-1180ई०)→विजयसिंह(1180-1212ई०)

चोल वंश

- विजयालय (संस्थापक) (850-877 ई०) → आदित्य-I (877-907 ई०) → परान्तक-I (907-953 ई०) → गण्डरादित्य (953-957 ई०) → परान्तक-II (957-973 ई०) → उत्तम चोल (973-985 ई०) → राजराज-I (985-1014 ई०) राजेन्द्र-I (1014-1044 ई०) → राजाधिराज-I (1044-1052 ई०) → राजेन्द्र-II (1052-1064 ई०) → वीरराजेन्द्र (1064-1070 ई०) → अधिराजेन्द्र (1070-1120 ई०) → विक्रमचोल (1120-1135 ई०) → कुलोत्तुंग-II (1135-1150 ई०) → राजराज-II (1150-1163 ई०) → राजाधिराज-II (1163-1182 ई०) → कुलोत्तुंग-III (1182-1216 ई०) → राजराज-III (1216-1250 ई०) → राजेन्द्र-III (1250-1279 ई०)

गुलाम वंश

- कुतुबुद्दीन ऐबक (1206-1210 ई०) → आरामशाह (1210-1211 ई०) → इल्तुतमिश (1211-1236 ई०) → रुकनुद्दीन (1236 ई०) → रजिया (1226-1240 ई०) → मुईनुद्दीन बहरामशाह (1240-1242 ई०) → अलाउद्दीन मसूदशाह (1242-1246 ई०) → नासिरुद्दीन महमूद (1246-1265 ई०) बलबन (1266-1287 ई०) → कैकुबाद (1287-1290 ई०) → क्यूमर्स (1290 ई०)

खलजी वंश

- जलालुद्दीन फिरोज खलजी (1290-1296 ई०) → अलाउद्दीन खलजी (1296-1316 ई०) → कुतुबुद्दीन मुबारक खलजी (1316-1320 ई०) → नासिरुद्दीन खुसरूशाह (1320 ई०)

तुगलक वंश

- गियासुद्दीन तुगलक (1320-1325 ई०) → मुहम्मद बिन तुगलक (1325-1351 ई०) → फिरोज तुगलक (1351-1388 ई०) → गियासुद्दीन तुगलक II → अबू बक्र → मुहम्मद शाह → अलाउद्दीन सिकंदर उर्फ हुमायूं (1394-1395 ई०) → नासिरुद्दीन महमूदशाह (1395-1412 ई०)

सैय्यद वंश

- खिज्र खां (1414 ई०-1421 ई०) → मुबारकशाह (1421-1434 ई०) → मुहम्मदशाह (1434 ई०-1445 ई०) → अलाउद्दीन आलमशाह (1445-1450 ई०)

लोदी वंश

- बहलोल लोदी (1451-1489 ई०) → सिकन्दर लोदी (1489-1517 ई०) → इब्राहीम लोदी (1517-1526 ई०)

सल्तनतकालीन शासक बंगाल

- हाजी इलियास (1345-1357 ई०) → सिकन्दर शाह (1357-1393 ई०) → ग्यासुद्दीन आजम (1393-1410 ई०) → सैफुद्दीन हमजा शाह (1410-1414 ई०) → गणेश (1414-1418 ई०) → जलालुद्दीन मुहम्मदशाह (1418-1431 ई०) → शम्सुद्दीन अहमद (1431-1442 ई०) → नासिरुद्दीन महमूदशाह (1443-1460 ई०) → रुक्नुद्दीन बारबकशाह (1460-1474 ई०) → शम्सुद्दीन युसुफशाह (1474-1481 ई०) → सिकन्दर-II (1481 ई०) → जलालुद्दीन फतहशाह (1482-1486 ई०) → बारबकशाह (1486 ई०) → सैफुद्दीन फिरोज (1486-1489 ई०) → नासिरुद्दीन मुहम्मदशाह-II (1489-1490 ई०) → शम्सुद्दीन मुजफ्फरशाह (1490-1493 ई०) → अलाउद्दीन हुसैनशाह (1493-1518 ई०) → नासिरुद्दीन नुसरतशाह (1518-1531 ई०) → अलाउद्दीन फिरोजशाह → ग्यासुद्दीन मुहम्मदशाह

शर्की वंश

- ख्वाजा जहान (मलिक उस् शर्क) (1399 ई०) → मुबारकशाह (1399-1402 ई०) → शम्सुद्दीन इब्राहीमशाह (1402-1440 ई०) → महमूदशाह (1440-1479 ई०)

बहमनी वंश

- अलाउद्दीन बहमनशाह (1346-1358 ई०) → मुहम्मदशाह I (1358-1375 ई०) → अलाउद्दीन मुजाहिदशाह (1375-1378 ई०) → दाऊद I (1378 ई०) → मुहम्मदशाह II (1378-1397 ई०) → ग्यासुद्दीन तहमातन (1397 ई०) → शम्सुद्दीन दाऊद II (1397 ई०) → ताजुद्दीन फिरोज (1397-1422 ई०) → शहाबुद्दीन अहमद II (1422-1436 ई०) → अलाउद्दीन अहमद II (1436-1458 ई०) → अलाउद्दीन हुमायूं (1458-1461 ई०) → निजामशाह (1461-1463 ई०) → सुल्तान शम्सुद्दीन महमूद III (1463-1482 ई०) → महमूदशाह (1482-1518 ई०) → अहमद IV (1518-1520 ई०) → अलाउद्दीन शाह (1520-1523 ई०) → वली उल्लाह (1523-1526 ई०) → कलीमुल्ल शाह (1526-1538 ई०)

विजयनगर राज्य

संगम राजवंश

- हरिहर I (1336-1356 ई०) → बुक्का I (1356-1377 ई०) → हरिहर II (1377-1404 ई०) → देवराय I (1406-1422 ई०) → रामचन्द्र → वीर विजय (1422-1430 ई०) → देवराय II (1430-1446 ई०) → मल्लिकार्जुन (1446-1465 ई०) → वीरूपाक्ष II (1465-1485 ई०)

सालुव राजवंश

- सालुवनरसिंह (1485-1490 ई०) → इम्माडिनरसिंह (1490-1506 ई०)

तुलुव राजवंश

- वीर नरसिंह (1506-1509 ई०) → कृष्णदेव राय (1509-1529 ई०) → अच्युतदेवराय (1529-1542 ई०) → सदाशिव (1542-1570 ई०)

अरवीदू वंश

- तिरूमल (1570 ई०) → रंग II → वेंकट III (1580-1614 ई०) → रंग III

शाहमीर वंश (कश्मीर)

- शम्सुद्दीन शाह (1339-1342 ई०) → जमसेद → अलाउद्दीन → शिहाबुद्दीन → कुतुबुद्दीन → सिकन्दर (1398-1413 ई०) → अलीशाह (1413-1420 ई०) → जैनुलआबदीन (1420-1470 ई०) → हैदरशाह

गुहिल वंश (मेवाड़)

- बापारावल (728-764 ई०) → भूर्तपट्ट → अल्लट → नरवाहन → शालिवाहन → शक्तिकुमार → जैत्रसिंह (1213-1253 ई०) → तेजासिंह (1253-1268 ई०) → समरसिंह (1273-1301 ई०) → रतनसिंह (1301-1303 ई०)

खिलजी वंश (मालवा)

- महमूदशाह I (1436-1469 ई०) → ग्यासुद्दीन (1469-1500 ई०) → नासिरुद्दीनशाह (1500-1512 ई०) → महमूद खिलजी (1512-1531 ई०)

सल्तनतकालीन शासक गुजरात

- जफर खां (1401-1411 ई०) → अहमदशाह (1411-1441 ई०) → कुतुबुद्दीन अहमद → दाउद → महमूद बेगड़ा (1458-1511 ई०) → मुजफ्फर-II (1511-1526 ई०) → सिकन्दर → नासिर खां → महमूद-II → बहादुर शाह (1527-1537 ई०)

मुगल वंश

- बाबर (1526-1530 ई०) → हुमायूं (1530-1556 ई०) → अकबर (1556-1605 ई०) → जहांगीर (1605-1627 ई०) → शाहजहां (1627-1658 ई०) → औरंगजेब (1658-1707 ई०) → बहादुर शाह-I (1707-1712 ई०) → जहांदार शाह (1712-1713 ई०) → फर्रुखसियर (1713-1719 ई०) → रफीउद् दरजात (1719 ई०) → रफीउद्दौला (1719 ई०) → मुहम्मदशाह (1719-1748 ई०) → अहमदशाह (1748-1754 ई०) → आलमगीर II (1754-1759 ई०) → शाह आलम (1759-1806 ई०) → अकबर-II (1806-1837 ई०) → बहादुर शाह II (1837-1858 ई०)

सूरी वंश

- शेरशाह (1540-1545 ई०) → इस्लामशाह (1545-1553 ई०) → फिरोजशाह → मुहम्मद आदिलशाह (1553-1555 ई०) → इब्राहीम सूरी (1555 ई०) → सिकन्दर सूरी (1555 ई०)

निज़ाम वंश (अहमदनगर)

- मलिक अहमद (1490-1510 ई०) → बुरहान निजामशाह-I (1510-1553 ई०) → हुसैन निजामशाह I (1553-1563 ई०) → मुर्तज़ा निजामशाह-I (1563-1588 ई०) → हुसैन निजामशाहा-II (1588-1589 ई०) → इस्माइल निजामशाह (1589-1591 ई०) → बुरहान निजामशाह-I (1591-1595 ई०) → इब्राहीम निजामशाह (1595-1601 ई०) → मुर्तजा निजामशाह II (1601-1610 ई०) → बुरहान निजामशाह III (1610-1632 ई०) → हुसैन निजामशाह III (1632-1636 ई०)

आदिलशाही वंश (बीजापुर)

- युसुफ आदिलशाह (1489-1510 ई०) → इस्माइल आदिलशाह (1510-1524 ई०) → इब्राहीम आदिलशाह (1535-1558 ई०) → अली आदिलशाह I (1558-1580 ई०) → इब्राहीम आदिलशाह (1580-1627 ई०) → मुहम्मद आदिलशाह (1627-1656 ई०) → अली आदिलशाह-II (1656-1677 ई०) → सिकन्दर आदिलशाह (1677-1686 ई०)

फारूखी वंश (खानदेश)

- मलिक राजा फारूखी (1370-1399 ई०) → मलिक नासिर (1399-1438 ई०) → आदिल खां-I (1438-1441 ई०) → मुबारक खां-I (1441-1457 ई०) → आदिल खां-II (1457-1503 ई०) → दाऊद (1503-1508 ई०) → आदिल खां-III (1508-1520 ई०) → मीरन मुबारकशाह-II (1537-1566 ई०) → अली खां (1566-1597 ई०) → मीरन बहादुर शाह (1597-1601 ई०)

सिख गुरू

- गुरूनानक (1469-1538 ई०) → गुरू अंगद (1538-1520 ई०) → गुरू अमरदास (1552-1574 ई०) → गुरू रामदास (1574-1581 ई०) → गुरू अर्जुन (1581-1606 ई०) → गुरू हरगोविन्द (1606-1645 ई०) → गुरू हरराय (1645-1661 ई०) → गुरू हरकिशन (1661-1664 ई०) → गुरू तेगबहादुर (1664-1675 ई०) → गुरू गोविन्दसिंह (1675-1708 ई०)

मराठा वंश

- शिवाजी (1627-1680 ई०) → शम्भाजी (1680-1689 ई०) → राजाराम (1689-1700 ई०) → शिवाजी-II (1700-1707 ई०) → शाहू-I (1707-1749 ई०) → रामराजा (1749-1777 ई०) → शाहू-II (1777-1808 ई०) → प्रतापसिंह (1808-1839 ई०) → शाहजी अप्पा (1839-1848 ई०)

पेशवा वंश

- बालाजी विश्वनाथ (1713-1720 ई०) → बाजीराव-I (1720-1740 ई०) → बालाजी बाजीराव (1740-1761 ई०) → माधवराव (1761-1772 ई०) → नारायणराव (1772-1773 ई०) → रघुनाथराव (1773 ई०) → माधवराव नारायण (1773-1795 ई०) → बाजीराव-II (1795-1818 ई०)

भारतीय इतिहास : एक नजर

इतिहास का वर्गीकरण

1. प्रागैतिहासिक काल (Pre Historic Period)–वह काल जिसके लिए कोई लिखित सामग्री उपलब्ध नहीं है और जिसमें मानव का जीवन अपेक्षाकृत पूर्णतया सभ्य नहीं था, **'प्रागैतिहासिक काल'** कहलाता है। मानव ने अपना सांस्कृतिक जीवन लगभग 30 लाख वर्ष पूर्व आरम्भ किया था, अतः प्रागैतिहास (Pre History) के अंतर्गत हम उक्त सुदूर अतीत के आरंभ से लेकर लगभग ई. पू. 3000 तक की मानव संस्कृति का अध्ययन करते हैं। प्रागैतिहासिक काल का इतिहास लिखते समय इतिहास को पूर्णतः पुरातात्विक साधनों पर निर्भर रहना पड़ता है।

2. आद्य-इतिहास (Proto Historic)–प्रागैतिहासिक युग के उपरांत इतिहास का एक ऐसा भी समय था, जिसके लिए लेखन कला के प्रमाण तो है, लेकिन या तो वे अपुष्ट हैं या फिर उनकी गूढ़ लिपि का अर्थ निकालना कठिन है। ऐसे काल को आद्य इतिहास कहते हैं। आद्य इतिहास लिखते समय इतिहासकार साहित्यिक तथा पुरातात्विक दोनों ही प्रकार के साक्ष्यों का उपयोग करता है। 3000 ई. पू. से 600 ई. पू. के बीच का इतिहास (मुख्यतः सिन्धु सभ्यता का इतिहास) आद्य इतिहास की श्रेणी में आता है।

3. ऐतिहासिक काल (Historic Period)–इतिहासकार उस काल को **'ऐतिहासिक काल'** की संज्ञा देते हैं जिसके लिए लिखित साधन उपलब्ध हैं और जिसमें मानव सभ्य बन चुका था। ई. पू. 600 के बाद का इतिहास **'इतिहास'** कहलाता है। इसका कारण यह है कि भारत में **प्राचीनतम लिखित सामग्री** अशोक के अभिलेख हैं।

विष्णु के दस अवतार

1. मत्स्यावतार 2. कूर्मावतार 3. वराहावतार 4. नृसिंहावतार
5. वामनावतार 6. परशुरामावतार 7. रामावतार 8. कृष्णावतार
9. बुद्धावतार 10. कल्कि अवतार (होना शेष)

पंच महायज्ञ

हिन्दू विधानानुसार प्राचीन काल से मानव जीवन में निम्न 5 यज्ञों की महत्ता प्रतिपादित की गयी है–

1. **ब्रह्म यज्ञ** – वेद पाठ द्वारा संसार की आत्मा ब्रह्म की पूजा।
2. **पितृ यज्ञ** – तर्पण तथा सामयिक श्राद्धों द्वारा पितरों की पूजा।
3. **देव यज्ञ** – पवित्र अग्नि में घी की आहुति द्वारा देवताओं की पूजा।
4. **भूत यज्ञ** – पशुओं, पक्षियों तथा भूत-प्रेतों के लिए द्वार पर अन्न तथा भोजन डालकर समस्त प्राणिमात्र की पूजा।
5. **नृ-यज्ञ** – अतिथि सत्कार द्वारा मनुष्यों की पूजा।

सैंधव सभ्यता का समय निर्धारण

पुरातत्वविद	तिथि निर्धारण
सर जॉन मार्शल	3250 ई. पू. से 2750 ई. पू.
माधव स्वरूप वत्स	3500 ई. पू. से 2700 ई. पू.
मार्टीमर ह्वीलर	2500 ई. पू. से 1500 ई. पू.
अर्नेस्ट मैके	2800 ई. पू. से 2500 ई. पू.
रोमिला थापर	2300 ई. पू. से 1750 ई. पू.
वर्तमान मान्यता	2550 ई. पू. से 1900 ई. पू.

सैंधवकालीन व्यापार

सैंधववासी निर्मित वस्तुओं तथा अनाजों के बदले पड़ोसी देशों से **निम्नलिखित धातुओं का आयात** करते थे–

सोना : अफगानिस्तान, फारस, दक्षिणी भारत से
चांदी : ईरान, अफगानिस्तान से
ताँबा : अरब, खेतड़ी (द. भारत) से
नीला रत्न : बदक्शां से
नीलमणि : महाराष्ट्र से
सुलेमानी पत्थर : सौराष्ट्र, प. भारत से
हरित मणि : दक्षिण एशिया से
शंख, कौड़ियां : सौराष्ट्र, द. भारत से

आर्यों के आदि स्थल के बारे में विभिन्न मत

आदि स्थल	प्रतिपादन
सप्त सैंधव क्षेत्र	डॉ. अविनाश चंद्र दास, डॉ. संपूर्णानंद
ब्रह्मर्षि देश	पं. गंगानाथ झा
मध्य देश	डॉ. राजबली पाण्डेय
कश्मीर	एल. डी. कल्ल
देविका प्रदेश (मुल्तान)	डी. एस. त्रिदेव
उत्तरी ध्रुव प्रदेश	बाल गंगाधर तिलक ("द आर्कटिक होम ऑफ आर्यन्स")
हंगरी (यूरोप) (डेन्यूब नदी की घाटी)	प्रो. गाइल्स
दक्षिणी रूस	नेहरिंग मेयर, पीका व गार्डन चाइल्ड्स
जर्मनी	पेनका, हर्ट
तिब्बत	स्वामी दयानंद सरस्वती (सत्यार्थ प्रकाश)
मध्य एशिया	मैक्समूलर

वैदिक कालीन शब्द

दुहित्री	:	दूध दुहने वाली अर्थात् पुत्री
अघन्या	:	वध न की जाने वाली गाय
गोघ्न	:	गाय का वध करने वाला यानी अतिथि
नियोग प्रथा	:	पति के न होने पर अन्य निकट रिश्तेदार के साथ पुत्र के लिए सहवास (विधवाओं का पुनर्विवाह)
गौपति	:	राजा की गायों की रक्षा करने वाला
व्रीही	:	धान
निष्क	:	सोने का टुकड़ा (पिण्ड) अथवा आभूषण
रत्निन	:	राजा को सहयोग करने वाले अथवा परामर्श देने वाले विभिन्न अधिकारी
संग्रहीत्रि	:	शाही खजाने का प्रभारी
श्रोतिय	:	विद्वान ब्राह्मण
द्विज	:	शाब्दिक अर्थ– जिसका जन्म दो बार हुआ हो किन्तु ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य के लिए प्रयुक्त
भागदुध	:	कर संग्राहक
गविष्टि	:	शाब्दिक अर्थ– गायों की गवेषणा (खोज) किन्तु व्यावहारिक अर्थ कबीलों के बीच युद्ध है
रयि	:	संभवतः चांदी की मुद्रा
अदेवयु	:	देवताओं में श्रद्धा न रखने वाले
अब्रह्मन	:	वेदों को न मानने वाले
अयज्वन	:	यज्ञ न करने वाले
अनास	:	कटु वाणी वाले; इसका प्रयोग आर्यों के शत्रु पणियों के लिए भी किया गया
व्राजपति	:	चारागाह का अधिकारी, गांव का प्रधान
कुलप	:	परिवार का मुखिया
ग्रामणी	:	लड़ाकू दलों के प्रधान
जन या विश	:	वैदिक कबीले (प्रजाजन)
नप्तृ	:	भतीजे, प्रपौत्र, चचेरे भाई-बहिन इत्यादि के लिए प्रयुक्त शब्द
संहिता	:	वैदिकसूक्तों या मंत्रों का संग्रह
बलि	:	राजा को स्वेच्छा से दी गयी भेंट
राष्ट्र	:	प्रदेश या राज्य क्षेत्र (वैदिक युग में पहली बार प्रयुक्त)
होतृ या होता	:	ऋग्वेद से संबंधित और सूक्त उच्चारित करने वाले ऋषि
अध्वर्यु	:	यज्ञ संबंधी मंत्रों का उच्चारण करने वाले पुरोहित, यजुर्वेद से संबंधित
उद्गाता	:	यज्ञ संबंधी मंत्रों को गाने वाले पुरोहित, सामवेद से संबंधित
लांगल	:	हल
कीनाश	:	हल चलाने वाला
पणि	:	व्यापारी

अन्य वैदिक कालीन शब्द एवं उनका उल्लेख

दैवी अधिकार	वैदिक कालीन नरेश इसमें विश्वास नहीं करते थे।
शर्ध, व्रात तथा गण	सैनिक इकाइयाँ थीं।
अनस	बैलगाड़ी के लिए प्रयुक्त शब्द।
पथी-कृत	अग्नि देव के लिए प्रयुक्त हुआ है।
भीषज	वैद्य वर्ग के लिए प्रयुक्त हुआ है।
अमूर्त देवता	श्रद्धा और मनु
अग्नि पूजा	इसका महत्व अवेस्ता के कारण भी बढ़ा।
अयस	इसका ऋग्वेद में उल्लेख है
चावल	इसका उल्लेख ऋग्वेद में नहीं हुआ, यजुर्वेद में हुआ है।
गंगा	गंगा नदी का उल्लेख ऋग्वेद में केवल एक बार हुआ है।
कुसिदिन	सूदखोर के लिए प्रयुक्त हुआ है।
शतमान	वैदिककालीन मुद्रा के लिए प्रयुक्त हुआ है।
राष्ट्र	इस शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम उत्तर वैदिक काल में हुआ, लेकिन प्रदेश के लिए।
ब्रीही	इसका प्रयोग धान के लिए हुआ है।
वीर	रत्निन के लिए प्रयुक्त हुआ है।
गृहपति	परिवार के वयोवृद्ध व्यक्ति को गृहपति कहा जाता था।

उत्तर वैदिक युगीन अधिकारी (रत्निन)

रत्निन	उनके कार्य
1. पुरोहित	रत्निनों में पुरोहित का स्थान सर्वोच्च होता था। वह राजा का प्रमुख सलाहकार होता था। वह युद्ध में राजा के साथ जाता था। धार्मिक कार्यों में भी उसे सलाह देता था।
2. महिषी	यह राजा की पटरानी होती थी। प्रशासन में उसका भी हाथ होता था। राजा को प्रशासनिक कार्यों में वह सलाह देती थी।
3. युवराज	राजा अपने जीवन-काल में ही ज्येष्ठ पुत्र को इस पद पर आसीन कर प्रशासनिक कार्यों में उसे दक्ष बनाने का प्रयास करता था।
4. सूत	उस काल में रथ टैंक तुल्य होते थे। अत: रथों के निर्माण व उनके रख-रखाव के लिए सूत होता था। युद्ध में भी उसका बड़ा महत्व होता था।
5. सेनानी	यह सेना का प्रधान होता था। युद्ध में सेना का संचालन करना तथा शान्ति में सेना की व्यवस्था करना उसका प्रधान कार्य था।
6. ग्रामणी	यह ग्राम का स्वामी होता था। गाँव का वही व्यवस्थापक होता था।
7. क्षत्तृ	राजप्रासादों की सुरक्षा का भार उस पर होता था।
8. संग्रहीता	यह राज्य का कोषाध्यक्ष होता था।
9. भागदुध	भूमि कर को वसूल करना उसका प्रमुख कार्य था।
10. अक्षवाप	पासे खेलना उस समय मनोरंजन का प्रमुख साधन था। राजा को इस खेल में सहायता देने वाला **अक्षवाप** कहलाता था।
11. पालागल	यह राजा का मित्र होता था। विदूषक से सम्बन्धित होने के कारण वह राजा का मनोरंजन भी करता था।
12. गोविकर्ता	

चार आश्रम –ब्रह्मचर्य (25 वर्ष की आयु तक), गृहस्थाश्रम (25-30), वानप्रस्थ आश्रम (50-75 वर्ष), सन्यास आश्रम (75-100 वर्ष)।

तीन ऋण–1. देव ऋण, 2. ऋषि ऋण, 3. पितृ ऋण।

पुरुषार्थ (चार)– 1. धर्म, 2. अर्थ, 3. काम, 4. मोक्ष।

उपवेद : आयुर्वेद, धनुर्वेद, गान्धर्ववेद (संगीतशास्त्र) और शिल्प शास्त्र आदि विधायें, जो वेदों से निकली हुई हैं।

वैदिक साहित्य (ब्राह्मण ग्रन्थ, आरण्यक व उपनिषद)

वेद	सम्बन्धित ब्राह्मण ग्रन्थ	विषय-वस्तु	सम्बन्धित आरण्यक	सम्बन्धित उपनिषद
ऋग्वेद	(1) ऐतरेय-महीदास	सोमयज्ञ के हौत्र पक्ष की विशद मीमांसा की गई है।	ऐतरेय	ऐतरेय
	(2)शांखायन (कोषीतकि)	इसमें सोमयज्ञों के अलावा इष्टियों (यज्ञों) पशु-पक्षियों का भी प्रतिपादन है।	कौषीतकि	कौषीतकि
यजुर्वेद	1. तैत्तिरीय **(कृष्ण यजुर्वेद)**	शतपथ की भांति इसका पाठ भी सस्वर है। इसमें सर्वाधिक प्रसिद्ध आख्यान महर्षि भारद्वाज से सम्बद्ध है। इसे आचार दर्शन भी कहा जाता है।	तैत्तिरीय	तैत्तिरीय उपनिषद कठोपनिषद श्वेताश्वतर उपनिषद
	2. **शतपथ (शुक्ल यजुर्वेद)** रचयिता-याज्ञवल्क्य	सौ अध्याय के कारण शतपथ ब्राह्मण प्रतिपाद्य विषय-वस्तु माध्यन्दिन तथा कण्व शतपथ के समान है विविध यज्ञों के विधि विधान का सांगोपांग विवरण है।	शतपथ आरण्यक	वृहदारण्यक ईशोपनिषद
सामवेद	(1) **ताण्ड्य** महाब्राह्मण (ताण्डि नामक आचार्य)	सांस्कृतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। सरस्वती नदी के लुप्त व प्रकट होने का विवरण है।	छान्दोग्य	छान्दोग्योपनिषद
	(2)**जैमनीय ब्राह्मण**	जैमनी की स्तुति की गई है।	जैमनीय	
अथर्ववेद	गोपथ अथर्ववेद का यह एकमात्र उपलब्ध ब्राह्मण ग्रन्थ है।	ऋषि गोपथ ही इस ब्राह्मण के प्रवक्ता हैं। इसके दो भाग हैं--पूर्व और उत्तर। पूर्व भाग के प्रथम इसने अथर्ववेद की नौ शाखाओं में से शौनकीया शाखा के मन्त्रों का ही निर्देश प्रतीकों द्वारा किया है। इसका सम्बन्ध पैपलाद शाखा से है। पाठक में सृष्टि प्रक्रिया का निरूपण है। इसमें आध्यात्मिक तत्वों का भी प्रचुरता से निरूपण हुआ है।		मुण्डकोपनिषद प्रश्नोपनिषद माण्डूक्योपनिषद

पौराणिक महाकाव्य

रामायण—वाल्मीकिकृत महाकाव्य **रामायण** में मूलत: 60000 श्लोक थे, जो कालान्तर में 12000 हुए और फिर 24000 हो गये। इसे **'चतुर्विंशति साहस्त्री संहिता'** भी कहा गया है। इसकी रचना संभवत: ई० पू० 5वीं शती में आरम्भ हुई। कुल मिलाकर इसकी रनचा महाभारत के बाद की गयी प्रतीत होती है। यह सात काण्डों में विभक्त है—**बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकांड, किष्किन्धाकांड, सुन्दरकांड, युद्धकांड** तथा **उत्तरकांड**। बालकांड तथा उत्तरकांड के अधिकांश भागों को प्रक्षिप्त माना जाता है।

महाभारत— व्यासकृत **'महाभारत'** महाकाव्य संभवत: 10 वीं सदी ई० पू० से चौथी सदी ई० पू० तक की स्थिति का आभास देता है। पहले इसमें मात्र 8800 श्लोक थे और इसका नाम **'जयसंहिता'** (विजय सम्बंधी ग्रंथ) था। बाद में श्लोक संख्या बढ़कर 24000 हो जाने पर यह **'भारत'** नाम से प्रसिद्ध हुआ, क्योंकि इसमें वैदिक जन भरत के वंशजों की कथा है। कालान्तर में इसमें एक लाख श्लोक हो गये और यह **'शतसाहस्त्री संहिता'** या **'महाभारत'** कहलाने लगा। इसमें कथोपकथायें, वर्णन और उपदेश हैं। मूलकथा कौरवों-पांडवों के युद्ध की है-जो उत्तर वैदिक काल की हो सकती है। यह युद्ध कुल **18 दिनों** तक चला था। वर्णनांश का सम्बन्ध वेदोत्तर काल से तथा उपदेशात्मक अंश का सम्बन्ध मौर्योत्तर और गुप्तकाल से हो सकता है। महाभारत में कुल 18 पर्व (अध्याय) हैं—1. **आदि पर्व 2. सभापर्व 3. वन पूर्व 4. विराट पर्व 5. उद्योग पर्व 6. भीष्म पर्व 7. द्रोण पर्व 8. कर्ण पर्व 9. शल्य पर्व 10. सौप्तिक पर्व 11. स्त्री पर्व 12. शांति पर्व 13. अनुशासन पर्व 14. अश्वमेध पर्व 15. आश्रमवासी पर्व 16. मौसल पर्व 17. महाप्रस्थानिक पर्व 18. स्वर्गारोहण पर्व**। इसके अलावा हरिवंश, इसका परिशिष्ट (खिल पर्व) है, जिसमें ***कृष्ण वंश*** की कथा वर्णित है।

वेदकालीन ब्राह्मण ग्रंथ

ब्राह्मण ग्रंथों की रचना यज्ञादि विधानों के प्रतिपादन तथा उसकी क्रिया को समझाने के उद्देश्य से की गयी थी। **'ब्रह्म'** का शब्दार्थ **'यज्ञ'** है, अत: यज्ञीय विषयों के प्रतिपादक ग्रंथ **'ब्राह्मण'** कहे गये। संहिता (वेद) ग्रंथ जहाँ स्तुति प्रधान हैं, वहीं ब्राह्मण ग्रंथ विधि प्रधान हैं, जो अधिकांशत: गद्य में लिखे गये हैं। प्रत्येक वेद हेतु पृथक ब्राह्मण ग्रंथ लिखे गये। इनका विवरण निम्नवत है:

(i) **ऋग्वेद** - ***ऐतरेय*** तथा ***कौषीतकी***।
(ii) **सामवेद** - ***पंचविंश, तांड्य, षड्विंश, अद्भुत*** व ***जैमिनी***।
(iii) **यजुर्वेद** - ***तैत्तिरीय*** एवं ***शतपथ*** ब्राह्मण।
(iv) **अथर्ववेद** - ***गोपथ ब्राह्मण***।

आरण्यक ग्रंथ : इनकी रचना अरण्यों अर्थात् वनों में पढ़ाये जाने के निमित्त होने के कारण इन्हें **'आरण्यक'** कहा गया। इनमें ज्ञान एवं चिंतन को प्रधानता दी गयी है। इन दार्शनिक रचनाओं से ही कालान्तर में उपनिषदों का विकास हुआ।

प्रमुख आरण्यक ग्रंथ : ***ऐतरेय, शांखायन, तैत्तिरीय, वृहदारण्यक, छान्दोग्य, जैमिनी, मैत्रायणी, तलवकार*** तथा ***याज्ञ्यान्दन***।

उपनिषद् (108) : उपनिषदों को **'वेदांत'** भी कहा जाता है। उपनिषद मुख्यत: **ज्ञानमार्गी** रचनायें हैं। इनका मुख्य विषय ब्रह्मविद्या का प्रतिपादन है। **'उपनिषद'** का शाब्दिक अर्थ है-**उप**-समीप, **नि**-निष्ठापूर्वक, **सद्**-बैठना; अर्थात् (रहस्य ज्ञान हेतु) गुरू के समीप निष्ठापूर्वक बैठना। वैसे तो **मुक्तिकोपनिषद्** में 108 उपनिषदों का उल्लेख मिलता है, लेकिन सर्वाधिक प्राचीन और प्रामाणिक 12 उपनिषद् माने जाते हैं-**ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, तैत्तिरीय, ऐतरेय, छान्दोग्य, वृहदारण्यक, श्वेताश्वतर** और **कौषीतकी**। शंकराचार्य ने आरम्भिक दस उपनिषदों पर भाष्य लिखा है। भारत का राष्ट्रीय आदर्श वाक्य **"सत्यमेव जयते"** -*'मुण्डकोपनिषद'* से उद्धृत है। उपनिषदों के विकास में गार्गी और मैत्रेयी के साथ दीर्घकाल तक ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य मनीषियों ने बौद्धक योगदान दिया। उपनिषदों में सर्वत्र सत्य को खोजने की सच्ची उत्कंठा परिलक्षित होती है।

वेदांग

वेदों (संहिता) के अर्थ को सरलता से समझने तथा वैदिक कर्मकांडों के प्रतिपादन में सहायतार्थ **'वेदांग'** नामक नवीन साहित्य की रचना की गयी, जिसकी संख्या 6 है-**शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरूक्त, छंद एवं ज्योतिष**।

1. **शिक्षा (उच्चारण विधि)**— वैदिक मंत्रों के शुद्ध उच्चारण एवं शुद्ध स्वर क्रिया की विधियों के ज्ञानार्थ लिखित साहित्य को **'शिक्षा'** के नाम से जाना जाता है। वैदिक शिक्षा सम्बंधी प्राचीनतम साहित्य प्रतिशाख्य हैं।
2. **कल्प सूत्र (कर्मकांड)**— कल्प नामक वेदांग में छोटे-छोटे वाक्यों में सूत्र (Formula) बनाकर महत्त्वपूर्ण वैदिक विधि-विधानों को प्रस्तुत किया गया। सूत्र ग्रंथों को ही कल्प कहा जाता है। **कल्प सूत्र** चार प्रकार के हैं।
3. **व्याकरण**—शब्दों की मीमांसा करने वाला शास्त्र व्याकरण कहा गया, जिसका सम्बन्ध भाषा सम्बन्धी नियमों से है। व्याकरण की सर्वप्रमुख रचना **पाणिनि** कृत **'अष्टाध्यायी'** (5 वीं शती ई० पू०) है, जिसमें 8 अध्याय व 400 सूत्र हैं। इसा पूर्व चौथी शताब्दी में **कात्यायन** ने संस्कृत में प्रयुक्त होने वाले नये शब्दों की व्याख्या के लिए **'वार्तिक'** लिखे। ईसा पूर्व द्वितीय शताब्दी में ***पतंजलि*** ने पाणिनीय सूत्रों पर **'महाभाष्य'** लिखा।
4. **निरूक्त (भाषा विज्ञान)**— क्लिष्ट वैदिक शब्दों के संकलन **'निघण्टु'** की व्याख्या हेतु ***यास्क*** ने **'निरूक्त'** की रचना की थी, जो **भाषा शास्त्र का प्रथम ग्रंथ** माना जाता है।
5. **छन्द**— वैदिक मंत्र प्राय: छंदबद्ध हैं। छंदों के नाम संहिताओं व ब्राह्मण ग्रंथों में मिलते हैं। छंदशास्त्र पर **पिङ्गलमुनि** का ग्रंथ **'छन्द सूत्र'** उपलब्ध है।
6. **ज्योतिष :** शुभ मुहूर्त में याज्ञिक अनुष्ठान करने के लिए ग्रहों तथा नक्षत्रों का अध्ययन करके सही समय ज्ञात करने की विधि से वेदांग ज्योतिष की उत्पत्ति हुई। ज्योतिष की सर्वप्राचीन रचना **मगधमुनि** कृत **'वेदांग ज्योतिष'** है। इसमें कुल 44 श्लोक हैं। **वेदांग ज्योतिष** के ऋग्वेद व यजुर्वेद से सम्बन्धित क्रमश: दो ग्रंथ हैं—**आचार्य ज्योतिष** एवं **याजुष ज्योतिष**।

पुराण

'पुराण' का शाब्दिक अर्थ ***'प्राचीन आख्यान'*** होता है। पांचवीं से चौथी शताब्दी ई० पू० में पुराण ग्रंथ अस्तित्त्व में आ चुके थे। वर्तमान उपलब्ध पुराण गुप्तकाल के आसपास के हैं। **मुख्य पुराणों की संख्या** 18 है— **मत्स्य, मार्कण्डेय, भविष्य, भागवत, ब्रह्माण्ड, ब्रह्मवैवर्त्त, ब्रह्म, वामन, वाराह, विष्णु, वायु, अग्नि, नारद, पद्म, लिंग, गरुड़, कूर्म एवं स्कन्द**। ये सभी **महापुराण** कहलाते हैं।

पुराणों के अंतर्गत हम प्राचीन शासकों की वंशावलियाँ पाते हैं। इनके संकलनकर्त्ता महर्षि **लोमहर्ष** अथवा उनके सुपुत्र **उग्रश्रवा** माने जाते हैं। पुराण सरल व व्यावहारिक भाषा में लिखे गये जनता के ग्रंथ हैं जिनमें प्राचीन ज्ञान-विज्ञान, पशु-पक्षी, वनस्पति विज्ञान, आयुर्वेद इत्यादि का वृहद् वर्णन मिलता है।

स्मृतियाँ या धर्मशास्त्र

धर्मसूत्र साहित्य से कालान्तर में स्मृति ग्रंथों का विकास हुआ इसीलिए इन्हें **'धर्मशास्त्र'** की संज्ञा भी दी जाती है। ईसा पूर्व द्वितीय शताब्दी से लेकर पूर्व मध्यकाल तक विभिन्न स्मृति ग्रंथों की रचना की गयी। कुछ प्रमुख स्मृति ग्रंथों का नाम निम्नवत है—**मनुस्मृति, याज्ञवल्क्य स्मृति, विष्णु स्मृति, कात्यायन स्मृति, वृहस्पति स्मृति, पाराशर स्मृति, गौतम स्मृति, वशिष्ठ स्मृति, नारद स्मृति, देवल स्मृति** आदि। इनमें मनुस्मृति (शुंग काल - ई० पू० द्वितीय शती) सर्वाधिक प्राचीन तथा प्रमाणिक है, शेष गुप्तकालीन (पाँचवीं सती ई०) हैं। विष्णु स्मृति के अतिरिक्त शेष स्मृतियाँ श्लोकों में लिखी गयी हैं और इनकी भाषा लौकिक संस्कृत है। मनुस्मृति के प्रसिद्ध भाष्यकार **मेधातिथि, गोविन्दराज** तथा **कुल्लूक भट्ट** और **याज्ञवल्क्य स्मृति** के टीकाकार **विश्वरूप, विज्ञानेश्वर** (मिताक्षरा) **अपरार्क** इत्यादि हैं। स्मृतियों में विभिन्न वर्णों, राजाओं और पदाधिकारियों के नाम भी दिये गये हैं।

प्राचीन नदियाँ और उनके वर्तमान रूप

प्राचीन नाम	सम्प्रति (वर्तमान नाम)
कुभा	काबुल
सुवास्तु	स्वात
कुमु	कुर्रम
गोमती	गोमल
सिन्धु	सिंध
सुषोमा	सोहन
वितस्ता	झेलम
असिक्नी	चिनाब
मरुद्वृधा	मरुवर्दवान
परुष्णी	रावी
विपाशा	व्यास
शतुद्रि	सतलज
सरस्वती/दृषद्वती	घग्घर/रक्षी/चितंग
सदानीरा	गंडक

कला के प्राचीन स्कूल

मथुरा कला स्कूल (150-300 ई०)—यह देशी कला केन्द्र है, जो जैन धर्मानुयायियों द्वारा मथुरा में प्रथम शती ई० में आरम्भ किया गया। इसे कुषाण शासकों का संरक्षण मिला। मथुरा कला यथार्थवादी न होकर आदर्शवादी है, जिसमें मुखाकृति में आध्यात्मिक सुख व शांति व्यक्त की गयी है। **इसमें बलुआ लाल पत्थर प्रयुक्त होता था।**

गांधार कला स्कूल (50 ई० पू०-500 ई०)—यह ई० पू० प्रथम शताब्दी के मध्य से उत्तर पश्चिम भारत में विकसित हुई। इसके अंतर्गत मूर्तियों में शरीर की आकृति को सर्वथा यथार्थ (**पारदर्शी**) दिखाने का प्रयत्न किया गया। यहाँ की मूर्तियों में बुद्ध का मुख यूनानी देवता अपोलो से मिलता है।

अमरावती कला स्कूल (150 ई० पू०-400 ई०) : सफेद संगमरमर से बनने वाली इस शैली की प्रतिमाओं का विकास दक्षिण भारत में कृष्णा और गोदावरी नदियों के मध्य अमरावती नामक स्थान पर हुआ। इस शैली की प्रतिमाओं में शारीरिक सौन्दर्य, मानव भावनाओं की अभिव्यक्ति आदि उल्लेखनीय हैं। सातवाहन राजाओं के संरक्षण में नासिक, भोज, बेदसा, और कार्ले में निर्मित बौद्ध चैत्यों (मठों) पर इसी शैली का प्रभाव है।

तीनो संगमों पर एक विहंगम दृष्टि

क्रम संख्या	स्थान	अध्यक्ष	सदस्य संख्या	संरक्षक शासकों की संख्या	प्रस्तुत लेखक	संगम की अवधि	प्रमुख रचनाएं
प्रथम	मदुरा	ऋषि अगस्त्य (अगतियनार)	549	89	4499	4400 वर्ष	अक्कातियम परिपदत्त मुदनेर, मृदुकुम्कु, कल्गियविराय (उपलब्ध कांड भी नहीं)
द्वितीय	कपाटपुरम (अलैव)	तोल्काप्पियर संस्थापक अध्यक्ष (अगस्त्य)	49	59	3700	3700 वर्ष	अकांनियम, तोल्काप्पियम, मापुरानम, इसै-नुनुक्कम, भूतपुरानम, कलि, करुक, वेन्दालि व्यालमलय (केवल तोल्काप्पियम उपलब्ध)
तृतीय	उत्तरी मदुरा	नक्कीरर	49	49	449	1850 वर्ष	पत्थुप्पात, एतुत्थोकड, पदिनेन महाकाव्य शिलप्पदिकारम मणिमेखले जीवक चिन्तामणि

जैन धर्म के सात शील व्रत

1. दिग्व्रत	अपनी क्रियाओं को कुछ विशेष परिस्थितियों में नियन्त्रित करना।
2. देशव्रत	अपने कार्य को कुछ विशिष्ट देशों तक सीमित रखना।
3. अनर्थ दण्डव्रत	बिना कारण अपराध न करना।
4. सामरिक	विचार के लिए कुछ समय निश्चित करना।
5. प्रोषधोपवास	माह की दोनों अष्टमियों तथा चतुर्दशियों को उपवास करना।
6. उपभोग-प्रतिभोग	दैनिक जीवन में काम आने वाली वस्तुओं व पदार्थों को परिणाम नियमित करना।
7. अतिथि संविभाग	अतिथि को भोजन कराकर भोजन करना।

जैन संगीतियाँ

संगीतियाँ	स्थान	वर्ष	अध्यक्ष	कारण व परिणाम
• प्रथम	पाटलिपुत्र	300 ई. पू.	स्थूल बाहुभद्र	1. चन्द्रगुप्त मौर्य के शासन के अन्तिम वर्षों में 12 वर्ष का भयंकर अकाल पड़ा। भद्रबाहु अपने अनुयायियों के साथ कर्नाटक चले गये। उनकी अनुपस्थिति में स्थूल बाहुभद्र ने सभा का आयोजन किया। उसमें महावीर स्वामी की शिक्षाओं को 12 अंगों में विभाजित किया। 2. जैन धर्म दो सम्प्रदायों में विभक्त हो गया।
द्वितीय	वल्लभी	512 ई.	देवर्धिमणी क्षमा-श्रमण	• बिखरे ग्रन्थों का संकलन तथा उनका क्रम से प्रणयन।

धार्मिक आन्दोलन

सम्प्रदाय	संस्थापक
• ***आजीवक सम्प्रदाय (नियतिवादी)***	मक्खिलिपुत्र गोशाल
• ***घोर अक्रियावादी***	पूरण कश्यप
यदृच्छावाद (भौतिकवादी)	आचार्य अजित केशकम्बलिन
• ***भौतिकवादी***	पकुध कच्चायन
• ***अनिश्चयवादी***	संजय वेट्ठलिपुत्र

जैन धर्म : स्मरणीय तथ्य

दिगम्बर •	भद्रबाहु के प्रभाव में रहा जैन सम्प्रदाय जो वस्त्र धारण करने के पक्ष में नहीं थे।
श्वेताम्बर •	दूसरा जैन सम्प्रदाय जो श्वेत वस्त्र धारण करते थे।
निरुक्त	सबसे पुरानी टीका।
गन्धर्व	महावीर स्वामी के शिष्य।
गणधर	महावीर स्वामी के शिष्य।
थेरा	मुख्य उपदेशक।
संभूतर्व विजय	राजा नन्द के शासन में जैन धर्म का प्रचार करने वाले आचार्य।
पूर्वा	जैन धर्म के ग्रन्थों के नाम।
ऋषभ	जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर। इनका प्रतीक चिन्ह साँड है। विष्णु पुराण व भागवत पुराण में इनका उल्लेख नारायण के अवतार रूप में हुआ है।
आदिनाथ	ये जैन धर्म के दूसरे तीर्थंकर थे। इनकी ऐतिहासिकता उपलब्ध नहीं है। इनका प्रतीक चिन्ह हाथी है।
पार्श्वनाथ •	23वें तीर्थंकर थे। इनकी ऐतिहासिकता विश्वसनीय है, प्रतीक चिन्ह शेर है।
नंदिवर्धन •	वर्धमान (महावीर स्वामी) के ज्येष्ठ भ्राता जिनकी अनुमति से उन्होंने गृह-त्याग किया था।
आचारांग सूत्र	यह 12 अंगों में एक महत्वपूर्ण अंग है। इसमें उन नियमों का उल्लेख किया गया है जिन पर जैन मुनियों को चलना था।
भगवती सूत्र	यह दूसरा महत्वपूर्ण अंग था। इसमें जैन धर्म के सिद्धान्तों का विशद वर्णन किया गया है।
तीन गुणव्रत	मोक्ष प्राप्ति के लिए इन (उचित विश्वास, उचित ज्ञान और उचित कार्य) पर आचरण करना आवश्यक था।
निर्ग्रन्थ	जो सांसारिक बन्धनों से मुक्त हो।
जिन	इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करने वाला।
केवलिन (कैवल्य)	सर्वोच्च ज्ञान को प्राप्त करने वाला।

जैन शिल्पकला

बाघ गुफा	उदयगिरी	**रणकपुर**	राजस्थान
हाथी गुफा मन्दिर	उड़ीसा	**गिरनार तथा पालिताना**	गुजरात
दिलवाड़ा मन्दिर	माउण्ट आबू (राजस्थान)	**पावापुरी**	बिहार
बाहुबली प्रतिमा (गोमतेश्वर)	श्रवणबेलगोला (कर्नाटक)	**राजगृह** **इन्द्रसभा**	बिहार महाराष्ट्र

जैन धर्म :महत्वपूर्ण बिन्दु

• **तेरापन्थी**	श्वेताम्बर सम्प्रदाय की शाखा है।	
• **समैया**	दिगम्बर सम्प्रदाय की शाखा है।	
ऋषभदेव व अरिष्टनेमी	वेदों में उल्लेखित तीर्थकर	
महावीर स्वामी के अनुयायी नरेश	**बिम्बसार**	मगध नरेश
	उदयन	सिंधु-सौवीर नरेश
	प्रद्योत	अवन्ति नरेश
	स्तानिक	कौशाम्बी नरेश
	गौशाल	महावीर स्वामी का प्रथम सहयोगी

जैन साहित्य

जैन साहित्य को **'आगम'** कहा जाता है, जिसमें 12 अंग, 12 उपांग, 10 प्रकीर्ण, 6 छेदसूत्र, 4 मूलसूत्र, अनुयोग सूत्र व नन्दिसूत्र की गणना की जाती है। इनकी रचना महावीर स्वामी की मृत्यु के बाद विभिन्न संगीतियों में ई० पू० चौथी शती से छठीं शती ई० के मध्य हुई।

अंग (12) : जैन आगम में निम्न 12 अंगों का प्रमुख स्थान है : **1. आचारांग सुत्त, 2. सूयग दंग सुत्त (सूत्र कृतांग), 3. ठाणंग (स्थानांग) 4. समवायंग सुत्त, 5. भगवती सुत्त 6. नयाधम्मकहा सुत्त (ज्ञानधर्मकथा), 7. उवासगदसओं सुत्त (उपासकदशा), 8. अंत गड्डदसाओं, 9. अणुत्तरोववाइय दसाओं, 10. पदहावागरणाइ (प्रश्न व्याकरण), 11. विवाग श्रुतम्, 12. दिट्ठिवायू (दृष्टिवाद)।**

उपांग (12) : अग्रलिखित 12 उपांगों में ब्रह्मांड का वर्णन, प्राणियों का वर्गीकरण, खगोल विद्या, काल विभाजन, मरणोत्तर जीवन का वर्णन आदि प्राप्त होते हैं। 12 उपांगों के नाम निम्नवत हैं—

1. औपपातिक 2. राजप्रश्नीय 3. जीवाभिगम, 4. प्रजापना, 5.जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति, 6. चंद्र प्रज्ञप्ति, 7. सूर्य प्रज्ञप्ति, 8. निरयावलि, 9.कल्पावसंतिका 10. पुष्पिका 11. पुष्प चूलिका 12. वृष्णि दशा।

प्रकीर्ण (10) : ये प्रमुख ग्रंथों के परिशिष्ट हैं—

1. चतुः शरण 2. आतुर प्रत्याख्यान 3. भक्तिपरिज्ञा 4. संस्तार 5. तंदुल वैतालिक 6. चंद्रवैध्यक 7. गणिविद्या, 8. देवेन्द्रस्तव 9. वीरस्तव 10. महाप्रत्याख्यान।

छेदसूत्र (6)— इनकी संख्या 6 है। इनमें जैन भिक्षुओं के लिए उपयोगी विधि नियमों का संकलन है। इसका महत्त्व बौद्धों के विनयपिटक जैसा है। 6 छेदसूत्र इस प्रकार हैं—

1. निशीथ 2. महानिशीथ 3. व्यवहार 4. आचार दशा 5. कल्प 6. पंचकल्प।

मूलसूत्र : इसमें जैनधर्म के उपदेश, भिक्षुओं के कर्त्तव्य, विहार जीवन पथ नियम आदि का वर्णन है। इनकी संख्या चार हैं- ***उत्तराध्ययन, षडावशयक, दशवैकालिक, पिण्डनिर्युक्ति या पाक्षिक सूत्र।***

नान्दी सूत्र एवं अनुयोग द्वार : ये जैनियों के स्वतंत्र ग्रंथ तथा विश्वकोश हैं। इसमें भिक्षुओं द्वारा व्यवहार की जाने वाली प्राय: सभी बातें लिखी गयी हैं।

उपर्युक्त सभी ग्रंथ **श्वेताम्बर सम्प्रदाय** के जैनों के लिए हैं। **दिगम्बर सम्प्रदाय** के मतावलम्बी इन्हें प्रामाणिक नहीं मानते हैं, श्वेताम्बर अनुश्रति के अनुसार महावीर की मृत्यु के 140 वर्ष बाद **वलभी** (गुजरात) में देवर्द्धि **क्षमाश्रमण** की अध्यक्षता में एक सभा हुई, जिसमें धार्मिक साहित्य को संकलित किया गया। इसके बाद हुई **पाटलिपुत्र सभा** (द्वितीय) में भी कुछ ग्रंथों का संकलन हुआ। दिगम्बर मतावलम्बी भद्रबाहु की शिक्षाओं को ही प्रामाणिक मानते हैं।

बुद्ध के उपदेशों में उल्लिखित महत्वपूर्ण तथ्य

कर्म-सिद्धान्त महात्मा बुद्ध ने अपने उपदेशों में कर्म सिद्धान्त पर बहुत बल दिया है। वर्तमान का निर्णय भूतकाल में कार्य करते हैं।

पुनर्जन्म महात्मा बुद्ध ने प्रत्येक व्यक्ति को अपने भाग्य का निर्माता माना है। उनका कहना था कि अपने पूर्व कर्मों का फल भोगने के लिए मानव को बार-बार संसार में जन्म लेना पड़ता है।

मोक्ष (निर्वाण) बुद्ध ने बताया कि निर्वाण की प्राप्ति प्रत्येक मनुष्य के जीवन का अन्तिम लक्ष्य है। इससे उनका तात्पर्य यह था कि मनुष्य को सांसारिक इच्छा, भोग-लिप्सा का परित्याग कर देना चाहिए। महात्मा बुद्ध ने इसे शान्ति की वह अवस्था मानी है, जो कभी भंग नहीं होती।

ईश्वर बुद्ध ने ईश्वर के अस्तित्व को न स्वीकार किया है और न उसे नकारा ही है। ईश्वर के अस्तित्व की उलझन में वे नहीं पड़े।

वेद महात्मा बुद्ध ने वेदों की प्रामाणिकता को स्पष्ट रूप से नकारा है।

समानता महात्मा बुद्ध समाज में ऊँच-नीच के कट्टर विरोधी थे। उनके शिष्यों में सभी वर्णों के लोग थे और वे सब समान आदर की दृष्टि से देखे जाते थे। इसी कारण बौद्ध-धर्म को लोकतन्त्रात्मक धर्म भी कहा गया है।

बुद्धकालीन शब्दावली

- **चन्न** सारथी जो सिद्धार्थ के निष्क्रमण में सहयोगी था।
- **महाभिनिष्क्रमण** राजकुमार का गृह-त्याग
- **कंथक** सिद्धार्थ का प्रिय अश्व
- **उद्रक रामपुत्र** आलार कलाम के उपरान्त महात्मा बुद्ध ने उद्रक रामपुत्र को अपना गुरु स्वीकार किया।
- **सुजाता** ज्ञान प्राप्ति के उपरान्त महात्मा बुद्ध ने इस कन्या के हाथों भोजन ग्रहण किया था।
- **मार** कामदेव जिसने सिद्धार्थ की समाधि भंग कराने का प्रयास किया।
- **चुन्द** इसके द्वारा अर्पित भोजन (सुअर का मांस) ग्रहण करने के उपरान्त महात्मा बुद्ध महापरिनिर्वाण को प्राप्त हुए।
- **महापरिनिर्वाण** बौद्ध साहित्य में महात्मा बुद्ध के स्वर्ग सिधारने को महापरिनिर्वाण कहा गया है।

बौद्ध महासंगीतियां

प्रथम बौद्ध संगीति

समय	**483 ई० पू०**
स्थल	सप्तपर्णि गुफा (राजगृह, बिहार)
तत्कालीन शासक (मगध)	अजातशत्रु (हर्यक वंश)
संगीति अध्यक्ष	महाकस्सप

प्रमुख कार्य : बुद्ध की शिक्षाओं को संकलित कर उन्हें सुत्तपिटक (धर्म सिद्धांत) तथा विनय पिटक (आचार नियम) नामक दो पिटकों में विभाजित किया गया। आनन्द और उपालि क्रमश: धर्म व विनय के प्रमाण माने गये।

द्वितीय बौद्ध संगीति

समय	**383 ई०पू०** (बुद्ध के निर्वाण के सौ वर्ष बाद)
स्थल	चुल्लबग्ग, वैशाली (बिहार)
शासक (राज्यकाल)	कालाशोक (शिशुनाग वंश)
संगीति अध्यक्ष	यश नामक आचार्य

प्रमुख कार्य : पूर्वी भिक्षुओं (वज्जि पुत्र) ओर पश्चिमी भिक्षुओं के मध्य विनय सम्बन्धी नियमों को लेकर मतभेद होने के कारण भिक्षु संघ दो सम्प्रदायों (1) **स्थविर** (थेरवादी), (2) **महासांघिक** (सर्वास्तिवादी) में विभाजित।

थेरवादी : 'महाकच्चायन' के नेतृत्व वाले इस सम्प्रदाय ने परिवर्तन के परम्परागत विनय के नियम में आस्था रखी।

महासांघिक : 'महाकस्सप' के नेतृत्व में इस सम्प्रदाय ने परिवर्तन के साथ विनय के नियमों को स्वीकार किया। कालान्तर में उक्त दोनों सम्प्रदाय 18 उप-सम्प्रदायों में बंट गये।

तृतीय बौद्ध संगीति

समय	**250 ई० पू०**
स्थल	पाटलिपुत्र (तत्कालीन मगध की राजधानी)
शासक	अशोक (मौर्य वंश)
संगीति अध्यक्ष	मोग्गलिपुत्त तिस्स

प्रमुख कार्य : 1. तृतीय पिटक **'अभिधम्म'** (कथावत्थु) का संकलन जिसमें धर्म सिद्धांत की दार्शनिक व्याख्या की गयी है। 2. संघ भेद रोकने के लिए कठोर नियमों का निर्माण तथा बौद्ध साहित्य का प्रामाणिकीकरण। इस संगीति पर थेरवादियों का प्रभुत्व था।

चतुर्थ बौद्ध संगीति

समय	**प्रथम शताब्दी ईस्वी**
स्थल	कुण्डलवन (कश्मीर)
शासक	कनिष्क
संगीति अध्यक्ष	वसुमित्र
उपाध्यक्ष	अश्वघोष

प्रमुख कार्य : (महासांघिकों का बोलबाला) बौद्ध ग्रंथों के कठिन अंशों पर संस्कृत भाषा में विचार-विमर्श के पश्चात् उन्हें **'विभाषाशास्त्र'** नामक टीकाओं में संकलित किया गया। इसी समय बौद्ध धर्म हीनयान तथा महायान नामक दो स्पष्ट व स्वतंत्र सम्प्रदायों में विभक्त हो गया।

बौद्ध सम्प्रदायों (हीनयान व महायान) में अंतर

	हीनयान	महायान
1.	हीनयान सम्प्रदाय के लोग महात्मा बुद्ध को केवल एक महान व्यक्ति के रूप में मानते हैं।	महायानी महात्मा बुद्ध की देव तुल्य उपासना करते हैं।
2.	इस सम्प्रदाय के लोग बोधिसत्वों में विश्वास नहीं करते।	महायान सम्प्रदाय के लोग बोधिसत्वों को मानते हैं।
3.	हीनयान सम्प्रदाय के लोग मूर्ति पूजा में विश्वास नहीं करते।	महायानी महात्मा बुद्ध की प्रतिमा के रूप में उपासना करते हैं।
4.	इस सम्प्रदाय के लोग केवल अपने निर्वाण की चिन्ता करते हैं।	महायानी अपने साथ अपने साथियों के निर्वाण की भी चिन्ता करते हैं।
5.	अच्छे कर्म करने से ही मोक्ष संभव है।	महात्मा बुद्ध की उपासना से मोक्ष संभव है।
6.	हीनयान सम्प्रदाय के धार्मिक ग्रन्थ पालि भाषा में है।	महायान सम्प्रदाय के धार्मिक ग्रन्थ संस्कृत भाषा में उपलब्ध है।
7.	इस सम्प्रदाय का प्रभाव एशिया के दक्षिण-पूर्वी देशों में अधिक है।	महायान सम्प्रदाय का प्रभाव एशिया के उत्तरी-पूर्वी देशों में दृष्टव्य है।
8.	हीनयान सम्प्रदाय का सम्बन्ध आदर्श की शुद्धता से है।	महायान सम्प्रदाय के लोग आदर्श की उपयोगिता में विश्वास करते हैं।
9.	हीनयान सम्प्रदाय प्रधानतः दार्शनिक है।	महायान सम्प्रदाय शुद्धतः धार्मिक सम्प्रदाय है।
10.	हीनयान-में निर्वाण प्राप्ति के लिए भिक्षु बनना आवश्यक है।	इस सम्प्रदाय में निर्वाण के लिए भिक्षु बनना आवश्यक नहीं।

बौद्ध साहित्य

गौतम बुद्ध के बाद उनकी शिक्षाओं को विभिन्न बौद्ध संगीतियों के निर्वाण (सभाओं) में संकलित कर तीन **पिटकों** (पिटारियों) में विभाजित किया गया—

1. **विनय पिटक** 2. **सुत्त पिटक** 3. **अभिधम्म पिटक**।

इन्हें सम्मिलित रूप में '***त्रिपिटक***' की संज्ञा दी गयी। त्रिपिटक ***पालि भाषा*** में रचित है।

1. विनय पिटक—इसमें संघ सम्बंधी नियमों, दैनिक आचार-विचार व विधि-निषेधों का संग्रह है, जिसके निम्न भाग हैं—

(क) **पातिमोक्ख (प्रतिमोक्ष)** : इसमें अनुशासन सम्बन्धी विधानों तथा उनके उल्लंघन पर किए जाने वाले प्रायश्चितों का संकलन है।

(ख) **सुत्तविभंङ्ग** : इसमें पातिमोक्ख के नियमों पर भाष्य प्रस्तुत किए गये हैं। इसके दो भाग हैं—

(i) **महाविभंङ्ग** तथा (ii) **भिक्खुनी विभंङ्ग**। प्रथम में बौद्ध भिक्षुओं तथा द्वितीय में भिक्षुणियों हेतु विधि निषेध वर्णित हैं।

(ग) **खन्धक** : इसमें संघीय जीवन सम्बन्धी विधि निषेधों का विस्तृत वर्णन है, जिसके-**महावग्ग** और **चुल्लवग्ग**-नामक दो भाग हैं।

(घ) **परिवार**

2. सुत्त पिटक : इसमें बौद्धधर्म के सिद्धांत तथा उपदेशों का संग्रह हैं। इसमें पांच निकाय आते हैं—

दीघ्य निकाय, मज्झिम निकाय, संयुक्त निकाय, अंगुत्तर निकाय तथा खुद्दक निकाय। प्रथम चार में बुद्ध के उपदेश वार्त्तालाप रूप में दिये गये हैं और पाँचवां पद्यात्मक है। खुद्दक निकाय में कई ग्रंथ आते हैं, जैसे—**खुद्दक पाठ, धम्मपद, उदान सुत्तनिपात, विमान वत्थु, पंतवत्थु थेरगाथा, थेरीगाथा एवं जातक** आदि। जातकों में बुद्ध के पूर्व जन्मों (505) की कहानियाँ संग्रहीत हैं।

3. अभिधम्म पिटक : यह पिटक प्रश्नोत्तर क्रम में है और इसमें दार्शनिक सिद्धांतों का संग्रह है। इसमें सात ग्रंथ सम्मिलित हैं—**धम्मसंगणि, विभंग, धातुकथा, पुग्गल पंचति, कथावत्थु, यमक तथा पट्ठानं**। अभिधम्म पिटक सबसे बाद की रचना है, जो मौर्य सम्राट अशोक के काल में आयोजित **तृतीय बौद्ध संगीति** में संकलित की गयी।

त्रिपिटकों के अतिरिक्त पालि भाषा में लिखित अन्य बौद्ध ग्रंथों में **नागसेन कृत 'मिलिन्दपन्हो'** तथा **सिंहली अनुश्रुतियाँ**—दीपवंश व महावंश (सिंहल या लंका का इतिहास) उल्लेखनीय हैं।

संस्कृत बौद्ध ग्रंथ : संस्कृत बौद्ध लेखकों में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण नाम कवि, नाटककार अश्वघोष का है। सर्वास्तिवादी सम्प्रदाय के चिंतक अश्वघोष, कनिष्क (प्रथम शती ई०) की राजसभा में थे। उनकी प्रसिद्ध रचनायें हैं—**बुद्धचरित, सौन्दरानन्द तथा सारिपुत्र प्रकरण**। प्रथम दो महाकाव्य तथा अंतिम नाटक ग्रंथ है।

संस्कृत में ही लिखित **महावस्तु तथा ललितविस्तार** में महात्मा बुद्ध के जीवन तथा **दिव्यावदान** में परवर्ती मौर्य शासकों एवं शुंग राजा पुष्यमित्र शुंग का उल्लेख मिलता है।

बौद्धयुगीन गणतंत्र

1. *कपिलवस्तु के शाक्य* 2. *सुमसुमारगिरि के भग्ग*, 3. *अल्लकप्प के बुली*, 4. *केसपुत्त के कालाम*, 5. *रामग्राम के कोलिय*, 6. *कुशीनारा के मल्ल*, 7. *पावा के मल्ल*, 8. *पिप्पलिवन के मोरिय*, 9. *वैशाली के लिच्छवि*, 10. *मिथिला के विदेह*।

भागवत धर्म के खण्ड—पाञ्चरात्र संहिताओं के अनुसार सम्पूर्ण भागवत धर्म चार खण्डों में विभक्त है—

1. **ज्ञानपाद**—धर्म विज्ञान और दर्शन।
2. **योगपाद**—योग सिद्धान्त और अभ्यास।
3. **क्रियापाद**—मन्दिर निर्माण और मूर्ति स्थापना।
4. **चर्यापाद**—धार्मिक क्रियायें कराना।

वैष्णव धर्म या भागवत धर्म के प्रारंभिक साक्ष्य

- भक्ति, भागवत धर्म की मूल भावना है।
- महाभारत काल में भागवत धर्म के उपास्य देव कृष्ण वासुदेव माने गये।
- बौधायन धर्म सूत्र में नारायण की समता विष्णु से की गई।
- नारायण, वासुदेव व विष्णु को एक देवता के रूप में माना गया है।
- महाकाव्य काल में जब वासुदेव की पूजा प्रारंभ हुई तो नारायण के साथ वासुदेव का तादात्म्य स्थापित किया गया।
- तैत्तिरीय आरण्यक के **विष्णु-गायत्री** में नारायण, वासुदेव व विष्णु को एक ही माना है।
- पाणिनि की अष्टाध्यायी (5वीं सदी ई. पू.) में वासुदेव के उपासकों को **वासुदेवक** कहा गया है।
- राजा सर्वतात के घोसुण्डी शिलालेख में वासुदेव व संकर्षण की पूजा का उल्लेख उपलब्ध है।
- नानाघाट के एक गुहालेख (नानेनिका का लेख) में वासुदेव व संकर्षण की वन्दना की गई है।
- महाभारत के नारायणीय पर्व में वासुदेव को धर्म का सूत्रधार बताया गया है।

वैष्णव या भागवत धर्म : विशेष बिन्दु

गोविन्द	गोपेन्द्र, गो रक्षक, कृष्ण
सात्वत	यादवों की एक शाखा
सगुण उपासना	परमात्मा को साकार रूप में स्वीकार कर उसकी मूर्ति रूप में उपासना करना
चतुर्व्यूह	वासुदेव, संकर्षण, प्रद्युम्न और अनिरुद्ध चार तत्व 'चतुर्व्यूह' हैं।
कल्कि अवतार	कलियुग में होने वाला अवतार
पाञ्चरात्र	पांच वृष्णियों की उपासना पर बल दिया गया है।
चर्यापाद	मन्दिर निर्माण कराकर व मूर्ति की स्थापना करके पूजा करना।
अर्चा	इष्टदेव की उपासना ही अर्चा है।
कार्य	जीव और जगत् को कार्य कहा गया है।
कारण	परमात्मा (शिव) को कारण माना गया है।
योग	मानसिक क्रियाओं के द्वारा पशु और पति के संयोग को योग कहा गया है।
विधि	जिस मार्ग से पति (शिव) की प्राप्ति होती है, उसे विधि की संज्ञा दी गई है।
दुःखान्त	संसार के दुःखों से आत्यन्तिक निवृत्ति ही दुःखान्त अथवा मोक्ष है।

पाशुपत शैव मत के सम्प्रदाय

1. पाशुपत
2. लकुलीश पाशुपत
3. कापालिक
4. नाथ सम्प्रदाय
5. गोरख पन्थ
6. रसेश्वर

आगमिक शैव मत के सम्प्रदाय

1. शैव सिद्धान्त
2. तमिल शैव
3. काश्मीर शैव
4. वीर शैव

दक्षिण के शैव मत के सन्दर्भ में स्मरणीय तथ्य

नायनार	दक्षिण में शैवमत के प्रसारक
तेवारम स्त्रोत अथवा द्रविण वेद	तमिल भाषा में रचित भक्तिपूर्ण गीत जिनके माध्यम से नायनारों ने दक्षिण में इस मत का प्रसार किया।
तिरुज्ञान संबदर	ब्राह्मण नायनार जो उच्च श्रेणी के तथा ख्याति प्राप्त होते थे।
तिरुनावुक्करशु	निम्न जाति के नायनार इस श्रेणी में होते थे।
मणिक्कवाशगर	ये भी नायनार (धर्म प्रसारक) ही होते थे। परन्तु उनकी गिनती 63 नायनारों में नहीं होती।
तिरूवाशगम	मणिक्कवाशगरों का मूल तमिल भाषा में रचित धार्मिक ग्रन्थ है इसकी गिनती भारत के प्रधान काव्यों में होती है।
आगमंत	यह ग्रन्थ 28 आगम पर आधारित था। इसके विषय में यह कहा जाता था कि इसकी रचना स्वयं शिव ने की है। इसका दर्शन द्वैतवादी और अनेकवादी सिद्धान्त पर आधारित था।
शिवाचार्य	आगमंत के विचारों के प्रमुख प्रसारक थे।
श्रीकान्त शिवाचार्य	आप शुद्ध शैववाद विशिष्टाद्वैतवाद के सिद्धान्तों पर विश्वास करते थे। आप पर रामानुज के विचारों का पर्याप्त प्रभाव पड़ा था।

लिंगायत सम्प्रदाय के सन्दर्भ में ध्यातव्य बातें

एकान्त रामय्या	फ्लीट महोदय के अनुसार लिंगायत सम्प्रदाय की स्थापना इन्होंने की थी।
स्थल वा शिवतत्व	लिंगायत सम्प्रदाय के अनुसार सच्चिदानन्दमय परम-ब्रह्म ही शिवतत्व है।
लिंगस्थल	यह स्थल का प्रथम भाग है। यह त्रिविध होता है— 1. भावलिंग, 2. प्राणलिंग, व 3. इष्टलिंग। लिंग स्थल को शिव का रूद्र रूप माना गया है और वह पूज्य है।
लिंगोपासना	लिंगायत सम्प्रदाय ने वैदिक खण्डनों के बावजूद लिंगोपासना पर बल दिया है।
भावलिंग के भेद	महालिंग व प्रसादलिंग
प्राणलिंग के भेद	चरलिंग व शिवलिंग
इष्ट लिंग	आचारलिंग व गुरुलिंग
लिंगपुराण	18 पुराणों में से 11वां पुराण है।
उत्पत्ति	लिंगायत सम्प्रदाय की उत्पत्ति कर्नाटक के समुद्र तट पर तथा महाराष्ट्र प्रदेश में 12वीं सदी के मध्य हुई।
साहित्य	लिंगायत साहित्य अधिकांश कन्नड़ तथा संस्कृत में है। कुछ महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ तेलुगु भाषा में भी हैं। इसका अति प्राचीन ग्रन्थ **'पंडिताराध्य जीवन'** है जिसकी रचना सोमनाथ ने संस्कृत तथा तेलुगु मिश्रित भाषा में की है। अन्य ग्रन्थ—वसव पुराण, श्रीकर भाष्य (वेदान्त सूत्र का भाष्य) सूक्ष्म आगम पूर्ण लिंगायत है।
वचन	लिंगायतों की प्रमुख शिक्षाएँ कन्नड़ में **'वचन'** कहलाती हैं।

बिन्दुसार (299 ई. पू. से 272 ई. पू.)

(नाम एवं परिवार)

नाम	विवरण
अमित्रकेटे	यूनानी विद्वानों द्वारा उल्लिखित नाम।
अमित्रघात	संस्कृत भाषा में अर्थ-शत्रुओं का विनाश करने वाला। इसे उसका विरुद्ध भी माना है।
बिन्दुसार	पुराण व बौद्ध-ग्रन्थों में उल्लिखित नाम।
भद्रसार	वायु पुराण में उल्लिखित।
सिंहसेन	राजबुली पाण्डे द्वारा उल्लिखित।
परिवार	**विवरण**
दुर्धरा	बिन्दुसार की माता-जैन विद्वान हेमचन्द्र के मतानुसार।
रानी	धम्मा—महावंश में उल्लिखित सुभद्रांगी—अशोकावदान के अनुसार।
चाणक्य	मंत्री—इतिहासकार तारानाथ के मातानुसार। आर्यमंजुश्रीमूलकल्प में उल्लिखित।
राधगुप्त	चाणक्य की मृत्यु के उपरान्त बना मंत्री।
सुसीम व अशोक	दोनों बिन्दुसार के पुत्र

बिन्दुसार : विदेश नीति

एण्टीयोक्स	सैल्युकस का उत्तराधिकारी। उसे सीरिया का शासक बताया गया है।
डायमेकेस	एण्टीयोक्स द्वारा बिन्दुसार के दरबार में प्रेषित राजदूत।
टालेमी	मिस्र का शासक जिसने डायोनिसस को दूत के रूप में
फिलेडेल्फस II	बिन्दुसार के दरबार में भेजा था।
डायोनिसस	मिस्र के शासक का राजदूत।

मौर्यकालीन शब्दावली

परिषद	:	मंत्रियों की सभा
जेट्ठक	:	शिल्पी संघ का मुखिया।
भोगागम	:	जेट्ठकों को निर्वाह के लिए राजा की ओर से मिलने वाला गांव का राजस्व।
गहपति	:	भू-स्वामी।
कार्षापण	:	मुद्रा की तरह प्रयुक्त सोने का टुकड़ा।
अदेवमातृक	:	बिना वर्षा के ही अच्छी खेती होने वाली भूमि।
सीता	:	सरकारी जमीन (मध्यकालीन खालसा की तरह), जिसका देख-रेख सीताध्यक्ष नामक अधिकारी करता था।
न्यायक	:	सेना का संचालक व छावनी बनवाने वाला मंत्री।
दण्डपाल	:	सैनिक अधिकारी।
अंतपाल	:	विदेशी आक्रमण से देश की रक्षा करने वाला।
विष्टि	:	नि:शुल्क श्रम या बेगार मंत्री।
बलि	:	एक प्रकार का धार्मिक कर या चढ़ावा।
भाग	:	भूमि कर में राजा का हिस्सा।
क्षेत्रक	:	भूमि का मालिक।
उपवास	:	जमीन पर खेती करने वाला या काश्तकार।
हिरण्य	:	ऐसा कर, जो अनाज के रूप में न लेकर नकद लिया जाता था।
वार्ता	:	कौटिल्य द्वारा लिखित 'अर्थशास्त्र' नामक पुस्तक में 'कृषि, पशुपालन एवं व्यापार' के लिए संयुक्त रूप से प्रयुक्त शब्द।
तीर्थ	:	अर्थशास्त्र के अनुसार शीर्षस्थ अधिकारी या विभागाध्यक्ष।
समाहर्ता	:	राजस्व विभाग का प्रमुख अधिकारी।
सन्निधाता	:	राजकीय कोष का मुख्य अधिकारी या कोषाध्यक्ष।
प्रदेष्टा	:	फौजदारी न्यायालय का न्यायाधीश।
कर्मान्तिक	:	उद्योग की देख-रेख करने वाला मुख्य अधिकारी।
आटविक	:	वन विभाग का मुख्य अधिकारी।
आहार	:	मौर्यकालीन प्रांतों को आहार कहा जाता था।
गूढ़ पुरुष	:	मौर्यकालीन गुप्तचर (संस्था और संचार)।
धर्मस्थीय	:	दीवानी अदालतें।
कंटकशोधन	:	दीवानी अदालतें।
एग्रोनोमई	:	मेगस्थनीज के अनुसार मार्ग निर्माण का प्रमुख अधिकारी।
अनिष्कासिनी	:	अर्थशास्त्र के अनुसार घर से बाहर न निकलने वाली स्त्रियाँ।
रूपाजीवा	:	स्वतन्त्र वेश्यावृत्ति का जीवन अपनाने वाली स्त्रियाँ।
व्यावहारिक	:	यह धार्मिक विषयों में न्याय करता था।
पौर (नागरक)	:	इसके अधीन नगर की शासन व्यवस्था होती थी।
प्रशास्ता	:	सम्राट की आज्ञाओं को लिपिबद्ध करता था।
दौवारिक	:	राजमहल की सुरक्षा का भार इसके अधीन था।
आन्तर्वेशिक	:	सम्राट की निजी सेवा का अध्यक्ष।
आटविक	:	वन विभाग का अधिकारी।
प्रणय	:	संकट काल में वसूल किया जाने वाला कर।
कौष्ठेयक	:	सरकारी जलाशयों से सिंचित भूमि से वसूल किया जाने वाला कर।
पार्शव	:	व्यापारी के अधिक लाभ पर वसूल किया जाने वाला कर।
परिहीनक	:	सरकारी भूमि को पशुओं द्वारा हानि पहुँचाने पर हर्जाने के रूप में लिया जाने वाला कर।

मौर्यकालीन प्रांत या आहार (5)

	प्रांत	राजधानी
1.	उत्तरापथ	तक्षशिला
2.	दक्षिणापथ	सुवर्णगिरि
3.	प्राशी या पूर्वी प्रांत	पाटलिपुत्र
4.	अवंति राष्ट्र	उज्जयिनी
5.	कलिंग	धौली या तोसली

अशोक कालीन ऐतिहासिक स्त्रोत

स्त्रोत		विवरण
साहित्यिक स्त्रोत (बौद्ध-धर्म ग्रन्थ)	1. दीपवंश 2. महावंश	दोनों बौद्ध धार्मिक ग्रन्थ हैं। इनसे अशोक के धर्म व शासन की जानकारी मिलती है।
	3. महाबोधिवंश	इसमें उल्लेखित है कि अशोक को राज्य प्राप्ति के लिए अपने भ्राताओं से संघर्ष करना पड़ा।
	4. दिव्यावदान	इसमें भी अशोक के जीवन की घटनाएँ हैं।
	5. सामन्तपासादिका 6. सुमंगलविलासिनी	बुद्धघोष द्वारा रचित इनमें अशोक के जीवन की कई घटनाएँ लिपिबद्ध हैं।
	7. अशोकावदान माला	यह महायान सम्प्रदाय का ग्रन्थ है। इसके प्रथम भाग में अशोक सम्बन्धी सामग्री लिपिबद्ध है। इसके दूसरे भाग में उपगुप्त द्वारा अशोक को दिया गया धर्मोपदेश है।
	8. आर्यमंजुश्रीमूलकल्प	इसमें अशोक के जीवन की घटनाएँ हैं।
हिन्दू धर्म ग्रन्थ	पुराण	ब्राह्मण ग्रन्थों में पुराण ऐसे ग्रन्थ हैं जिनमें मौर्य वंशीय नरेशों की जानकारी मिलती है।
लौकिक साहित्य	राजतरंगिणी	इसकी रचना कल्हण ने 12वीं सदी में की थी। हालांकि यह एक प्रकार से कश्मीर का इतिहास है, परन्तु इसमें अशोक के शासन की भी कई घटनाएँ उपलब्ध हैं।
विदेशी यात्री	धर्मेतर साहित्य में फाह्यान और युवान च्वांग के यात्रा वर्णन भी अशोक के जीवन की कई घटनाओं पर प्रकाश डालते हैं।	

(अ) शिलालेख (अशोक)

शिलालेख	प्राप्ति के स्थान
शाहबाज गढ़ी	यह पेशावर जिले में प्राप्त हुआ है।
मानसेहरा	यह हजारा जिले में है।
काल्सी	देहरादून जिले में है।
गिरनार	काठियावाड़ में जूनागढ़ के समीप मिला है।
सोपारा (दो)	बंबई राज्य के थाना जिले में मिला है।
धौली और जौगड़	उड़ीसा राज्य में है।
येर्रगुड़ी	आन्ध्र राज्य के कुर्नूल जिले में है।

(ब) लघु शिलालेख

रूपनाथ	जबलपुर जिले में।
बैराठ	जयपुर के समीप स्थित बैराठ में।
सहसराम	बिहार के शाहाबाद जिले में।
मस्की	रायचूर जिले में।
रावीमठ और पालकीगुण्डु	मैसूर के कोयबल तालुके में है।
गुर्जरा	मध्य-प्रदेश के दतिया जिले में प्राप्त हुआ है।
मण्डगिरी	कुर्नूल जिले के राजकुल में है।
10, 11, 12 लघु शिलालेख	ये तीनों लघु शिलालेख मैसूर के चीतलदुर्ग के तीन स्थानों पर।
13 वां लघु शिलालेख	कन्दहार के समीप शेरकुना में।

विभिन्न नरेशों के पास भी अशोक ने धर्म प्रचारक भेजे

प्रचारक	विभिन्न देशों के नरेश
1. अन्तियोक	सीरिया के राजा एण्टिओकस द्वितीय थियोस
2. तुरमय	मिस्र के राजा टालेमी द्वितीय फिलेडेलफस
3. अन्तिकिनि	मकदूनिया के राजा एण्टिगोनाटस
4. मक	साइरीन के राजा मग
5. अलिकसुन्दर	एपिरस के राजा एलेक्जेंडर

अशोक द्वारा धर्म-प्रचार

धर्म प्रचारक	स्थान
1. मज्झन्तिक	कश्मीर व गान्धार
2. महारक्षित	यूनानी प्रदेश (गान्धार के उत्तर पश्चिम में)
3. मज्झिम	हिमाचल प्रदेश
4. धर्म-रक्षित	अपरान्त (बम्बई का उत्तरी भाग)
5. महाधर्मरक्षित	महाराष्ट्र
6. महादेव	महिष्मण्डल (मैसूर और मान्धाता)
7. रक्षित	बनवासी (उत्तरी कनारा)
8. सोन और उत्तर	सुवर्ण भूमि (पूर्वी द्वीप समूह तथा ब्रह्मा)
9. महेन्द्र •	लंका

भारत से निर्यात होने वाली वस्तुएँ

जहाँ से निर्यात होती थीं	जहाँ निर्यात की जाती थीं	वस्तुओं का विवरण
बर्बापी बन्दरगाह	पश्चिमी एशिया के देश व यूरोपीय देश, अरब, यूनानी मिस्र व रोम	मसाले, फीरोजा, लाजवर्द, अकीक (एक पत्थर), चीनी, सिल्क, सूत।
	नोट-चीनी सिल्क सीधे यूरोप न भेजकर भारत के माध्यम से ही जाती थी। इसका कारण तत्कालीन राजनीतिक परिस्थिति थी। बर्बापी बन्दरगाह सिन्धु नदी के मुहाने पर स्थित था। यह उस मार्ग पर था जो पंजाब को गांधार से जोड़ता था। अत: उत्तर भारत अपना निर्यात इसी बन्दरगाह से करता था।	
भरुच-(बेरीगाजा) भारूकच्छ	यह बन्दरगाह नर्मदा नदी के मुहाने पर स्थित था। इसे यूनानी में बेरीगाजा भी कहा गया है। यह उज्जैन, मथुरा तथा गंगा की घाटी से जुड़ा हुआ था। अत: इस बन्दरगाह से मध्य-भारत व दक्षिण भारत में आयत निर्यात किया जाता था।	
	नोट—आरंभिक समुद्री व्यापार के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी हमें 'लाल सागर परिभ्रमण' के विषय में लिखित श्रेष्ठ ग्रन्थ (Periplus of the Erytherean Sea) से मिलती है। यह यूनानी कृति प्रथम शताब्दी ईसा पूर्व मे किसी अज्ञात नाविक द्वारा लिखी गई थी जिसमें लाल सागर तथा भारत के मध्य उसके द्वारा भ्रमण किये गये बन्दरगाहों का विवरण है।	

यूनानी-रोमन (क्लासिकल) लेखक

भारतीय स्त्रोतों से सिकन्दर के आक्रमण (325 ई० पू०) की कोई जानकारी नहीं मिलती, इसके लिए यूनानी स्त्रोतों पर ही आश्रित रहना पड़ता है। सिकन्दर महान के आक्रमण के समय एक समकालीन भारतीय राजा **''सैन्ड्रोकोटस''** का नामोल्लेख यूनानी लेखकों **स्ट्रैबो व जस्टिन** ने किया है। **विलियम जोंस** ने इसकी पहचान **चन्द्रगुप्त मौर्य** के रूप में की। **एरियन** तथा **प्लूटार्क** ने उसे **'एण्ड्रोकोटस'** तथा **'फिलार्कस'** ने **'सैण्ड्रोकोटस'** के नाम से उल्लिखित किया है। स्ट्रैबो, डायोडोरस, प्लिनी और एरियन नामक यूनानी विद्वान **'क्लासिकल' लेखक** माने जाते हैं।

टेसियस : ईरानी राजवैद्य, जिसने मात्र ईरानी अधिकारियों से ही भारत विषयक ज्ञान प्राप्त करके अपना विवरण लिखा था।

हेरोडोटस : 'इतिहास का पिता' कहलाने वाले हेरोडोटस ने अपने ग्रंथ **'हिस्टोरिका'** में पाँचवी शताब्दी ई० पू० के भारत-फारस सम्बन्ध का वर्णन अनुश्रुतियों के आधार पर किया है।

नियार्कस, आनेसिक्रिटस एवं आरिस्टोबुलस : सिकन्दर के साथ भारत आने वाले उक्त लेखकों के विवरण अधिक प्रामाणिक माने जाते हैं, जिनका उद्देश्य अपने देशवासियों को भारतीयों के विषय में बताना था।

मेगस्थनीज : मेगस्थनीज सिल्यूकस 'निकेटर' के राजदूत के रूप में चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार में 14 वर्षों तक रहा। उसने अपनी पुस्तक **'इण्डिका'** में मौर्य युगीन समाज व संस्कृति के बारे में लिखा, लेकिन यह ग्रंथ अपने मूल रूप में न प्राप्त होकर केवल उत्तरकालीन यूनानी लेखकों के उद्धरण के रूप में उपलब्ध होता है।

डाइमेकस : सीरियाई राजा अन्तियोकस के राजदूत के रूप में बिन्दुसार के दरबार में निवास किया था।

डायोनिसियस : मिस्र नरेश टालेमी फिलाडेल्फस के राजदूत के रूप में यह अशोक के दरबार में आया था।

टॉलेमी की 'ज्योग्राफी' और 'पेरीप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी' : ज्योग्राफी लगभग 150 ई० के आसपास लिखी गयी थी, जिसमें प्राचीन भारतीय भूगोल और वाणिज्य का वर्णन है। **'पेरीप्लस'** का अज्ञात लेखक 80-115 ई० के मध्य हिन्द महासागर की यात्रा पर आया था। उसने बंदरगाहों और व्यापारिक वस्तुओं का विवरण दिया है।

प्लिनी : प्लिनी ने **नेचुरल हिस्टोरिका** लिखी थी, (ईसा की प्रथम सदी) - जो लैटिन भाषा में है, जिसमें भारत व इटली के मध्य होने वाले व्यापार तथा भारतीय पशुओं, वनस्पतियों, खनिजों का पर्याप्त विवरण है।

शुंग वंश

इस वंश का संस्थापक पुष्यमित्र था। वह ब्राह्मण था।

क्र. सं.	शासक	राजधानी	शासन काल	स्रोत	उपलब्धियाँ		सार्वजनिक कार्य
					सैनिक	साहित्यिक	
1.	**पुष्यमित्र**	पाटलिपुत्र	185-191ई.पू.	पतंजलि	विदर्भ को परास्त किया		दो अश्वमेध यज्ञ किए। हिन्दू धर्म का प्रचार भरहुत का स्तूप निर्माण।
2.	**अग्निमित्र**	पाटलिपुत्र		मालविकाग्नि-मित्रम् पतंजलि का महाभाष्य		भरहुत व सांची के स्तूपों के तोरण द्वारों का निर्माण	
नोट—अग्निमित्र के उपरान्त 8 नरेशों ने और राज्य किया। वे थे—ज्येष्ठ मित्र, वसुमित्र, भुद्रक, तीन नरेश अज्ञातनाम, फिर भागवत जिसने 32 वर्ष राज्य किया। अन्तिम नरेश देवभूति। उसका मन्त्री वासुदेव। वह 73 ई. पू. में अपने स्वामी को पदच्युत कर स्वामी बन बैठा।							

सातवाहन वंश

क्र. स.	शासक	राजधानी	शासनकाल	स्रोत	सैनिक उपलब्धिया	सार्वजनिक कार्य
1.	**सिमुक**	प्रतिष्ठान वा पैठन	60 ई.पू. से 37 ई.पू. के मध्य	पुराण, जैन अनुश्रुति	संभवत: 60 ई.पू. के लगभग उसने कण्व नरेश सुशर्म को परास्त किया	दुष्ट प्रकृति का होने के कारण 23 वर्ष उपरान्त वह गद्दी से उतार दिया गया।
2.	**कृष्ण**	प्रतिष्ठान वा पैठन	37 से 27 ई.पू.	नासिक अभिलेख	साम्राज्य पश्चिम में बढ़ाया	एक गुफा का निर्माण एक श्रमण महापात्र द्वारा।
3.	**श्रीशातकर्णी**	प्रतिष्ठान वा पैठन	27 से 17 ई.पू.	नागरिक का नानाघाट अभिलेख, खारवेल, सांची अभिलेख, परिपल्स ग्रन्थ व पुराण।	मालवा विजित किया दक्षिणा-पथ-पति का विरुद्ध धारण किया पश्चिम का स्वामी माना गया।	अश्वमेध व राजसूययज्ञ किए, पुरोहितों को दान व दक्षिणा दी। कल्याण व्यापार केन्द्र बना।
4.	**गौतमी पुत्र शातकर्णी**	प्रतिष्ठान वा पैठन	106 130 ई.	नासिक अभिलेख जोगलथंबी में प्राप्त मुद्राएँ, उसके शासन का 18वां अभिलेख	महाराष्ट्र पर अधिकार, नेहपान को परास्त किया।	
5.	**वाशिष्ठी पुत्र श्री पुलुमावि**	प्रतिष्ठान वा पैठन	130 158 ई. 24 वर्ष शासन किया	गोदावरी व गुणटूर में प्राप्त सिक्के, टालमी अभिलेख, कार्ले व अमरावती अभिलेख	आन्ध्र राज्य का प्रथम शासक। प्रतिष्ठान का राजा बेलारा उसके साम्राज्य का अंग	
6.	**वाशिष्ठी पुत्र शिव श्री शातकर्णी**	प्रतिष्ठान वा पैठन	159-166 ई.	कन्हेरी के दारी गृह के अभिलेख	संभवत: उसने रूद्रदामन (महाक्षत्रप) की पुत्री से विवाह किया, दो बार परास्त हुआ।	
7.	**यज्ञश्री शातकर्णी** (अंतिम नरेश)	प्रतिष्ठान वा पैठन	166 190	नासिक, कन्हेरी व कृष्णा जिले में प्राप्त अभिलेख, उसके दो मस्तूल वाले सिक्के गुजरात व मध्य प्रदेश में भी मिले हैं।	महाराष्ट्र, उनरी कोंकण समुद्र तक साम्राज्य विस्तृत	

गुप्तकालीन व्यवसायी : समाज स्मरणीय तथ्य

श्रेणी •	समान व्यवसायियों का संगठन
निगम •	शिल्पियों का महान संगठन
पट्टवाय	रेशमी वस्त्र बुनने वाले जुलाहे
मृत्तिकार	कुंभकार
आचार्य	एक श्रेणी का मुखिया जो अपने व्यवसाय की शिक्षा देता था
अन्तेवासी	आचार्य के निर्देशन में गुरुकुल में ही रहकर शिक्षार्जन करने वाले
साहूकार	ब्याज की दर पर रुपया उधार देने वाला
गन्धव्य	इत्र बनाने वाला गंधी
सूपकार	रसोई बनाने वाला हलवाई
कासवन	नाई
चर्मचह •	चमड़े का काम करने वाला मोची
कंसकार	बर्तन गढ़ने वाला कसेरा
सौचिक	वस्त्र सीने वाला दर्जी
भिल्ल	आखेट कर जीविका उपार्जन करने वाला वर्ग
गुआर	पशुओं को चराने वाले ग्वाल
छिम्प	छीपा वर्ग
कन्दपीलक	तेल निकालने वाले तेली

गुप्तकालीन शब्दावली

भुक्ति (देश)	:	गुप्तकालीन प्रांतों का नाम। गुप्तकालीन प्रांत / प्रांतपतियों के लिए **'उपरिक'** अथवा **'उपरिक महाराज'** संज्ञा प्रयुक्त हुई है।
विषय	:	गुप्तकालीन जनपद, जिसके अधिकारी विषयपति कहे जाते थे।
महत्तर	:	ग्राम सभाओं के सदस्य।
पूग	:	नगर में निवास करने वालों की समिति।
भाग	:	भूमि के उत्पादन से राजा को कर के रूप में प्राप्त होने वाला छठां हिस्सा।
भोग	:	राजा को प्रतिदिन फल-फूल के रूप में दिया जाने वाला कर।
क्षेत्र भूमि •	:	खेती के योग्य भूमि।
वास्तु भूमि •	:	निवास करने योग्य भूमि।
चारागाह भूमि	:	पशुओं के चारा योग्य भूमि।
सिल •	:	ऐसी भूमि जो जोतने योग्य नहीं होती।
अप्रहत	:	जंगली भूमि।
श्रेणी	:	व्यावसायिक उद्यमों/शिल्पों का संगठन।
जेष्ठक या जेष्ठ	:	श्रेणियों के मुखिया।
निगम	:	व्यापारिक समितियां।
श्रेष्ठि	:	निगम का प्रधान।
दीनार	:	गुप्त राजाओं द्वारा जारी स्वर्ण मुद्रायें जिन्हें अभिलेखों में दीनार कहा गया।

गुप्तकालीन ऐतिहासिक शब्दावली

महत्तर : उत्तर भारतीय ग्रामीण क्षेत्रों में ग्राम वृद्ध व मुखिया लोगों का वर्ग।
सार्थवाह : व्यापारिक कारवाँ के नेता।
विष्टि : बाध्य श्रम या बेगार।
कायस्थ : सर्वप्रथम 'याज्ञवल्क्य स्मृति' में उल्लिखित। लेखक (सरकारी कर्मचारी) कालान्तर में जाति-विशेष का सूचक।
भुक्ति : गुप्तकाल में प्रांत का नाम।
विषय : गुप्तकालीन जिला।
पेठ : गुप्तकालीन ग्राम समूह।
उपरिक : भुक्ति का प्रशासक।
भाग : गुप्त काल में राजा को प्राप्त होने वाला प्रमुख कर, उपज का छठां भाग।
क्षेत्र : खेती के योग्य भूमि।
वास्तु : वास करने योग्य भूमि।
सिल : जो भूमि जोती नहीं जाती थी।
अप्रहत : बिना जोती गयी जंगली भूमि।
कुटुम्बी : भू-स्वामी स्वतंत्र किसान।
सीरिन : बटाई पर खेती करने वाले किसान।
आर्धीक : पाराशर स्मृति के अनुसार फसल बटाई करने वाली एक पृथक जाति।
अग्रहार : ब्राह्मण बस्तियों को दान में दी जाने वाली भूमि। (भूमिदान का प्रथम प्रमाण ई० पू० प्रथम शताब्दी का है, जब सातवाहन शासकों ने वैदिक यज्ञों के अधिष्ठाता पुरोहितों को '**कर मुक्त**' भूमि प्रदान की थी। पांचवीं शताब्दी में यह प्रथा काफी तेज हो गयी।)
मेलबार : मंदिरों को शासन द्वारा प्राप्त गाँवों से होने वाली आय।
ब्रह्मदेय : ब्राह्मणों को दी जाने वाली कर मुक्त भूमि।
देवदान : ब्राह्मणों को भूमि दान में देना।
परिहार : परिहार का अर्थ है-'देवदान' भूमि को राज्य करों से मुक्ति।
नागर शैली : उत्तरी भारत में हिमालय से लेकर विंध्य प्रदेश तक प्रचलित मंदिर निर्माण की शैली, जिसमें मंदिर का आधार 'चतुष्कोणीय' (वर्गाकार) तथा शिखर वक्र होता था।
द्रविड़ शैली : कृष्णा तथा कुमारी अंतरीप (तमिलनाडु) के मध्य प्रचलित मंदिर शैली। आधार आयताकार, शिखर पिरामिडनुमा। अनेक खंड, गुंबदाकार स्तूपिका, प्रदक्षिणा पथ। '**गोपुरम्**' अर्थात् मुख्यद्वार इन मंदिरों की विशेषता थी।
बेसर शैली (चालुक्य शैली) : विंध्य पर्वतमालाओं से कृष्णा नदी के बीच प्रचलित मंदिर शैली; नागर-द्रविड़ से मिलकर बनी मिश्रित शैली।
उरूशृंग : मंदिरों के शिखरों पर छोटे-छोटे उप-शिखर (चंदेल काल की विशेषता)।
देवुल : मंदिर के मुख्य भाग में स्थित गर्भगृह (नागर)।
सप्त पैगोडा : महाबलीपुरम् (पल्लव) में स्थित "**मामल्ल शैली**" के आठ रथ मंदिर।
वार्त्ता : कृषि, पशुपालन और वाणिज्य का संयुक्त नाम।
देवकुल : रोम के प्रभाव से कुषाण शासकों द्वारा आरम्भ मृत राजाओं की मूर्तियाँ स्थापित करने की प्रथा 'देवकुल' कहलाती थी।

गुप्तकालीन साहित्य

साहित्यकार	उनकी रचनाएं
वात्स्यायन	कामसूत्र
क्षेमेन्द्र	वृहत्कथा मंजरी
दंडी	दसकुमार
भास	स्वप्नवासवदत्ता, प्रतिज्ञायौगन्धरायण
ब्रह्मगुप्त	ब्रह्मसिद्धांत
कामन्दक	नीतिसार
शूद्रक	मृच्छकटिकम्
राजशेखर	काव्यमीमांसा
भट्टी	रावण वध (भट्टिकाव्य)
भारवि	किरातार्जुनीयम्
विष्णु शर्मा	पंचतंत्र
आर्यभट्ट	आर्यभटीयम्
वाग्भट्ट	अष्टांग हृदय
विशाखदत्त	देवीचन्द्रगुप्तम्, मुद्राराक्षस

संस्कृत रचनाकार और उनकी प्रमुख कृतियाँ

अश्वघोष— संस्कृत के बौद्ध कवियों एवं नाटककारों में प्रमुख अश्वघोष प्रथम शताब्दी ई० में कुषाण सम्राट कनिष्क के राज दरबार में थे। महान कवि, नाटककार, दार्शनिक और संगीतकार अश्वघोष की प्रमुख कृतियां हैं— **बुद्धचरित, सौन्दरानंद** (महाकाव्य) तथा **सारिपुत्रप्रकरण** (नाटक)।

कालिदास— शैव मतावलम्बी कालिदास गुप्त सम्राट चंद्रगुप्त द्वितीय के दरबारी कवि (उज्जयिनी में) थे। कालिदास द्वारा रचित निम्न 7 पद्य और नाट्य ग्रंथों की प्रामाणिकता सुविदित हैं—

1. *ऋतुसंहार*— यह कालिदास की प्रथम काव्य रचना है, जो 6 सर्गों (6 ऋतुओं) का एक खंडकाव्य है-**ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त, शिशिर एवं वसंत**।

2. मेघदूत — पूर्वमेघ तथा उत्तर मेघ में विभक्त खंडकाव्य, वियोग शृंगार की उत्कृष्ट रचना।

3. *कुमार सम्भव* — 17 सर्गों का महाकाव्य, जिसमें शिव व पार्वती के पुत्र कुमार (कार्तिकेय) के जन्म की कथा वर्णित है।

4. *रघुवंश* — 19 सर्गों में विभक्त महाकाव्य, जिसमें राजा दिलीप से लेकर अग्निवर्ण तक चालीस इक्ष्वाकुवंशीय राजाओं का चरित्र चित्रण है।

5. *मालविकाग्निमित्र* — पाँच अंकों में विभक्त, कालिदास की *प्रथम नाट्य रचना,* जिसमें शुंग राजा अग्निमित्र और मालविका की प्रणय कथा वर्णित है।

6. *विक्रमोर्वशीय*— कालिदास का द्वितीय नाट्य ग्रंथ, पांच अंकों में पुरूरवा एवं उर्वशी की प्रणय कथा।

7. *अभिज्ञानशाकुंतलम्*— कालिदास की सर्वोत्कृष्ट नाट्य रचना, सात अंकों में हस्तिनापुर के राजा दुष्यन्त व कण्व ऋषि की पालिता पुत्री शकुन्तला के संयोग व वियोग शृंगार का वर्णन।

भारवि— 18 सर्गों में विभाजित '**किरातार्जुनीयम**' नामक महाकाव्य के रचयिता।

माघ (675 ई०)— महाकाव्य '**शिशुपाल वध**'।

श्रीहर्ष (12 वीं शती गाहड़वाल जयचंद)— **नैषधीयचरित** (महाकाव्य), **खण्डनखण्डखाद्य** (अद्वैतवाद का प्रणयन)।

भास (ई० पू० पांचवीं-चौथी शती)— कालिदास के पूर्ववर्ती प्रथम नाटककार, जो निम्न 13 नाटकों के प्रणेता हैं—

1. *स्वप्नवासवदत्ता* 2. *उरूभंग* 3. *प्रतिमका* 4. *अभिषेक* 5. *पंचरात्र* 6. *मध्यम व्यायोम* 7. *दूतघटोत्कच* 8. *कर्णभार* 9. *दूतवाक्य* 10. *बालचरित* 11. *दरिद्र चारूदत्त* 12. *अविमारक* 13. *प्रतिज्ञायौगन्धरायण*।

विशाखदत्त (**गुप्तकालीन**)— ***मुद्राराक्षस, देवीचंद्रगुप्तम्***।

शूद्रक (गुप्तकाल)— मृच्छकटिकम् संस्कृत में; पहली बार शूद्रक ने ही अपनी रचनाओं का पात्र राज परिवार के स्थान पर समाज के मध्यम वर्ग के लोगों को बनाया।

हर्षवर्द्धन (606-647 ई०)—तीन नाटक-**रत्नावली, प्रियदर्शिका** तथा **नगानन्द**।

भवभूति (700 ई०-यशोवर्मन, कन्नौज)— तीन नाटक-**मालतीमाधव, उत्तररामचरित, महावीर चरित**।

राजशेखर— कन्नौज के प्रतिहार राजाओं महेन्द्रपाल (890-908 ई०) तथा महिपाल (910-940 ई०) की राजसभा में निवास करने वाले प्रसिद्ध संस्कृत कवि/नाटककार। चार नाटकों तथा एक अलंकार शास्त्र का प्रणयन-**बाल रामायण, बाल भारत** (प्रचण्ड पांडव), **विद्धशालभंजिका, कर्पूरमंजरी, काव्यमीमांसा**

गद्य साहित्य

बाणभट्ट (हर्ष काल)— **हर्षचरित, कादम्बरी**।

दण्डी (पल्लव नरसिंह वर्मन 690-715 ई०)— **काव्यादर्श, दशकुमार चरित, अवन्ति सुन्दरी कथा**।

ऐतिहासिक साहित्य

पद्मगुप्त 'परिमल' (परमार शासक मुंज) (992-998 ई०)— **नवसहसांकचरित**।

बिल्हण (कल्याणी चालुक्य विक्रमादित्य षष्ठ-1076-1127)— **विक्रमांकदेव चरित**।

कल्हण— कल्हण ने अपनी ऐतिहासिक कृति '**राजतरंगिणी**' की रचना कश्मीर नरेश जयसिंह (1127-1159) ई० के काल में की। इसमें 8 तरंगों में कश्मीर का 12 वीं शती तक का इतिहास वर्णित है। राजतरंगिणी संस्कृत भाषा में ऐतिहासिक घटनाओं को क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत करने का प्रथम प्रयास माना जाता है।

हेमचंद्र (12 वीं शती)— *कुमार पाल चरित* (द्वया-श्रममहाकाव्य)
नयचंद सूरि— *हम्मीर काव्य*
जयानक— *पृथ्वीराज विजय*
वाक्यपति राज— *गौडवहो*
संध्याकर नन्दी— *रामपाल चरित*।

कथा साहित्य

गुणाढ्य— प्रसिद्ध रचना '**वृहत्कथा**' (पैशाची भाषा), सातवाहन नरेश हाल (प्रथम-द्वितीय शती) का दरबारी कवि।
क्षेमेन्द्र— *वृहत्कथामंजरी*।
सोमदेव— *कथासरित्सागर*।
विष्णुशर्मा— *पंचतंत्र* (संकलन)
नारायण भट्ट— *हितोपदेश* (संस्कृत शिक्षण का प्रथम ग्रंथ)
अमर सिंह— *अमरकोश* (शब्दकोश)।

गुप्तकालीन व्यापार के सन्दर्भ में कुछ स्मरणीय तथ्य

नारद स्मृति व बृहस्पति स्मृति	इनमें क्रेताओं व विक्रेताओं के हितों की रक्षा हेतु नियम दिए गए हैं।
वृहत संहिता	इससे ज्ञात होता है कि उस समय बीस प्रकार के आभूषण बनते थे।
चरक संहिता	इसमें स्वर्ण, चांदी, सीसे, तांबे और कांसे से निर्मित औजारों का विवरण दिया गया है।
रेशम	भारत के बनारस नगर में उत्पादित किया जाता था तथा चीन से भी आयात किया जाता था और वह रोम भेजा जाता था।
मदुरा	सूती वस्त्र उत्पादन के लिए विख्यात था।
रोम	ईसा की प्रारंभिक सदियों में भारतीय सामान के निर्यात का प्रमुख केन्द्र था, परन्तु गुप्त-काल में रोम प्रमुख केन्द्र नहीं रहा था।
चांदी के सिक्के	गुप्त शासकों में चन्द्रगुप्त द्वितीय ने सर्वप्रथम चांदी के सिक्के चलाये थे।
भड़ौंच	पश्चिमी एशिया व यूरोपीय देशों से व्यापार भड़ौंच बन्दरगाह से ही होता था।
ताम्रलिप्ति	दक्षिण-पूर्वी एशिया का सामान यहीं उतरता था और भारत यहीं से भेजता था।
फाह्यान	यह चीनी यात्री था जो चन्द्रगुप्त द्वितीय के काल में भारत आया था।
स्वर्ण मुद्रा	सर्वाधिक गुप्त शासकों के शासन-काल में प्रचलित हुई। कलात्मक सिक्कों का प्रचलन गुप्त काल में ही हुआ।
समुद्री-व्यापार	इस व्यापार में दक्षिण भारत उत्तरी भारत की अपेक्षा अधिक विकसित था।
प्रकाश-स्तंभ	(Sea-Towers) का उल्लेख गुप्तकालीन साहित्य में उपलब्ध है।
जलयान	प्लिनी के अनुसार भारतीय 75 टन का जलयान बना लेते थे। इसके अलावा गुप्तकालीन साहित्य बताता है कि उस काल में जहाजों में 300 से 700 यात्री तक यात्रा कर सकते थे।
भारुकच्छ	गुप्तकाल में भड़ौंच का ही नाम था।
सार्थवाह	डॉ० मोतीचन्द द्वारा लिखित पुस्तक जो गुप्तकालीन थल-मार्गों पर प्रकाश डालती है।
भोज-पत्र	कागज के अभाव में गुप्त-काल में लिखत-पढ़त भोज-पत्रों पर ही होती थी।
जम्बूद्वीप-प्रदीप	यह वह ग्रन्थ है जिसमें गुप्त-कालीन 18 व्यवसाय उल्लिखित हैं।
सांगात्रिक	यह सार्थ शब्द का पर्याय है जिसका अर्थ है थल मार्ग से जाने वाला व्यापारिक काफिला।
चावल	सुगन्धित चावल के लिए मगध विख्यात था।
केसर	काश्मीर में उत्पन्न होती थी।

गुप्तकाल में पुत्रों के प्रकार

औरस	वैध पुत्र।
दत्तक	दूसरे परिवार से गोद लिया गया पुत्र।
उपागत	स्वयं से उत्पन्न नहीं, पर दूसरे के लड़के को अपना पुत्रवत समझना तथा लड़का उस व्यक्ति को पिता समझे।
कृतक	बिना धार्मिक क्रिया-काण्ड के सम्पन्न किये ही किसी अन्य के लड़के को अपना पुत्र बना लेना।
क्षेत्रज	उस स्त्री से उत्पन्न पुत्र जिसको पुत्र प्राप्ति के लिए दूसरे पुरुष के पास रखा गया हो।
गुधज	वह पुत्र जो किसी स्त्री ने अपने पति से बिना संसर्ग किये पर पुरुष के संसर्ग से उत्पन्न किया हो।
करिन	कन्या से उत्पन्न पुत्र।
सहोध	शादी से पूर्व ही गर्भधारण करके जिसको जन्म दिया हो।
पुनर्भव	पुनर्विवाहित स्त्री से उत्पन्न पुत्र।
कृत	खरीदा हुआ लड़का जिसे अपना पुत्र बना लिया हो।

गुप्तकालीन साहित्यकार व नाटककार

नाम	रचनाएं
कालिदास (नाट्यकार)	अभिज्ञानशाकुन्तलम्, मालविकाग्निमित्रम्, विक्रमोवंशीयम्, मेघदूतम्, ऋतुसंहार, कुमारसंभवम्, रघुवंशम् (संस्कृत में)
विशाखदत्त	मुद्राराक्षस और देवीचन्द्रगुप्तम् (नाटक)
भारवि	किरातार्जुनियम
शूद्रक	मृच्छकटिकम्
हरिषेण	इलाहाबाद प्रशस्ति का लेखक
विष्णु शर्मा	पंचतंत्र
आर्यभट्ट	आर्यभट्टीय, सूर्य सिद्धांत
वराहमिहिर	पंच सिद्धान्तिक, वृहत्संहिता, वृहजातक, लघुजातक
वाग्भट्ट	अष्टांग हृदय

उत्तर गुप्तकालीन विशेष शब्दावली

ब्रह्मदेय	यह एक गांव की श्रेणी थी जिसकी भूमि ब्राह्मण या ब्राह्मणों के अधीन होती थी।
अग्रहार	यह भी एक ग्रामों की श्रेणी थी जिसके निवासी ब्राह्मण होते थे और वे कर-मुक्त होते थे।
देवदान	इस श्रेणी के गांवों का राजस्व देवालयों में जाता था।
एरीहट्टी	यह एक भूमि पट्टा होता था जो राजा दान में दी भूमि के लिए जारी करता था।
भुक्ति	उस समय प्रांत को कहा जाता था।
इरिण	बंजर जमीन का नाम था।
ग्रामपट्टक	वह व्यक्ति होता था जो सारे गांव का राजस्व जमा करता था।
प्रस्था	यह कर की वह राशि होती थी जो ग्रामवासियों द्वारा अधिकारियों को दी जाती थी।
उदरंग	यह वह कर था जो स्थायी कृषकों से लिया जाता था।
हिरण्य	यह खानों के खोदने पर लिया जाता था।
हल-दण्ड	यह हलों पर लगाया जाने वाला कर था।
खुसरो शाह II	यह फारस का शाह था। इसके दरबार में पुलकेशी ने 625 ई. में अपना राजदूत भेजा था। अजन्ता के एक चित्र में इसे प्रदर्शित किया गया है।
ईशानवर्मन	यह मौखरी नरेश था जिसने अपने को महाराजाधिराज के विरुद से अलंकृत किया।
मैत्रक	मैत्रक, गुप्तों के अधीनस्थ थे जिन्होंने गुप्त साम्राज्य के विनाश पर सौराष्ट्र राज्य स्थापित किया और वल्लभी को राजधानी बनाया।
पुष्यभूति	बाणभट्ट के अनुसार वर्धन-वंश का आदि-पुरुष।
पुलकेशिन II	यह चालुक्य वंशीय नरेश था। उसने वातापी (कर्नाटक) को राजधानी बनाया।
अर्धिक	वह जाति जिसके लोग फसल काटने का काम करते थे।
मेलबार	मंदिरों को राज्य द्वारा प्रदत्त गांवों से प्राप्त होने वाली आय।
वार्ता	कृषि, पशुपालन तथा वाणिज्य का संयुक्त नाम।
ह्वेनसांग	चीनी यात्री जो हर्ष के शासनकाल में भारत आया था।
सम्राट हर्ष	रत्नावली, नागानंद तथा प्रियदर्शिका का लेखक व थानेश्वर का प्रतापी शासक।

चोल शासन : शब्दावलियां

औलेकेनायम	प्रधान सचिव
तरुनन्दनम्	एक प्रधान कर्मचारी
विडैयाधिकारिन	कार्य प्रेषक
नगरट्टार	व्यापारिक संघ की सभा (नगरम)
उर	सामान्य गांव की सभा
सभा	ब्रह्मदेय गॉवों की सभा
अग्रहारा	ब्राह्मणों का ग्राम
वारियप्पेरुमक्कल	समिति के सदस्य
वेट्टि	श्रमिकों से बेगार रूप में लिया गया कर
काशु	सोने के सिक्के
कडगम या पडैविडु	सैनिक छावनी
परैया	अछूत
नानादेशि	व्यापारियों की संस्था

गुप्तकालीन व्यापार के सन्दर्भ में कुछ स्मरणीय तथ्य

नारद स्मृति व बृहस्पति स्मृति	इनमें क्रेताओं व विक्रेताओं के हितों की रक्षा हेतु नियम दिए गए हैं।
वृहत संहिता	इससे ज्ञात होता है कि उस समय बीस प्रकार के आभूषण बनते थे।
चरक संहिता	इसमें स्वर्ण, चांदी, सीसे, तांबे और कांसे से निर्मित औजारों का विवरण दिया गया है।
रेशम	भारत के बनारस नगर में उत्पादित किया जाता था तथा चीन से भी आयात किया जाता था और वह रोम भेजा जाता था।
मदुरा	सूती वस्त्र उत्पादन के लिए विख्यात था।
रोम	ईसा की प्रारंभिक सदियों में भारतीय सामान के निर्यात का प्रमुख केन्द्र था, परन्तु गुप्त-काल में रोम प्रमुख केन्द्र नहीं रहा था।
चांदी के सिक्के	गुप्त शासकों में चन्द्रगुप्त द्वितीय ने सर्वप्रथम चांदी के सिक्के चलाये थे।
भड़ौंच	पश्चिमी एशिया व यूरोपीय देशों से व्यापार भड़ौंच बन्दरगाह से ही होता था।
ताम्रलिप्ति	दक्षिण-पूर्वी एशिया का सामान यहीं उतरता था और भारत यहीं से भेजता था।
फाह्यान	यह चीनी यात्री था जो चन्द्रगुप्त द्वितीय के काल में भारत आया था।
स्वर्ण मुद्रा	सर्वाधिक गुप्त शासकों के शासन-काल में प्रचलित हुई। कलात्मक सिक्कों का प्रचलन गुप्त काल में ही हुआ।
समुद्री-व्यापार	इस व्यापार में दक्षिण भारत उत्तरी भारत की अपेक्षा अधिक विकसित था।
प्रकाश-स्तंभ	(Sea-Towers) का उल्लेख गुप्तकालीन साहित्य में उपलब्ध है।
जलयान	प्लिनी के अनुसार भारतीय 75 टन का जलयान बना लेते थे। इसके अलावा गुप्तकालीन साहित्य बताता है कि उस काल में जहाजों में 300 से 700 यात्री तक यात्रा कर सकते थे।
भारुकच्छ	गुप्तकाल में भड़ौंच का ही नाम था।
सार्थवाह	डॉ० मोतीचन्द द्वारा लिखित पुस्तक जो गुप्तकालीन थल-मार्गों पर प्रकाश डालती है।
भोज-पत्र	कागज के अभाव में गुप्त-काल में लिखत-पढ़त भोज-पत्रों पर ही होती थी।
जम्बूद्वीप-प्रदीप	यह वह ग्रन्थ है जिसमें गुप्त-कालीन 18 व्यवसाय उल्लिखित हैं।
सांगात्रिक	यह सार्थ शब्द का पर्याय है जिसका अर्थ है थल मार्ग से जाने वाला व्यापारिक काफिला।
चावल	सुगन्धित चावल के लिए मगध विख्यात था।
केसर	काश्मीर में उत्पन्न होती थी।

गुप्तकाल में पुत्रों के प्रकार

औरस	वैध पुत्र।
दत्तक	दूसरे परिवार से गोद लिया गया पुत्र।
उपागत	स्वयं से उत्पन्न नहीं, पर दूसरे के लड़के को अपना पुत्रवत समझना तथा लड़का उस व्यक्ति को पिता समझे।
कृतक	बिना धार्मिक क्रिया-काण्ड के सम्पन्न किये ही किसी अन्य के लड़के को अपना पुत्र बना लेना।
क्षेत्रज	उस स्त्री से उत्पन्न पुत्र जिसको पुत्र प्राप्ति के लिए दूसरे पुरुष के पास रखा गया हो।
गुधज	वह पुत्र जो किसी स्त्री ने अपने पति से बिना संसर्ग किये पर पुरुष के संसर्ग से उत्पन्न किया हो।
करिन	कन्या से उत्पन्न पुत्र।
सहोध	शादी से पूर्व ही गर्भधारण करके जिसको जन्म दिया हो।
पुनर्भव	पुनर्विवाहित स्त्री से उत्पन्न पुत्र।
कृत	खरीदा हुआ लड़का जिसे अपना पुत्र बना लिया हो।

गुप्तकालीन साहित्यकार व नाटककार

नाम	रचनाएं
कालिदास (नाट्यकार)	अभिज्ञानशाकुन्तलम्, मालविकाग्निमित्रम्, विक्रमोवंशीयम्, मेघदूतम्, ऋतुसंहार, कुमारसंभवम्, रघुवंशम् (संस्कृत में)
विशाखदत्त	मुद्राराक्षस और देवीचन्द्रगुप्तम् (नाटक)
भारवि	किरातार्जुनियम
शूद्रक	मृच्छकटिकम्.
हरिषेण	इलाहाबाद प्रशस्ति का लेखक
विष्णु शर्मा	पंचतंत्र
आर्यभट्ट	आर्यभट्टीय, सूर्य सिद्धांत
वराहमिहिर	पंच सिद्धान्तिक, वृहत्संहिता, वृहजातक, लघुजातक
वाग्भट्ट	अष्टांग हृदय

उत्तर गुप्तकालीन विशेष शब्दावली

ब्रह्मदेय	यह एक गांव की श्रेणी थी जिसकी भूमि ब्राह्मण या ब्राह्मणों के अधीन होती थी।
अग्रहार	यह भी एक ग्रामों की श्रेणी थी जिसके निवासी ब्राह्मण होते थे और वे कर-मुक्त होते थे।
देवदान	इस श्रेणी के गांवों का राजस्व देवालयों में जाता था।
एरीहट्टी	यह एक भूमि पट्टा होता था जो राजा दान में दी भूमि के लिए जारी करता था।
भुक्ति	उस समय प्रांत को कहा जाता था।
इरिण	बंजर जमीन का नाम था।
ग्रामपट्टक	वह व्यक्ति होता था जो सारे गांव का राजस्व जमा करता था।
प्रस्था	यह कर की वह राशि होती थी जो ग्रामवासियों द्वारा अधिकारियों को दी जाती थी।
उदरंग	यह वह कर था जो स्थायी कृषकों से लिया जाता था।
हिरण्य	यह खानों के खोदने पर लिया जाता था।
हल-दण्ड	यह हलों पर लगाया जाने वाला कर था।
खुसरो शाह II	यह फारस का शाह था। इसके दरबार में पुलकेशी ने 625 ई. में अपना राजदूत भेजा था। अजन्ता के एक चित्र में इसे प्रदर्शित किया गया है।
ईशानवर्मन	यह मौखरी नरेश था जिसने अपने को महाराजाधिराज के विरुद से अलंकृत किया।
मैत्रक	मैत्रक, गुप्तों के अधीनस्थ थे जिन्होंने गुप्त साम्राज्य के विनाश पर सौराष्ट्र राज्य स्थापित किया और वल्लभी को राजधानी बनाया।
पुष्यभूति	बाणभट्ट के अनुसार वर्धन-वंश का आदि-पुरुष।
पुलकेशिन II	यह चालुक्य वंशीय नरेश था। उसने वातापी (कर्नाटक) को राजधानी बनाया।
अर्धिक	वह जाति जिसके लोग फसल काटने का काम करते थे।
मेलबार	मंदिरों को राज्य द्वारा प्रदत्त गांवों से प्राप्त होने वाली आय।
वार्ता	कृषि, पशुपालन तथा वाणिज्य का संयुक्त नाम।
ह्वेनसांग	चीनी यात्री जो हर्ष के शासनकाल में भारत आया था।
सम्राट हर्ष	रत्नावली, नागानंद तथा प्रियदर्शिका का लेखक व थानेश्वर का प्रतापी शासक।

चोल शासन : शब्दावलियां

औलेकेनायम	प्रधान सचिव
तरुनन्दनम्	एक प्रधान कर्मचारी
विडैयाधिकारिन	कार्य प्रेषक
नगरट्टार	व्यापारिक संघ की सभा (नगरम)
उर	सामान्य गांव की सभा
सभा	ब्रह्मदेय गॉवों की सभा
अग्रहारा	ब्राह्मणों का ग्राम
वारियप्पेरुमक्कल	समिति के सदस्य
वेट्टि	श्रमिकों से बेगार रूप में लिया गया कर
काशु	सोने के सिक्के
कडगम या पडैविडु	सैनिक छावनी
परैया	अछूत
नानादेशि	व्यापारियों की संस्था

चोल वंश के प्रमुख नरेश

शासक	शासन-काल	राजधानी	उपलब्धियाँ
1. **विजयालय**	846-871	तंजौर	तंजौर को विजित कर राजधानी बनाई दुर्गामाता (निशुंभसूदिनी) का मन्दिर बनवाया। 'नरकेसरी' की उपाधि धारण की।
2. **आदित्य प्रथम**	871-907	तंजौर	पल्लव नरेश अपराजित को **तोंडईमडम** के युद्ध में परास्त किया। कावेरी नदी के दोनों तटों पर शिव मन्दिर बनवाये। पल्लव नरेशों को प्रसन्न किया।
3. **परान्तक प्रथम**	907-955	तंजौर	पिता की मृत्यु के स्थान पर मन्दिर बनवाया। पाण्ड्य नरेश को परास्त कर **मदुराईकोंड** की उपाधि धारण की। दक्षिण में कन्याकुमारी तक राज्य विस्तृत किया। वीर चोलु की उपाधि धारण की।
4. **गंदरादित्य**	955-957	तंजौर	नरेश व उसकी रानी धार्मिक प्रवृत्ति की थी।
5. **अरिंजय**			
6. **सुन्दर चोल**	957-973	तंजौर	वीर पाण्ड्य को दो बार परास्त किया। लंका पर आक्रमण किया।
7. **उत्तम चोल**	973-985	तंजौर	राष्ट्रकूट नरेशों से मनमुटाव, पाण्ड्य नरेशों के विरुद्ध दो सैनिक अभियान।
8. **राजराज प्रथम**	985-1014	पोलन्नरुव	केरल नरेश का दर्प चूर्ण किया। लंका नरेश महिन्द्र पंचम को परास्त किया। तंजौर में शिव मंदिर (राजराजेश्वर) बनाया।
9. **राजेन्द्र प्रथम**	1014-1044	गंगईकोण्ड चोलपुरम्	लंका के अभियान को पूर्ण कर वहाँ के राजा महिन्द्र को बन्दी बनया। पाण्ड्य व केरल राज्यों में अपने प्रतिनिधि भेजे। **गंगईकोण्ड** की उपाधि धारण की।
10. **राजाधिराज प्रथम**	1044-1054		चालुक्य सेना को दन्नड पर परास्त किया। विजयादित्य को युद्ध भूमि से भागने को विवश किया। कम्पिली नगर के चालुक्य प्रसाद को धराशायी कर दिया।
11. **राजेन्द्र द्वितीय**	1054-1062		चालुक्य सेना को करारी हार दी। रानियाँ बन्दी बना ली गई। चामुण्डराज व शक्तिवर्मन को युद्ध में समाप्त किया।
12. **वीर राजेन्द्र**	1063-1070		1066 में सोमेश्वर को परास्त किया, कूडलसंगमय स्थान पर चालुक्य सेना को पुनः परास्त किया।
13. **कुलोत्तुंग प्रथम**	1070-1120		विक्रमादित्य को परास्त किया। गंगवाड़ी पर अधिकार किया। सोमेश्वर को परास्त कर उसे राज-पद से वंचित किया।
14. **विक्रम चोल**	1118-1135		राज्य में शान्ति रखी व चिदम्बरम् रंगनाथ का देवालय बनवाया।
15. **कुलोत्तुंग-II**	1133-1150		चिदम्बरम् देवालय का विस्तार करवाया।
16. **राजराज-II**	1150-1173		
17. **राजाधिराज-II**	1173-1182		पाण्ड्य नरेश चोल प्रभुत्व से स्वतन्त्र हो गये।
18. **कुलोत्तुंग तृतीय**	1182		इस वंश का अन्तिम शासक। 1205 में तीसरी बार पाण्ड्य राज्य पर आक्रमण किया।

चोल शासन : विविध शब्दावली

सन्धि-विग्रही	प्रशिक्षित कूटनीतिज्ञ अधिकारी
ओलई	प्रधान न्यायालय
उडन कुट्टम	प्रमुख विभागों के प्रतिनिधि अधिकारी
पेरुन्दनम्	उच्च अधिकारियों का वर्ग
शिरुदनम्	निम्न श्रेणी के अधिकारियों का वर्ग
वलनाडु	मण्डलम या प्रान्त
नाट्टर	यह जिले की सभा होती थी।
नगस्तर	यह एक समिति होती थी जो नगरों में गठित की जाती थी।
नाडु	जिला
युग	व्यवसायियों द्वारा निर्मित समिति या श्रेणी
परच्चेरी	वह भूमि जिस पर निम्न वर्ण के लोग झोपड़ी बनाकर रहते थे।
कमाणचेरी	शिल्पकारों के भवन
शुडुगाड	शमशान घाट
पथकर	अन्तर्राज्यीय कर
पेशावर	किसी विशेष पेशा करने वालों से वसूल किया जाने वाला कर
बारियम प्रणाली	समिति प्रणाली जिसमें सदस्यों की न्यूनतम आयु 35 वर्ष होती थी।
पाडिकाबलकूली	सुरक्षा कर

भारत में प्रचलित संवत्

संवत्	विवरण
बुद्ध संवत्	श्री लंका की गणना के अनुसार बुद्ध संवत् 544 ई० पू० प्रारंभ हुआ। बुद्ध के निर्वाण की वास्तविक तिथि 483 ई० पू० है जबकि कैन्टन परम्परा के अनुसार यह तिथि 486 है।
महावीर संवत्	महावीर स्वामी द्वारा 527 ई० पू० में आरंभ इस संवत् का प्रयोग प्रायः '**जैन-सभा**' से सम्बन्धित गणनाओं में किया गया है।
कलिंग संवत्	यह काल्पनिक गणना पर अधारित है। इसे पांचवीं सदी में आर्यभट्ट ने प्रामाणिक स्वरूप प्रदान करके ज्योतिष सम्बन्धी ग्रन्थों में प्रयुक्त करते हुए 18 फरवरी, 3102 ई० पू० से इसका प्रारंभ माना, जिसे सामान्यतः '**महाभारत-युद्ध**' का समय माना जाता है। ग्रामण (द० अर्काट) से प्राप्त एक चोल अभिलेख पर अंकित कलि हर्ष 4044 या 14, 77, 037 कलि दिन की संगति शनिवार 14 जनवरी, 943 ई० के साथ स्थापित होती है। इस संवत् का प्रयोग दक्षिण भारत में अब भी पंचांग बनाने में किया जाता है।
सप्तर्षि संवत्	इसे लौकिक संवत् भी कहा गया है। इसका आरंभ 25 कलि वर्ष (3076 ई० पू०) के उपरान्त से माना जाता है। अलबरूनी के समय (11वीं सदी) यह कश्मीर और इसके पड़ोसी क्षेत्रों में प्रचलित था।
शक संवत्	कुषाण वंश में सर्वाधिक विख्यात राजा कनिष्क द्वारा 78 ई० में प्रारंभ किया गया था। भारत सरकार भी इस संवत् का प्रयोग करती है। दक्षिण भारत में यह अति लोकप्रिय है और वहाँ यह **शालिवाहन शकब्द** के नाम से जाना जाता है।
विक्रम संवत्	यह 58 ई० पू० आरंभ हुआ तथा कहा जाता है कि राजा विक्रमादित्य ने उज्जैयिनी में शकों पर विजय प्राप्त करने के उपलक्ष्य में इसे आरंभ किया था।
कल्चुरी संवत्	248 ई० से प्रचलित यह संवत सर्वप्रथम आभीरों के मध्य प्रयुक्त हुआ। इसके उपरान्त चेदि या कल्चुरियों द्वारा प्रयुक्त होने पर उन्हीं के नाम पर इस संवत् को जाना जाने लगा।
गुप्त संवत्	गुप्त संवत् (319-320 ई०) के आरंभ में संभवतः गुप्त वंशीय शासक चन्द्रगुप्त प्रथम द्वारा चलाया गया था।

राजपूतों की उत्पत्ति

यह शब्द **राजपुत्र** का अपभ्रंश है। पश्चात्कालीन ग्रंथों में राजपूतों की 36 शाखाओं का उल्लेख मिलता है, जिनमें से **गुर्जर-प्रतिहार** (परिहार), **चौहान** (चाहमान), **सोलंकी** (चालुक्य), **परमार, चन्देल, तोमर, कलचुरि, गहड़वाल** (गाहड्वाल, गहरवार या राठौर), **राष्ट्रकूट** और **गुहिलोत** (सिसोदिया) सर्वाधिक उल्लेखनीय है। राजपूत (राजपुत्र) शब्द का प्रयोग सातवीं शताब्दी के उपरान्त ही प्रचलित हुआ। जनश्रुतियों के अनुसार राजपूत उन **सूर्यवंशी** एवं **चन्द्रवंशी** (सोमवंशी) क्षत्रियों के वंशज हैं, जिनकी यशोगाथा रामायण और महाभारत में वर्णित है।

(800-1200 ई.) विभिन्न विषयों का साहित्य

विषय	रचनाकार	ग्रन्थ	रचनाकार	ग्रन्थ
राजनीति	सोमदेव	नीति वाक्यामृत	हेमचन्द्र	लघु अर्हन्ननीति
आयुर्वेद	वाग्भट्ट	अष्टांगसग्रन्थ	वृन्द	सिद्धियोग
व्याकरण	साकतायन	साकतायन व्याकरण	हेमचन्द्र	हैम व्याकरण
ज्योतिष शास्त्र	भट्टोतपल	वराहमिहिर की कृति होराशास्त्र पर टीका	श्रीपति	रत्नमाला
कानून	मेघातिथि	मनुस्मृति पर टीका	हेमाद्रि	चतुर्वर्ग चिंतामणि

800 ई० से 1200 ई० तक के अन्तराल में उत्तरी भारत में स्थापित राजवंश

वंश	संस्थापक	राजधानी	प्रमुख नरेश	शासन-काल
गहड़वाल	चन्द्रदेव	वाराणसी	गोविन्द चन्द्र	
		कन्नौज	विजय चन्द्र	
			जयचन्द	1170–1194
चौहान वंश	वासुदेव	अजमेर	विग्रहराज द्वितीय	
			अभयराज	
			अर्णोराज	1133
			विग्रहराज चतुर्थ	1153–63
			पृथ्वीराज तृतीय	1178–1192
सोलंकी	मूलराज	अन्हिलवाड़ा	भीम	995 में मृत्यु
			जयसिंह सिद्धराज	1096–1143
चंदेल वंश	नन्नुक	खजुराहो	धंगदेव	950–1007
			गण्ड देव	
			परमार्दी	1162–1202
कलचुरी	कोकल्ल	त्रिपुरी	लक्ष्मणराज	
परमार	उपेन्द्र	धार	मुंज	974–975
	कृष्णराज	उज्जैन	भोज	1018–1060
			उदयादित्य	1060–1088
लोहर	अवन्ति वर्मन	कश्मीर	गोपाल वर्मन	900 के लगभग

भारत के प्रमुख राज्य/संस्थापक/राजधानियाँ

शासक वंश	संस्थापक	राजधानी
हर्यंक वंश	बिम्बिसार	राजगृह, पाटलिपुत्र
शिशुनाग	शिशुनाग	राजगृह
नंद	महापद्म नंद	पाटलिपुत्र
मौर्य	चंद्रगुप्त मौर्य	पाटलिपुत्र
शुंग	पुष्यमित्र शुंग	पाटलिपुत्र
कण्व	वसुदेव	पाटलिपुत्र
कुषाण	कडफिसस	पुरुषपुर या पेशावर
गुप्त	श्रीगुप्त	पाटलिपुत्र
हूण	तोरमाण	शाकल या स्थालकोट
पुष्यभूति	नरवर्द्धन	थानेश्वर, कन्नौज
पल्लव	सिंहवर्मन चतुर्थ	कांची
चालुक्य (वातापी)	जयसिंह	वातापी या बादामी
चालुक्य (कल्याणी)	तैलपद्वितीय	मान्यखेत/ कल्याणी
चालुक्य (वेंगी)	विष्णुवर्द्धन	वेंगी
राष्ट्रकूट	दन्तिदुर्ग	मान्यखेत
पाल	गोपाल	मुंगेर
गुर्जर प्रतिहार	हरिश्चन्द्र	गुजरात/कन्नौज
सेन	सामंत सेन	राढ़ (बंगाल)
गाहड़वाल	चंद्रदेव	कन्नौज
चौहान	वासुदेव	अजमेर
चंदेल	नन्नुक	खजुराहो
गंग	वज्रहस्त (पंचम)	पुरी
परमार	उपेन्द्र या कृष्णराज	धारा, उज्जैन
सोलंकी	मूलराज प्रथम	अन्हिलवाड़
कल्चुरी	कोकल्ल	त्रिपुरी
चोल (परवर्ती)	विजयालय	तंजावूर

प्राचीन भारत की ऐतिहासिक पुस्तकें

पुस्तक	लेखक	पुस्तक	लेखक
पंचतंत्र	पं० विष्णु शर्मा	**गीत गोविन्द चंद्रालोक**	जयदेव
हितोपदेश	नारायण भट्ट	**हर्षचरित, कादम्बरी**	बाणभट्ट
वृहत्कथा	गुणाढ्य	**नागानन्द, प्रियदर्शिका, रत्नावली**	हर्षवर्द्धन
वृहत्तकथा श्लोक संग्रह	बुधस्वामी		
वृहत्तकथा मंजरी, रामायण मंजरी, महाभारत मंजरी, दशावतारचरित, समयमात्रक (वेश्याजीवन)	क्षेमेन्द्र	**कर्पूरमंजरी, काव्यमीमांसा, भुवनकोश, बाल रामायण, प्रबंधकोष विद्धशालभंजिका, प्रचंड पांडव, बाल महाभारत**	राजशेखर
कथासरित्सागर	सोमदेव भट्ट	**प्रबंध चिंतामणि, भोज चरित**	मेरूतुंग
वृहत्संहिता	वाराहमिहिर		
अमरकोश	अमर सिंह	**नैषधीयचरित, खंडनखंड खाद्य**	श्रीहर्ष
नीतिसार	कामंदक	**नेचुरल हिस्ट्री**	प्लिनी
कुरल या तिरक्कुल	तिरवल्लुवर	**वृहत्कथा कोश**	हरिषेण
कुट्टनीमतम्	दामोदर गुप्त	**किरातार्जुनीयम**	भारवि
वासवदत्ता (नाल्यधारा)	सुबन्धु	**कुमारसंभव, रघुवंश** (महाकाव्य), **ऋतुसंहार** (खण्डकाव्य), **मेघदूत** (गीतिकाव्य) **मालविकाग्निमित्र विक्रमोर्वशीय, अभिज्ञानशाकुंतलम्** (नाटक)	कालिदास (शैव)
मालती माधव उत्तर रामचरित, महावीर चरित	भवभूति		
मुद्राराक्षस, देवीचंद्रगुप्तम्, सुभाषितावली,	विशाखदत्त		
दशकुमार चरित, अवन्ति सुन्दरी कथा, काव्यादर्श	दाण्डी	**भट्टि काव्य** (रावण वध)	भट्टि कवि
		गौडवहो (गौड़वध)	वाग्पतिराज
शिशुपाल वध	माघ	**नवसहसांकचरित**	परिमल पद्मगुप्त
शुक्रनीति सार	माघ	**विक्रमांकदेवचरित, कर्णसुंदरी नाटिका, चौर पंचशिका**	बिल्हण
संगीत रत्नाकर	सारंगदेव		
रास पंचाध्यायी	नन्ददास		
संगीत राज	महाराणा कुंभा	**राजतरंगिणी** (कश्मीर का इतिहास)	कल्हण
प्रेमवाटिका	रसखान		
सेतुबंध	प्रवरसेन-II (वाकाटक)	**नीतिशतक, श्रृंगार शतक वैराग्य शतक**	भर्तृहरि
स्वप्नवासवदत्तम् (पहला संपूर्ण नाटक)	भास	**अमरूक शतक**	अमरुक कवि
		आर्यासप्तशती	गोवर्धनाचार्य
महाभाष्य	पतंजलि	**तिलकमंजरी**	धनपाल
चरक संहिता (कुषाण युग)	चरक	**भागवत चंपू**	अभिनव कालिदास
सुश्रुत संहिता	सुश्रुत	**काव्यालंकार**	भामह
गाथा सप्तशती (प्राकृत)	हाल	**काव्यालंकार सार संग्रह, भामह विवरण, कुमार संभव**	उद्भट
नाट्यशस्त्र	भरत		
कामसूत्र	वात्स्यायन	**काव्यालंकार सूत्र**	वामन
मिलिन्दपन्हो	नागसेन	**काव्यालंकार**	रूद्रट
बुद्धचरित, सौन्दरानंद	अश्वघोष	**ध्वन्यालोक**	आनन्दवर्धन
सारिपुत्र प्रकरण, सूत्रालंकार, महायान श्रद्धोतपद		**वक्रोक्तिजीवितम्**	आचार्य कुंतक
		सरस्वतीकाण्ठाभरण, श्रृंगार प्रकाश	भोजराज
शतसहस्त्रिका, प्रज्ञापारमिता, माध्यमिका सूत्र कारिका	नागार्जुन	**काव्य प्रकाश**	मम्मट
		औचित्य विचार चर्चा	आचार्यक्षेमेन्द्र
		काव्यानुशासन	हेमचन्द्र
दायभाग	जीमूत वाहन	**कुवलयानंद**	अप्पयदीक्षित
मिताक्षरा	विज्ञानेश्वर	**वाग्भट्टालंकार**	वाग्भट्ट
दान सागर, अद्भुत सागर	बल्लालसेन	**पृथ्वीराज रासो**	चंदवरदायी

दिल्ली सल्तनत के प्रमुख सुल्तान : एक नजर

सुल्तान	शासनकाल	राजवंश	उपलब्धियाँ
कुतुबुद्दीन ऐबक	1206-1210	गुलाम वंश	गुलाम वंश का संस्थापक, कुतुबमीनार का निर्माण प्रारंभ कराना, अजमेर में ढाई दिन का झोंपड़ा बनवाया।
इल्तुतमिश	1210-1236	गुलाम वंश	गुलाम वंश का वास्तविक प्रथम सुल्तान, उसने लाहौर के बजाय दिल्ली को राजधानी बनाई, इक्ता प्रणाली का प्रचलन किया, टका व जीतल सिक्के चलाये, कुतुबमीनार का निर्माण सम्पूर्ण कराया, 40 गुलामों के दल की स्थापना की, चंगेज खां के आक्रमण से देश को बचाया।
सुल्ताना रजिया	1236-1240	गुलाम वंश	प्रथम महिला सुल्तान, इल्तुतमिश द्वारा सुल्तान घोषित, अल्तुनिया सहित मौत के घाट उतार दी गई, अन्तिम गुलाम सुल्ताना।
नासिरुद्दीन महमूद	1246-1266	गुलाम वंश	बलबन की सहायता से 20 वर्ष शासन किया तथा मंगोलों के आक्रमणों से राज्य को बचाया।
बलबन	1266-1286	गुलाम वंश	रक्त और लौह की नीति अपना कर विद्रोहियों का दमन किया। मंगोलों के आक्रमणों से राज्य को बचाये रखा। सवार-ए-कल्ब में वृद्धि कर सेना का पुनर्गठन किया।
अलाउद्दीन खिलजी	1296-1316	खिलजी वंश	खिलजी वंश का दूसरा पर सर्वशक्तिशाली सुल्तान, दक्षिण भारत को विजित करने वाला प्रथम मुस्लिम सुल्तान, भूमि की नाप कराने वाला प्रथम सुल्तान, आर्थिक सुधार करके स्थायी सेना का संगठन करने वाला प्रथम तुर्की सुल्तान।
मुहम्मद बिन तुगलक	1325-1351	तुगलक वंश	सुल्तानों में सर्वोच्च विद्वान, अर्थशास्त्री, स्वर्ण भण्डार समाप्त होने पर तांबे के सिक्के चलाये, राजधानी साम्राज्य के मध्य में सुरक्षित स्थान पर होनी चाहिए इसको क्रियान्वयन करने वाला, सम्पूर्ण साम्राज्य में समान राजस्व व्यवस्था लागू की, किसानों को तकावी व ऋण प्रदान किये।
फिरोज तुगलक	1351-1388	तुगलक वंश	उदार होने के साथ-साथ कट्टर धार्मिक था। इस कारण मुसलमानों के हित में कार्य अधिक किये— 1. राजकीय पदों को पैतृक बना दिया। 2. कई कृषि कर समाप्त कर दिए। 3. केवल चार कर रखे जो हिन्दुओं को देने पड़ते थे। 4. दास प्रथा व जागीर-प्रथा पुनः प्रचलित कर दी। 5. कृषि की उन्नति के लिए नहरें निकलवाई। 6. कई नगर बसाये।
खिज्र खाँ	1414-1421	सैयद वंश	सैयद वंश का संस्थापक था, परन्तु उसने शाह की उपाधि धारण नहीं की।
बहलोल लोदी	1451-1489	लोदी वंश	लोदी वंश का संस्थापक। अफगानों के प्रति सदैव उदार रहा तथा समानता का व्यवहार किया। जौनपुर के महमूद शाह शर्की का दमन किया।
सिकन्दर लोदी	1489-1517	लोदी वंश	लोदी वंश का सबसे प्रतापी सुल्तान। सख्ती में अमीरों व डाकुओं को दबाकर राज्य में शान्ति स्थापित की। आवश्यक वस्तुओं के दाम कम करा दिए।
इब्राहिम लोदी	1517-1526	लोदी वंश	लोदी वंश का अन्तिम व दिल्ली सल्तनत का भी अन्तिम सुल्तान, जिद्दी व अहंकारी होने के कारण अफगानों को मिला कर नहीं रख सका। इसी कारण 21 अप्रैल, 1526 को बाबर से परास्त हो वह अपना साम्राज्य खो बैठा।

सल्तनतकालीन स्थापत्य

	इमारतें	संस्थापक
1.	कुव्वातुल इस्लाम मस्जिद, मेहरौली (दिल्ली) (सल्तनत कालीन प्रथम इमारत)	कुतुबुद्दीन ऐबक
2.	कुतुबमीनार (मेहरौली, दिल्ली) (कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी की स्मृति में)	कुतुबुद्दीन ऐबक, इल्तुतमिश
3.	अढ़ाई दिन का झोपड़ा, अजमेर	कुतुबुद्दीन ऐबक
4.	सुल्तानगढ़ी, दिल्ली	इल्तुतमिश
5.	जामा मस्जिद, बदायूँ	इल्तुतमिश
6.	अलाई दरवाजा	अलाउद्दीन खिलजी
7.	तुगलकाबाद (छप्पनकोट), दिल्ली	गयासुद्दीन तुगलक
8.	जहाँपनाह नगर, दिल्ली	मुहम्मद तुगलक
9.	बारह खम्भा, दिल्ली	मुहम्मद तुगलक
10.	कोटला फिरोज शाह	फिरोजशाह तुगलक

विजयनगर के प्रमुख शासक वंश

वंश	संस्थापक
1. संगम	हरिहर एवं बुक्का
2. सालुव	नरसिंह सालुव
3. तुलुव	वीर नरसिंह
4. आरवीडु	तिरुमल

मुगल बादशाहों का क्रम

1.	बाबर	(1526-1530 ई०)
2.	हुमायूँ	(1530-1556 ई०)
3.	अकबर	(1556-1605 ई०)
4.	जहाँगीर	(1605-1627 ई०)
5.	शाहजहाँ	(1627-1658 ई०)
6.	औरंगजेब या आलमगीर प्रथम	(1658-1707 ई०)
7.	बहादुरशाह प्रथम	(1709-1712 ई०)
8.	जहाँदार शाह	(1712-1713 ई०)
9.	फर्रुखसियर	(1713-1719 ई०)
10.	मुहम्मदशाह	(1719-1748 ई०)
11.	अहमदशाह	(1748-1754 ई०)
12.	आलमगीर द्वितीय	(1754-1758 ई०)
13.	शाह आलम द्वितीय	(1758-1806 ई०)
14.	अकबर द्वितीय	(1806-1837 ई०)
15.	बहादुरशाह द्वितीय 'जफर'	(1837-1857 ई०)

विजयनगर साम्राज्य के प्रशासनिक अधिकारी, उनके कार्य तथा विभिन्न विभाग

अधिकारी	कार्य
नायक	'अमरम' के स्वामी होत थे 'जो इन्हें सेना रखने के लिए स्वीकार किए जाते थे।
अमरम	ये भू-खण्ड होते थे जो नायकों के लिए सेना का व्यय वहन करने को दिये जाते थे।
दण्डनायक	अधिकारियों की एक श्रेणी जो प्रशासन में हाथ बंटाती थी।
रायसम	सूचिव होते थे।
कर्णिकम	सरकारी आय-व्यय का लेखा-जोखा रखते थे।
मानेयप्रधान	ये विभागाध्यक्ष होते थे।
मुद्राकर्त्ता	शाही मुद्रा रखने वाले।
भू-धृति	भू-सम्बन्धी कर व्यवस्था करने वाले।
पलायागरों	शान्ति व सुरक्षा बनाये रखने हेतु नायक के नेतृत्व में कार्य करने वाले कर्मचारी।
कोट्टम	विजयनगर साम्राज्य के जिले होते थे।
नाडु	परगने
मेलाग्राम	50 गाँवों के समूह को मेलाग्राम कहा जाता था।
अमर-नायक	नायक
महानायकाचार्य	इनके माध्यम से राजा ग्रामों से सम्बन्ध रखता था।
नात्तवर	नाडु के सदस्य
नाडु	गाँव की एक राजनीतिक इकाई
आयागार	वंशानुगत अधिकारी इस नाम से जाने जाते थे।
प्रधानी	महत्त्वपूर्ण राज्याधिकारी इसी नाम से जाने जाते थे।
अमरानायक	सामन्तों का वह वर्ग जो राजा की सैनिक सहायता करते थे।
स्थानिक	देवालयों के प्रबन्ध से सम्बन्ध रखने वाले होते थे।
सेनातोआ	ग्राम का लेखाधिकारी।

विजयनगर साम्राज्य के विभिन्न राजवंशों के प्रमुख शासक

नरेश	राजवंश	शासन-काल	उपलब्धियाँ
हरिहर	संगम वंश	1336-56 ई०	विजयनगर साम्राज्य का संस्थापक पिता (संगम) के नाम पर संगम वंश चलाया। होयसल राज्य व विजयनगर पर अधिकार किया। बहमनी राज्य से शत्रुता मोल लेकर भी विजयनगर साम्राज्य का अस्तित्व बनाये रखा।
बुक्का	संगम वंश	1356-77 ई०	हरिहर का भ्राता। हरिहर की मृत्यु पर विजयनगर साम्राज्य का स्वामी बना। परन्तु 1346 में दोनों भ्राताओं का संयुक्त राज्य स्थापित हो गया था। गुट्टी बुक्का की राजधानी रही।
हरिहर द्वितीय	संगम वंश	1377-1404	बहमनी साम्राज्य के आक्रमणों का सफलता से मुकाबला करके **महाराजाधिराज** व **राजपरमेश्वरम्** की उपाधियाँ धारण कीं।
देवराय द्वितीय	संगम वंश	1422-46 ई०	इस वंश का प्रतापी शासक। कोण्डबिन्दु को परास्त कर कृष्णा नदी तक साम्राज्य फैलाया। उड़ीसा नरेश को दक्षिण में नहीं बढ़ने दिया। केरल को अपने साम्राज्य का अंग बना लिया। फारस का राजदूत अब्दुर्रज्जाक आया। गजबेटकार की उपाधि धारण की।
वीर नरसिंह	सालुव वंश	1486-91	सालुव वंश का संस्थापक। विषम परस्थितियों में शासक बना। कूटनीतिज्ञ एवं राजनीतिज्ञ सिद्ध हुआ। कर्नाटक के तलु प्रदेश को विजित किया। अरब से घोड़े मंगा कर सेना का पुनर्गठन किया।
इम्मदी नरसिंह	सालुव वंश	1491-1505	स्वयं तो अल्पवयस्क था। परन्तु सेनानायक नरसा ने विजयनगर साम्राज्य के लुप्त गौरव को पुन: प्राप्त किया। बीजापुर, बीदर के विरुद्ध सैनिक अभियान चलाये। 1498 में आदिल खाँ को परास्त किया। बीदर से मैत्री की। चोल, पाण्डेय व चेर नरेशों ने विजयनगर की प्रभुता स्वीकार की।
वीर नरसिंह	तुलव वंश	1506-09 ई०	राज्यहन्ता था तथा तुलव राजवंश का संस्थापक था। आन्तरकि विद्रोहों को शान्त करने में ही व्यस्त रहा।
कृष्णदेव राय	तुलव वंश	1509-1529	तुलव वंश का सबसे प्रतापी शासक। आन्तरिक विद्रोहों को उसने शान्त किया। बीदर के सुल्तान महमूदशाह को परास्त किया। बीजापुर का सुल्तान **अदोनी** के युद्ध में काम आ गया। गुलबर्गा के दुर्ग पर अधिकार कर लिया। उसने **यवन राज्य स्थापनाचार्य** की उपाधि धारण की। उसने अमुक्त माल्यद, जम्बावती कल्याण तथा उषापरिणय ग्रन्थों की रचना की। अल्लासानी उसके दरबार का कवि था।
अच्युतदेव राय	तुलव वंश	1529-42	18 मास तक रामराय से गृह-युद्ध किया। उड़ीसा के नरेश प्रताप रुद्र के सैनिक अभियान को असफल बना दिया। गोलकुण्डा के सुल्तान के आक्रमण को कोंडविदु पर असफल बना दिया। परन्तु रामदेव उसका प्रतिद्वन्द्वी बन गया। अच्युतदेव राय को उसके साले तिरुमल से राज्य की सुरक्षा में महान् सहयोग मिला।
सदाशिव	तुलव वंश	1542-1572	सदाशिव की दशा इम्मदी नरसिंह की सी रही। सत्ता उसके हाथों में न रहकर उसके मंत्री रामराय के हाथों में रही। रामराय ने बीजापुर के सुल्तान से मैत्री करके मुसलमानों को सेना में भर्ती करना आरम्भ कर दिया। इसके परिणाम साम्राज्य के लिए घातक सिद्ध हुए। बुरहानपुर के सुल्तान के सहयोग से रामराय ने आदिलशाह को तीन बार परास्त किया। सदाशिव निराशा की दशा में ही 1572 में इस संसार से विदा हुआ।
श्रीरंग	अरविंडु वंश	1572-1585	अनेक कठिनाई के होते हुए भी पिता के कहने पर राज्य का भार संभाला और अरविंडु वंश की स्थापना की। बीजापुर व गोलकुण्डा से उसे भी युद्ध करने पड़े। 1576 में बीजापुर के सुल्तान को परास्त किया।
वेंकट	अरविंडु वंश	1585-1614	अपने शासन के 28 वर्षों में उसने साम्राज्य को सुदृढ़ बनाया। राज्य को समृद्धि व शान्ति प्रदान की। उसने गुट्टी पर अधिकार किया। उसके शासन-काल में अंग्रेज, डज व पुर्तगालियों ने विजयनगर के आस-पास अपनी व्यापारिक कम्पनियाँ स्थापित करना आरम्भ कर दिया था।
रामदेव	अरविंडु वंश	1614-30	गृह-युद्ध के अन्तराल में ही यह शासक बना था। रामदेव को समर्थन दिया। याद्दम ने तथा जग्गा ने रानी के नकली पुत्र को सहयोग दिया। जग्गा 1616 के युद्ध में जब मारा गया तो उसका स्थान उसके भ्राता एतिराज ने ले लिया। 1619 में वह पुत्र भी इस लोग से विदा हो गया। परन्तु गृह-युद्ध चलता रहा।
वेंकट तृतीय	अरविंडु वंश	1630-42 ई०	वेंकट तृतीय को भी गृह-युद्ध से गुजरना पड़ा। राम के चाचा तिम्मा ने उसका विरोध किया। तिम्मा ने वेंकट को उसके मूल स्थान **अनेगौंडी** में रहने को विवश कर दिया। 1635 में तिम्मा चल बसा पर गृहयुद्ध बन्द नहीं हुआ। उसके मरने पर वेंकट का भ्राता श्रीरंग ही उसका प्रतिद्वन्द्वी बन गया।
श्रीरंग तृतीय	अरविंडु वंश	1642-72	श्रीरंग ने वेंकट से गद्दी प्रतिद्वन्द्वी के रूप में प्राप्त की परन्तु जब उसने वेंकट की जंगल मे रहते बीमारी की सुनी तो उसे दु:ख हुआ। उसने विजयनगर साम्राज्य का पुनरुद्धार करना चाहा पर असफल रहा। गृह-युद्ध के कारण पड़ोसी मुस्लिम राज्यों की बन आई और उन्होंने विजयनगर राज्य समाप्त कर दिया।

भारत में लोकप्रिय सूफी सिलसिले

सिलसिला	संस्थापक	अन्य सूफी सन्त (भारत से सम्बद्ध)	विशेषतायें
1. चिश्ती	ख्वाजा अबूईसाक	मुइनुद्दीन चिश्ती (अजमेर) निजामुद्दीन औलिया, बाबा फरीद, कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी, शेख, हुसैनी, गेसूदराज आदि।	इस सिलसिले के संतों का संगीत तथा योग क्रियाओं में विश्वास था। इनका व्यक्तित्व आकर्षक था। इन्होंने बहुत से हिन्दू रीति-रिवाजों को अपना लिया था। ईश्वर प्रेम व मानव सेवा इनके प्रमुख सिद्धान्त थे।
2. सुहरावर्दी	शेख नाजिब-अद-दीन अब्द-अल काहिर सुहरावर्दी, शिहाबुद्दीन सुहरावर्दी	बहाउद्दीन जकारिया, हमीदुद्दीन नागौरी।	ये चिश्तियों की भाँति निर्धनता, उपवास, आत्म दमन तथा शरीर को यातना देने में विश्वास नहीं रखते थे वरन् उनका आरामदेह जीवन में विश्वास था उन्होंने धन संग्रह भी किया व तत्कालीन राजनैतिक मामलों में भी रुचि ली
3. कादरी	शेख अब्दुल कादिर जिलानी	शाह नियमतउल्ला, मखदूम जिलानी, शेख मीर मुहम्मद	इस सिलसिले के सन्त उदार एवं रूढ़िवादी दोनों ही प्रवृत्ति के थे।
4. सत्तारी	अबूयजीद-अल-विस्तामी	शेख अब्दुल्ला (जौनपुर) मुहम्मद गौस (ग्वालियर)	इन संतों के हिन्दू-मुसलमानों के धार्मिक विचारों तथा रिवाजों में साम्य दिखलाकर उन्हें निकट लाने का प्रयास किया। इस पंथ का अधिक प्रसार नहीं हो सका।
5. नक्शबंदी	अहमद अल यास्वी बहाउद्दीन	मु. बाकी बिल्लाह, शेख अहमद सरहिन्दी	इस सिलसिले के प्रसार को अकबर के अन्तिम दिनों में गति मिली। सूफियों में यही सबसे अधिक कट्टर थे तथा अकबर की नीतियों का प्रतिकार करने आये थे। इन लोगों ने कुरान, शरियत व हदीस के नियमों के पालन पर जोर दिया। ये अपने आपको खलीफा का शिष्य मानते थे। संगीत को इन्होंने इस्लाम धर्म के विरुद्ध बतलाया।
6. फिरदौसी	सैफुद्दीन बखरजी	बदुद्दीन समरगंजी अहमद इब्न याह्या, मनैरी, शेख हुसैन बलखी	यह सिलसिला बिहार तथा बंगाल में ही कुछ हद तक प्रचलित रहा। भारत में इस सिलसिले के मुख्य नेता शेख हुसैन बलखी ने सभी परेशानियों का कारण भूख को माना था।
7. कुब्रविया	नज्मुद्दीन-अल-कुबरा	सैय्यद अली हमदानी	इस सिलसिले का प्रचार-प्रसार केवल कश्मीर में रहा।

भक्ति आन्दोलन के प्रमुख प्रवर्तक और उनके सिद्धान्त

प्रवर्तक	सिद्धान्त
शंकराचार्य	अद्वैतवाद
रामानुजाचार्य	विशिष्टाद्वैतवाद
निम्बार्काचार्य	द्वैताद्वैतवाद
वल्लभाचार्य	शुद्ध अद्वैतवाद
माध्वाचार्य	द्वैतवाद
श्रीकंठ	शैव विशिष्टाद्वैत
श्रीपति	वीर शैव विशिष्टाद्वैत
भास्कराचार्य	भेदाभेदवाद
विज्ञान भिक्षु	अविभागाद्वैत
कबीर	विशुद्ध द्वैतवाद

आदिशंकराचार्य द्वारा स्थापित पीठ

ज्योतिष्पीठ—	बद्रीनाथ (उत्तर प्रदेश)
गोवर्धन—	पुरी (उड़ीसा)
शारदापीठ—	द्वारका (गुजरात)
शृंगेरीपीठ—	मैसूर (कर्नाटक)

प्रमुख धर्माचार्य/सन्त सम्प्रदाय/पंथ

रामानुजाचार्य	श्री सम्प्रदाय
माध्वाचार्य	ब्रह्म सम्प्रदाय
निम्बार्काचार्य	सनकादि सम्प्रदाय
विष्णुस्वामी/वल्लभाचार्य	रूद्र सम्प्रदाय
हित हरिवंश	राधावल्लभ सम्प्रदाय
कबीर	कबीर पंथ
दादू	दादू पंथ
नानक	सिख पंथ
तुकाराम	वारकरी पंथ

मुगल प्रान्तीय प्रशासन में हाथ बंटाने वाले अधिकारी

अधिकारी	उनके कार्य
वाकिया-ए-नवीस	सूबे के गुप्तचर विभाग का प्रधान
बितिक्ची	यह अधिकारी भूमि और लगान सम्बन्धी कागजात तैयार करता था। वह कार्य करता था गवर्नर के अधीन, पर उसकी नियुक्ति सम्राट करता था।
मीर बर्र	यह वन विभाग का अधिकारी होता था।
मीर बहर	नौकाओं की देखभाल करता था।
शिकदार	परगने का प्रमुख अधिकारी होता था।
आमिल	कर निर्धारित करना तथा वसूल करना इसका कार्य था।
फोतेदार	यह परगने का खजांची होता था।
कारकून	यह एक लेखक होता था। यह मालगुजारी की वसूली तथा बकाया रकम वसूल करता था।
कानूनगो	परगने के पटवारियों का अधिकारी होता था। यह पटवारियों की सहायता से भूमि की पैमायश, आवंटन तथा राजस्व वसूल करता था।

मुगल प्रशासन : विविध शब्दावली

अकीका	मुसलमानों के बच्चा उत्पन्न होने के 6 दिन बाद यह उत्सव मनाया जाता था।
मकतब	बच्चे को मदरसे भेजना
फरगुल	यह एक प्रकार का फरकोट होता था जो हुमायूं और जहाँगीर को बहुत पसन्द था।
खिलत	सम्राट की ओर से अमीरों को विशेष कार्य के लिए दी जाने वाली पोशाक
जौहर	विशेषकर राजपूत स्त्रियाँ अग्नि में कूदकर अपने सतीत्व की रक्षा करती थीं।
चौगान	आधुनिक पोलो
चण्डाल-मण्डप	अकबरकालीन ताश का खेल

मुगल साम्राज्य का पतन : एक नजर

शासक का नाम	समय	प्रमुख घटनायें
[illegible]	1707-1712 ई०	1. लोहगढ़ की लड़ाई में बन्दा बहादुर को हराकर सरहिन्द पर कब्जा। 2. शिवाजी के पोते साहू को मुगल कैद से रिहा करना। 3. आलसी एवं ऐश्वर्य प्रिय होने के कारण 'शाहे बेखबर' कहलाता था।
[illegible]	1712-1713 ई०	1. अपने प्रधानमंत्री जुल्फीकार अली खाँ की मदद से जजिया कर 1712 ई० में समाप्त कर दिया। 2. अयोग्य व लोभी शासक।
[illegible]	1713-1719 ई०	1. जहाँदारशाह का भतीजा था व सैय्यद बन्धुओं (सैय्यद अब्दुल्ला एवं सैय्यद हुसैन अली) की मदद से शासक बना। 2. 1717 ई० में ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी को व्यापारिक सुविधायें प्रदान करना। 3. सैय्यद बन्धुओं के बढ़ते हुये प्रभाव से तंग आकर उनके विरुद्ध षड्यन्त्र करना। बदले में सैय्यद बन्धुओं द्वारा फर्रुखसियर की हत्या कर देना।
[illegible]	1719-1748 ई०	1. सैय्यद बन्धुओं के हाथ का कठपुतला रोशन अख्तर मुहम्मद शाह के नाम से शासक बना। 2. दक्षिण के सूबेदार चिनकिलिच खाँ की मदद से सैय्यद बन्धुओं को समाप्त किया। 3. यह एक अयोग्य शासक था और **रंगीला** के नाम से प्रसिद्ध था। वास्तविक शासन सत्ता सरदारों के हाथ में चली गयी। अनेक राज्य उसके साम्राज्य से अलग हो गये। बंगाल, हैदराबाद, अवध, रुहेलखण्ड आदि में अर्ध स्वतंत्र राज्यों का उदय हुआ। 4. 1739 ई० में नादिरशाह का आक्रमण दिल्ली में कत्लेआम हुआ व नादिरशाह के नाम से खुत्बा पढ़ा गया। वह सोना, चाँदी, जवाहरात तथा मयूर सिंहासन लेकर दिल्ली से रवाना हुआ।
[illegible]	1748-1754 ई०	1. ऐश्वर्य प्रिय शासक था। उसकी मां-कुदासिया बेगम उसकी ओर से शासन करती थी। 2. उत्तर-पश्चिम की ओर से अहमद शाह अब्दाली के आक्रमण जिन्हें रोकने में मुगल शासक असमर्थ रहा। 3. 1754 ई० में उसके वजीर गाजीउद्दीन ने अहमदशाह को अन्धा बनाकर सलीमगढ़ में कैद कर दिया।
[illegible]	1754-1759 ई०	1. मुगल साम्राज्य सिमट कर दिल्ली के आस-पास तक सीमित रह गया। 2. अहमदशाह अब्दाली का चौथा आक्रमण। अब्दाली का नजीबुद्दौला को अपना दूत एवं मुगल सम्राट का बख्शी नियुक्त कर उसका वापिस अफगानिस्तान जाना। 3. नजीब की नियुक्ति व उसके सम्राट् पर प्रभाव से अप्रसन्न होकर वजीर इतमादुल मुल्क द्वारा आलमगीर द्वितीय की हत्या करवाना।
[illegible]	1759-1806 ई०	1. वास्तविक नाम अली गौहर था जो शाह आलम की उपाधि से शासक बना। 2. वजीर के डर से अवध के नवाब शुजाउद्दौला का शरणार्थी बना रहा। 1765 में इलाहाबाद के संधि-पत्र के बाद अंग्रेजों के संरक्षण में आ गया। 3. अंग्रेजों को बिहार, बंगाल एवं उड़ीसा की दीवानी का अधिकार देना। 4. पानीपत का तृतीय युद्ध व मराठों की उसमें करारी हार।
[illegible]	1806-1837 ई०	1. अपनी मृत्यु तक अंग्रेजों के संरक्षण में रहा।
[illegible]	1837-1857 ई०	1. अन्तिम मुगल सम्राट। 2. 1857 के विद्रोह का नेतृत्व करना तथा अंग्रेजों द्वारा कैद करके उसे रंगून भेजना। 3. 1862 ई० में मृत्यु। इस प्रकार नाममात्र के मुगल शासक भी समाप्त हो गये क्योंकि अंग्रेजों ने उसके किसी भी उत्तराधिकारी को वैध नहीं माना।

मुगल कालीन इमारतें

इमारत	स्थान	निर्माता
1. शेरशाह का मकबरा	सासाराम	शेरशाह सूरी
2. पुराना किला	दिल्ली	शेरशाह सूरी
3. लाल किला (लाल पत्थर)	आगरा	अकबर
4. बुलंद दरवाजा	फतेहपुर सीकरी	अकबर
5. अकबर का मकबरा	सिकन्दरा	जहाँगीर
6. एतमाद्दौला का मकबरा (सफेद संगमरमर)	आगरा	नूरजहाँ
7. लाल किला	दिल्ली	शाहजहाँ
8. जामा मस्जिद	दिल्ली	शाहजहाँ
9. जामा मस्जिद	आगरा	जहाँ आरा बेगम
10. ताजमहल	आगरा	शाहजहाँ
11. अटाला मस्जिद	जौनपुर	इब्राहिमशाह शर्की

मध्यकालीन प्रमुख ऐतिहासिक ग्रंथ

पुस्तक	*लेखक*	*पुस्तक*	*लेखक*
कामिल-उत-तवारीख	: शेख अबुल हसन (इब्नेअसिर)	ग्वालियरनामा	: हीरामन मुंशी
		राजदर्शिनी	: गणेश दास बोदरव
रौहतौस सुदूर	: नजमुद्दीन अबू बक्र	मसालिक-उल-अबसार	: शिहाबुद्दीन अब्बास
सीरत-ए- जलालुद्दीन मंगबर्नी	: नरूद्दीन मुहम्मद जायदारी	अहकामुस-सलातीनिया	: मावर्दी
		बुरहान-ए-मआसिर	: अली बिन अजीजुल्लाह तबतबा
तारीख-ए-वसफ	: अब्दुल्ला शीराजी		
किताबुल हिन्द : अलबरूनी (तहकीक-ए-हिन्द)		बाबरनामा या तुजूक-ए-बाबरी (तुर्की भाषा)	: बाबर
कानून-अल मसूदी	: अलबरूनी	तारीख-ए-रशीदी	: मिर्जा हैदर
तारीख-ए-यामिनी	: उतबी	हुमाँयूनामा	: गुलबदन बेगम
तारीख-ए-बैहाकी या,		तारीख-ए-हुमाँयूनी	: जौहर 'आफ्ताबची'
मलजीदात-ए- बैहाकी	: अबुल फजल बैहाकी	तारीख-ए-शेरशाही	: अब्बास खान सरवानी
		तारीख-ए-सलातीन	
तारीख-ए-गुजीदा	: हमदुल्ला मुस्तफी काजमीनी	ए-अफगाना	: अहमद यादगार
		तारीख-ए-दाऊद	: अब्दुल्ला दाऊद
ताजुल मासिर	: हसन निजामी	तारीख-ए-खान जहानी	: नियमतुल्लाह
तबकात-ए-नासिरी	: मिनहाज-उस-सिराज		
		अकबरनामा (आइन-ए-अकबरी)	: अबुल फजल
अदब-उल-हर्ब	: फखे मुदब्बीर		
खालिक बारी,		मुंतखाब-उत-तवारीख	: अब्दुल कादिर 'बदायूंनी'
तुगलकनामा,		तबकात-ए-अकबरी	: ख्वाजा निजामुद्दीन अहमद
खजानुल फुतूह या			
तारीखे अलाई,		तारीख-ए-फिरिश्ता या	
मिताह -उल-फुतूह	: अमीर खुसरो (उपाधि-तूता-ए-हिन्द)	गुलशन-ए-इब्राहिमी	: मुहम्मद कासिम हिन्दूशाह 'फिरिश्ता'
		हम्जानामा	: अकबर के समय मुगल चित्रकला का संकलन
(अमीर खुसरो एकमात्र ऐसे रचनाकार थे, जिन्होंने 6 सुल्तानों के शासन काल को देखा था।)		लोरचंदा (अवधी)	: जौनपुर का इतिहास
तारीख-ए-फिरोजशाही	: जियाउद्दीन बरनी	तुजुक-ए-जहाँगीरी	: जहाँगीर की आत्मकथा
फतवा-ए-जहांदारी	(तुर्की)		
फुतूआत-ए-फिरोजशाही	: फिरोजशाह तुगलक	इकबालनामा-ए-जहाँगीरी	: मुतमिद खां
तारीख-ए-फिरोजशाही	: फिरोजशाह तुगलक	महासीर-ए-जहाँगीरी	: ख्वाजा कामगार खैरत खान
तारीख-ए-फिरोजशाही	: शम्स सिराज अफीक		
मलफुजात-ए-तैमूरी (तुजूक-ए-तैमूरी)	: तैमूर लंग की आत्मकथा	पादशाहनामा	: मुहम्मद अमीन 'काजमीनी'
जफरनामा	: मौलाना याजदी	बादशाहनामा	: अब्दुल हमीद लाहौरी
सियासतनामा	: निजामुल-मुल्क-तूसी		
		मुल्क खास (शाहजहाँनामा)	: मुहम्मद ताहर 'आशना'
तारीख-ए-मुबारकशाही	: याह्या बिन अहमद 'सिरहिन्दी'	शाहजहाँनामा	: मु० सादिक खान
		आलमगीरनामा	: मिर्जा मुहम्मद काजिम
फुतूह-उस-सलातीन	: ख्वाजा अब्दुल्ला मलिक ''इसामी''	मुन्तखाब-उल लुब्बाब	: मु० हाशिम 'खाफी खाँ'
		मासिर-ए-आलमगीरी	: मु० साकी मुस्तैद खाँ
रौजत-उस-सिफा	: मीर ख्वान्द	तारीख-ए-शाहशुजाई	: मीर मुहम्मद मासूम
किताबुल रहला	: इब्नबतूता (अबू अब्दुल्ला, मोरक्को)	नुस्खा-ए-दिलकुशाँ	: भीमसेन बुरहानपुरी
		फुतूआत-ए-आलमगीरी	: ईश्वर दास मेहता
मतलास सदैन वा मजमूल बहरीन	: अब्दुर्रज्जाक	सर देश वृतांत	: महेश ठाकुर
		अकबर शाही श्रृंगार दर्पण	: पद्म सुंदर
खैर-उल-मजालिस	: हमीद कलन्दर	नैणसी-री-ख्यात	: मेहता नैणसी
फवाइद-उल-फौद	: मीर हसन सिज्जी		
सियार-उल-औलिया	: मीर खुर्द	ग्रायरा प्रकाशिका	: ठाकुर फेरू
गुलजार-ए-अबरार	: मुहम्मद गौसी	अखबार-उस-सिन्ध	
तारीख-ए-मासूमी	: मीर मासूम	वाल-हिन्द	: सुलेमान ताजिर

सिखों के गुरु—उनके साथ मुगल सम्राटों के सम्बन्ध

सिख गुरु	उनका काल	मुगल सम्राट तथा उनके सम्बन्ध
गुरु नानक	1469-1538	सिख सम्प्रदाय के संस्थापक
गुरु आनन्द	1538-1552	सिक्ख धर्म के प्रचार में विशेष योगदान
गुरु अमरदास	1552-1574	सिक्ख सम्प्रदाय को सुदृढ़ बनाया, अनुशासन पर विशेष ध्यान दिया। लंगर प्रथा चालू करना, मंझी प्रथा का विस्तीर्ण करना तथा सती प्रथा का विरोध करना।
गुरु रामदास	1574-1581	अमृतसर का कुण्ड बनवाया, अकबर के साथ मैत्री सम्बन्ध स्थापित कर सिख धर्म का हित किया। गुरु ने अकबर से तीर्थ-यात्रा कर समाप्त कराया। अकबर स्वयं उनसे मिलने गया, गुरु पद को पैतृक बना दिया। मसनद प्रथा का प्रचलन तथा धर्म प्रचारार्थ सन्तों को भारत के विभिन्न स्थानों को भेजना।
गुरु अर्जुनदास	1581-1606	जन्म-जात कवि/दार्शनिक होते हुए भी सफल संगठनकर्ता, आदि ग्रन्थ का संकलन करना, मसनद प्रथा को सुनिश्चित स्वरूप प्रदान करना, जहांगीर से खुसरो को आशीर्वाद देने पर सम्बन्ध खराब होना तथा मुगल सम्राट द्वारा वध करवा देना।
गुरु हरगोविन्द	1606-1645	अकाल तख्त की स्थापना, जहांगीर के साथ सम्बन्ध बिगड़ जाने पर सावधानी से धर्म का प्रचार करना, सिख सम्प्रदाय को शक्तिशाली बनाना, शाहजहाँ से सम्बन्ध बिगड़ना। अत: शाहजहाँ से कई लड़ाइयाँ लड़नी पड़ीं।
गुरु हरराय	1645-1661	शान्त प्रकृति के गुरु, एकान्त जीवन व्यतीत करना औरंगजेब द्वारा मुगल दरबार में उपस्थित होने के आदेश मिलने पर अपने ज्येष्ठ पुत्र रामराय को भेजा। औरंगजेब के सम्मुख विनीत रहने पर गुरु का नाराज होना और अपने छोटे पुत्र हरिकृष्ण को उत्तराधिकारी घोषित करना।
गुरु हरिकृष्ण	1661-1664	चेचक के प्रकोप से शीघ्र स्वर्ग लोक के यात्री बन गये।
गुरु तेगबहादुर	1664-1675	हिन्दू धर्म के प्रबल समर्थक, औरंगजेब के आदेश पर इस्लाम स्वीकार न करना और 11 नवम्बर, 1675 को शहीद हो गये।
गुरु गोविन्द सिंह	1675-1708	सिक्खों को खालसा में परिणित कर योद्धा बनाया। औरंगजेब से आजन्म संघर्ष करते रहे। अपने दोनों पुत्रों को दीवार में चुनवा देने के उपरान्त भी उन्होंने औरंगजेब की दासता स्वीकार नहीं की।

12 सिक्ख मिसलें तथा उनके संस्थापक

मिसल	संस्थापक
1. सिंहपुरिया मिसल	नवाब कपूर सिंह
2. अहलूवालिया मिसल	जस्सासिंह अहलूवालिया
3. रामगढ़िया मिसल	जस्सासिंह रामगढ़िया
4. फुलकिया मिसल	फूल सिंह
5. कन्हैया मिसल	जयसिंह
6. भंगी मिसल	हरिसिंह
7. सुकरचकिया मिसल	चरत सिंह
8. निशानवालिया मिसल	सरदार संगत सिंह
9. करोड़सिंधिया मिसल	बघेल सिंह
10. उल्लेवालिया मिसल	गुलाब सिंह
11. नकाई मिसल	हीरा सिंह
12. शहीदी मिसल	बाबा दीप सिंह

विभिन्न यूरोपीय कम्पनियाँ तथा उनका भारत आगमन

कम्पनी का नाम	भारत में स्थापना वर्ष
पुर्तगाली ईस्ट इण्डिया कम्पनी	1498
अंग्रेजी ईस्ट इण्डिया कम्पनी	1600
डच ईस्ट इण्डिया कम्पनी	1602
डैनिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी	1616
फ्रांसीसी ईस्ट इण्डिया कम्पनी	1664

आँग्ल-मराठा युद्ध

युद्ध व उसकी अवधि	युद्ध के दौरान होने वाली विभिन्न संधियाँ	वर्ष	सन्धि करने वाली शक्तियाँ
प्रथम आँग्ल-मराठा युद्ध (1775-1783)	सूरत की सन्धि	1775	राघोबा तथा बम्बई प्रेजीडेन्सी
	पुरन्दर की सन्धि	1776	गवर्नर जनरल तथा पेशवा
	बड़गाँव की सन्धि	1779	मराठा तथा अंग्रेजों के मध्य
	सालबाई की सन्धि	1783	मराठा तथा अंग्रेजों के मध्य
द्वितीय आँग्ल-मराठा युद्ध (1803-1805)	बसीन की सन्धि	31 दि०, 1802	पेशवा बाजीराव द्वितीय तथा अंग्रेज
	देवगाँव की सन्धि	17 दि०, 1803	भौंसले व अंग्रेजों के मध्य
	सुर्जीअर्जुन गाँव सन्धि	30 दि०, 1803	सिन्धिया तथा अंग्रेजों के मध्य
	राजापुर घाट की सन्धि	25 दि०, 1805	होल्कर तथा अंग्रेज
तृतीय आँग्ल-मराठा युद्ध (1817-18)	नागपुर की सन्धि	27 मई, 1816	भौंसले तथा लार्ड हेस्टिंग्ज
	ग्वालियर की सन्धि	5 नवम्बर, 1817	सिन्धिया तथा लार्ड हेस्टिंग्ज
	बड़ौदा की सन्धि	6 नवम्बर, 1817	गायकवाड़ तथा लार्ड हेस्टिंग्ज
	मन्दसौर की सन्धि	जनवरी, 1818	होल्कर तथा लार्ड हेस्टिंग्ज
	पूना की सन्धि	13 जून, 1818	पेशवा तथा लार्ड हेस्टिंग्ज

18 वीं सदी में मुगल साम्राज्य के पतन के बाद स्थापित नये राज्य

राज्य	संस्थापक
1. बंगाल	मुर्शिद कुली खाँ
2. पंजाब	रणजीत सिंह
3. अवध	सआदत खाँ उर्फ बुरहानुलमुल्क
4. हैदराबाद	चिनकिलिच खां अथवा निजाम-उल-मुल्क
5. रुहेलखण्ड	वीर दाउद एवं अली मुहम्मद खां
6. कर्नाटक	सादुतुल्ला खां
7. भरतपुर	चूरामन एवं बदन सिंह

बंगाल के नवाब

नवाब	शासन काल
मुर्शीद कुली खान	(1713-1727 ई.)
शुजाउद्दीन	(1727-1739 ई.)
सरफराज खान	(1739-1740 ई.)
अलीवर्दी खान	(1740-1756 ई.)
सिराजुद्दौला	(1756-1757 ई.)
मीरज़ाफर	(1757-1760 ई.)
मीरकासिम	(1760-1763 ई.)
मीरजाफर (पुन: नवाब)	(1763-1765 ई.)
निजाम-उद्-दौला	(1765-1766 ई.)
शैफ-उद्-दौला	(1766-1770 ई.)
मुबारक-उद्-दौला	(1770-1775 ई.)

बंगाल के गवर्नर

क्लाइव (Clive)	(1757-60 ई.)
होलवेल (Holwell) (स्थानापन्न)	(1760 ई.)
वेन्सिटार्ट (Vansittart)	(1760-65 ई.)
क्लाइव (Clive) (दूसरा काल)	(1765-67 ई.)
वेरेल्स्ट (Verelst)	(1767-69 ई.)
कार्टियर (Cartier)	(1769-1772 ई.)
वारेन हेस्टिंग्ज (Warren Hastings)	(1772-1774 ई.)

बंगाल के गवर्नर जनरल

1773 ई. के रेग्यूलेटिंग एक्ट के बाद बंगाल के गवर्नर जनरल इस प्रकार थे—

वारेन हेस्टिंग्ज़	(1774-1785 ई.)
सर जॉन मैक्फरसन (स्थानापन्न)	(1785-86 ई.)
कार्नवालिस	(1786-93 ई.)
सर जॉन शोर	(1793-98 ई.)
सर ए. क्लार्क (स्थानापन्न)	(1798 ई.)
लार्ड वेलेज़ली	(1798-1805 ई.)
कार्नवालिस	(1805 ई.)
सर जार्ज बार्लो	(1805-1807 ई.)
अर्ल ऑफ मिन्टो	(1807-1813 ई.)
मार्क्विस ऑफ हेस्टिंग्ज़	(1813-1823 ई.)
जॉन एडम्ज़ (स्थानापन्न)	(1823 ई.)
लार्ड एमहर्स्ट	(1823-28 ई.)
विलियम बटरवर्थ बैली (स्थानापन्न)	(1828 ई.)
लार्ड विलियम बैंटिंक*	(1828-33 ई.)

* लार्ड विलियम बैंटिंक के समय 1833 ई. का चार्टर एक्ट पारित हुआ जिसके अनुसार बंगाल के गवर्नर जनरल को भारत का गवर्नर जनरल बना दिया गया।

अग्रेंजों के विरुद्ध 1857 से पहले होने वाले सैनिक विद्रोह

स्थान/रेजीमेंट	वर्ष
वैलोर	1806 ई.
बैरकपुर	1824 ई.
शोलापुर	1830 ई.
हैदराबाद	1842 ई.
सिन्ध में भेजी सेना का विद्रोह	1842-43 ई.
22वीं N.I.	1849 ई.
66वीं N.I.	1850 ई.
38वीं N.I.	1852 ई.

1857 का विद्रोह

विद्रोह	विद्रोह का नेता	विद्रोह दमन करने वाला ब्रिटिश अधिकारी
दिल्ली	बहादुरशाह एवं बख्त खान	जॉन निकलसन, हडसन
कानपुर	नाना साहब	जनरल हैवलॉक
लखनऊ	बेगम हजरत महल	कोलिन कैम्पबेल
झाँसी	रानी लक्ष्मीबाई	जनरल ह्यूरोज
जगदीशपुर (बिहार)	कुंवरसिंह	विलियम टेलर और बिंसेट आयर
इलाहाबाद	मौलवी लियाकत अली	कर्नल नील
बरेली	खान बहादुर खान	कोलिन कैम्पवेल
फैजाबाद	मौलवी अहमदुल्लाह शाह	
ग्वालियर	तांत्या टोपे	जनरल ह्यूरोज

गोलमेज सम्मेलन (1930-32)

सम्मेलन	तिथि	सदस्य संख्या	वायसराय	उद्देश्य	टिप्पणी
प्रथम गोलमेज	12 दिसम्बर, 1930 से 19 जनवरी, 1931	89	लार्ड इरविन	साइमन कमीशन के सुझावों पर विचार करने के लिये।	कांग्रेस ने इसमें भाग नहीं लिया। इसकी अध्यक्षता ब्रिटिश प्रधानमंत्री मेकडानल्ड ने की।
द्वितीय गोलमेज	7 दिसम्बर से 1 दिसम्बर 1931	107	लार्ड विलिंग्डन	संघीय ढाँचे पर विचार करना तथा अल्पसंख्यकों के हितों की रक्षा।	कांग्रेस ने इसमें भाग लिया पर किसी भी मुद्दे पर सहमति न हो सकी।
तृतीय गोलमेज	17 नवम्बर 1932 से 24 दिसम्बर 1932	46	लार्ड विलिंग्डन	भारत में शासन सुधारों पर विचार करने के लिये।	कांग्रेस ने भाग नहीं लिया। संघीय सरकार पर हुए विचार-विमर्श पर श्वेत-पत्र जारी किया गया जो 1935 के एक्ट का मूल आधार बना।

प्रमुख विद्रोहों से सम्बन्धित तथ्य

विद्रोह	क्षेत्र	नेता	समय
खासी	आसाम	तीतरसिंह बरमानकि	1829-32
सिंगपो	आसाम	—	1830-39
कोल	छोटा नागपुर (बिहार)	बुद्धो भगत	1820-36
सन्यासी	बिहार, उ.बंगाल	केना सरकार	1760-1800
चुआर	बाँकुडा (बंगाल)	दुर्जन सिंह	1798
पालिगार	तमिलनाडु	वीरपी.कटटावोम्मान	1799-1801
पाइक	उड़ीसा	बख्शी जग बंधु	1817-25
थाम्पी	त्रावनकोर	वेलुथाम्पी	1808-9
कच्छ	गुजरात(कच्छ)	राव भारमल	1816-19
रामोसी	पश्चिमी घाट	चितूर सिंह उमाजी	1822-25-2829
कित्तूर	कित्तूर	चिन्नामा	1824
संभलपुर	उड़ीसा	सुरेन्द्रसाई	1827-40
सतारा	महाराष्ट्र (धार)	नरसिंह पातेकर	1840-44
बुंदेला	बुंदेलखण्ड	मधुकरशाह जवाहर सिंह	1842
गडकरी	कोल्हांपुर	—	1844
सतबन्दी	महाराष्ट्र	फोंड सावन्त अन्नासाहिब राजवीरभद्र	
राउसजे गुमसुर	गुमसुर	धनंजय भांजा	1835-37
फैराजी	बंगाल	शरीयतुल्ला दादू मियाँ	1838-48
बहावी	उ.प्र., बिहार, बंगाल	सैयद अहमद टीटूमीर	1764-1831
पागल पंथी	असम	टीपूगारो	1825-27
कूका	पंजाब	गुरूरामसिंह	1866-72
फड़के	पश्चिम भारत	वासुदेव बलवंत फड़के	1877
भील	पश्चिमघाट	सेवाराम	1817-19,25,31
हो	सिंहभूमि	हो, कबीले द्वारा	1820
कोली	गुजरात महाराष्ट्र		1824,28,39,44
सितेंगो	जयन्तिया पहाडी	—	1860-63
कोया	आंध्रप्रदेश(रमया प्रदेश)	अल्लूरीसीतारामराजू	1840-1924
खोंड	उड़ीसा	चक्रविसाज्य	1846-55
संथाल	भागलपुर से राजमहल	सीदों, कान्हू	1855-56
नाइकदास	गुजरात	रूपसिंह जोरिया भगत	1858-59-68
कबायागा	असम(काचेर)	—	1822
उल्गूलन	रांची	बिरसा मुंडा	1874-1900
भील	राजस्थान (बंसघा)	गोविन्दगुरू	1913
कूकी	असम,मणिपुर	रानी गोदिन्ल्यू	1917-19
ओरांव	छोटा नागपुर	जात्रा भगत	1914-15
चांचू	आंध्रप्रदेश	—	1921-22
नील	बंगाल	दिगम्बर विश्वास विष्णु विश्वास	1854-62
तिभागा	बंगाल	मोनीसिंह मुजफ्फर अहमद सुनीलसेन	1946-47
तेलंगाना	आंध्रप्रदेश	—	1946-47
पुन्प्रा वायालार	त्रावनकोर	टी.वी.थामस	1946
कोडाडोरा	आंध्रप्रदेश	श्रीरामराजा	1922-24
मेव	अलवर	—	1932-33
मोपला	केरल	अलीमुसीलियार	1836-1921
पाबना	बंगाल	ईशान-चंद्रराय	1873
रंपा	आंध्रप्रदेश	अल्लूरी सीताराम राजू	1922-24
लायेक	मेदिनीपुर(बंगाल)	—	1816
थारवडडी	बर्मा	साया सेन	1930-31
विजयनगरम	विजयनगर	—	1794
गंजाम	—	—	1835

बीसवीं सदी के मुख्य जन आन्दोलन

विद्रोह/आन्दोलन	समय	स्थान व कारण
अहमदाबाद मिल मजदूरों का आन्दोलन	1918	गाँधी के नेतृत्व में मजदूरों की प्लेग-बोनस की माँग को लेकर किया गया।
बिजोलिया आन्दोलन	1920	मेवाड़ में जागीरदारों के अत्याचार के विरुद्ध विजय सिंह पथिक के नेतृत्व में।
अकाली आन्दोलन	1920-25.	इस आन्दोलन का उद्देश्य गुरुद्वारों को भ्रष्ट महन्तों के चंगुल से छुड़ाना था। इन महन्तों को सरकार का समर्थन प्राप्त था।
मोपला विद्रोह	अगस्त, 1921.	केरल के काश्तकारों द्वारा जमींदारों के अत्याचारों के विरुद्ध।
रम्पा विद्रोह	1922	आन्ध्र प्रदेश में सीता राम राजू के नेतृत्व में औपनिवेशिक राज्य के विरुद्ध।
वायकोम सत्याग्रह	1924	केरल में यह सत्याग्रह छुआछूत के विरोध में हुआ। इस आन्दोलन की शुरुआत ट्रावनकोर के एक गाँव वायकोम से हुई। यहाँ के मन्दिर की आसपास की सड़कों पर अवर्ण नहीं आ सकते थे।
बारदोली सत्याग्रह	1928	सरदार पटेल के नेतृत्व में सूरत जिले के बारदोली तालुके के किसानों ने सरकार द्वारा बढ़ाये हुए लगान के विरुद्ध किया। इस आन्दोलन में सरकार को लगान न देने का आह्वान किया गया। बारदोली सत्याग्रह में ही पटेल को सरदार की उपाधि दी गई। यह खिताब उन्हें बारदोली की औरतों ने दिया।
चटगाँव युवा विद्रोह	22 अप्रैल, 1932	सूर्य सेन के नेतृत्व में क्रान्तिकारी आन्दोलन।
तेभागा आन्दोलन	सितम्बर, 1946	मुहम्मद दानेश एवं नियामत अली के नेतृत्व में बंगाल किसान सभा ने तेभाग सम्बन्धी फ्लाउड कमीशन की सिफारिशें लागू कराने के लिये किया।
तेलंगाना विद्रोह	जुलाई, 1946	रवि नारायण रेड्डी के नेतृत्व में आधुनिक भारत का सबसे बड़ा कृषक छापामार युद्ध।
तेभागा	1947	बंगाल में मणि सिंह नई के नेतृत्व में ब्रिटिश शोषणात्मक व्यवस्था के विरुद्ध।

19 वीं शताब्दी के धार्मिक एवं समाज सुधार आन्दोलन

संगठन	स्थापना तिथि	संस्थापक
एशियाटिक सोसायटी	1784	विलियम जोन्स
ब्रह्म समाज	1828	राजा राममोहन राय
तत्वबोधिनी सभा	1839	देवेन्द्रनाथ ठाकुर
प्रार्थना समाज	1867	आत्माराम पांडुरंग
आर्य समाज	1875	दयानन्द सरस्वती
थियोसोफिकल सोसायटी	1875	एच० वी० ब्लावटस्की तथा एच० एस० अलकाट
रेहनुमाई मजदायासन सभा	1851	दादाभाई नौरोजी
मानव धर्म सभा	1844	मंचाराम
वेदान्त सोसायटी	1896	विवेकानन्द
मुहम्मडेन लिटरेरी सोसायटी	1863	सर सैय्यद अहमद खाँ
राधा स्वामी सत्संग	1861	तुलसीराय
सर्वेन्ट्स ऑफ इण्डिया सोसायटी (Social Service League)	1905	गोपालकृष्ण गोखले
सामाजिक सेवा संघ	1911	नारायण मल्हार जोशी
स्वतंत्र मजदूर पार्टी		भीमराव अम्बेडकर
राजमुन्दरी सोशल रिफार्म एसोसियेशन	1878	वीरेश लिंगम पन्तलू
अनुशीलन समिति	1905	पी० के० मित्रा
आत्मीय सभा	1814	राजा राम मोहन राय
मित्र मेल (अभिनव भारत)	1904	वी० डी० सावरकर
सत्यशोधक समाज	1873	ज्योतिबा फुले
अहमदिया आन्दोलन	1889	गुलाम अहमद
विडो रीमेरिज एसोसियेशन		विष्णु शास्त्री
एकेडेमिक एसोसियेशन		हेनरी विवियन डिरोजियो
सोसायटी फार द एक्वीज़ीशन ऑफ जनरल नॉलेज		हेनरी विवियन डिरोजियो
दीनबन्धु सार्वजनिक सभा	1884	ज्योतिबा फुले
दलित वर्ग मिशन समाज	1909	वी० आर० शिन्दे
अखिल भारतीय हरिजन सेवक संघ	1932	महात्मा गाँधी
अखिल भारतीय दलित वर्ग संघ	1942	भीमराव अम्बेडकर
बहिष्कार हितकर्मी सभा	1924	भीमराव अम्बेडकर
यूनिवर्सल रिलिजियंस सोसायटी	1844	मेहताजी दुर्गाराम मंचाराम
नेशनल मुहम्मडन एसोसियेशन	1878	सर अमीर अली
सोशल सर्विस लीग	1909	एन० एम० जोशी
दक्कन एजूकेशनल सोसायटी	1884	गोविन्द रानाडे तथा सावरकर

स्वाधीनता सेनानियों के प्रमुख नारे

वंदे मातरम् (आनन्दमठ से)	बंकिमचन्द्र चटर्जी।
सत्य और अहिंसा मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है।	एम० के० गांधी।
स्वराज्य हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है।	वी० जी० तिलक
वी हैव मेड ए ट्रायस्ट विद डेस्टिनी	जे० एल० नेहरू।
आरामहराम है	जे० एल० नेहरू।
जनगण मन अधिनायक जय हे भारत भाग्य विधाता	(गीतांजलि) आर० एन० टैगोर।
तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा	सुभाषचन्द्र बोस।
जयहिंद, दिल्ली चलो	सुभाषचन्द्र बोस।
आओ हम पुरुषों की तरह बोलें और घोषणा कर दें कि हम पूरे राजभक्त हैं	दादा भाई नौरोजी।
सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा	सर मुहम्मद इकबाल।
राष्ट्रीयता एक धर्म है जो भगवान के यहाँ से आता है	अरविन्द घोष।
करो या मरो	एम० के० गाँधी।
दीन दुखियों की सेवा ही सच्ची ईश्वर पूजा है	विवेकानन्द।
इंकलाब जिन्दाबाद	सरदार भगतसिंह
हिन्दी हिन्दू हिन्दुस्तान	भारतेन्दु हरिश्चन्द्र।
वेदों की ओर लौटो	दयानन्द सरस्वती।

राष्ट्रीय आन्दोलन से सम्बद्ध प्रमुख पत्र

पत्र	सम्पादक/प्रणेता
अलहिलाल	मौलाना अबुल कलाम आजाद
मार्डन रिव्यू (कलकत्ता 1907 ई०)	रामानंद चटर्जी
कामरेड	मु० अली जिन्ना
काल	परांजये
लीडर, हिन्दुस्तान, अभ्युदय	मदन मोहन मालवीय
यंग इंडिया, हरिजन	महात्मा गाँधी
नेशन	गोपालकृष्ण गोखले
इंडियन मिरर	केशवचन्द्र सेन
केसरी, मराठा	बाल गंगाधर तिलक
बंगाली	सुरेन्द्र नाथ बनर्जी
सोम प्रकाश	ईश्वर चन्द्र विद्यासागर
संवाद कौमुदी	राजा राम मोहन राय
युगान्तर, कर्मयोगी	अरविन्द घोष
कॉमनदील	एनी बेसेन्ट

स्वाधीनता आन्दोलन के दौरान लिखी पुस्तकें

पुस्तकें	लेखक
माइ एक्सपेरीमेंट विद द ट्रुथ, इंडियन होमरूल, माई अर्ली लाइफ, मेरी आत्मकथा माइ चाइल्ड हुड और हिन्दूस्वराज।	मोहनदास करमचन्द गाँधी।
डिस्कवरी ऑफ इंडिया, ग्लिम्पसजे ऑफ हिस्ट्री, ए वन्व ऑफ ओल्डलेटर्स, मेरी आत्मकथा (ऑटोबायोग्राफी) हिस फादर टू हिस डॉटर	जवाहर लाल नेहरू।
इंडिया डिवाइडेड	राजेन्द्र प्रसाद।
अनहैपी इंडिया	लाला लाजपतराय।
वार ऑफ इंडियन इण्डियन इण्डिपेन्डेन्स	वी० डी० सावरकर।
हिंट्स फार सेल्फ कल्चर	हरदयाल।
इंडिया विन्स फ्रीडम,	अबुल कलाम आजाद।
नील दर्पण	दीन बन्धु मिश्र।
गीता रहस्य	बी० जी० तिलक।
तराना-एम्हिद	इकबाल।
सत्यार्थ प्रकाश	दयानन्द सरस्वती।
आनन्दमठ, कपाल, कुण्डली चन्द्रशेखर, दुर्गेश नन्दिनी।	बंकिमचन्द्र चटर्ज
पावर्टी एण्ड अनब्रिटिश रूल इन इंडिया	दादाभाई नौरोज
इंडियन स्ट्रगल	सुभाषचन्द्र बो
ए नेशन इन मेकिंग	सुरेन्द्रनाथ टैगो
हाउ इंडिया फॉट फॉर फ्रीडम,	एनी बेसेन्ट
आत्महत्या	
ए फेज आफ द इंडियन स्ट्रगल	श्यामा प्रसाद मुखर्ज
गीतांजलि, चित्रा, गोरा, हंगरी स्टोन्स, पोस्ट ऑफिस, क्रीसेन्टमून, कोर्ट डान्सर, गार्डनर	रवीन्द्रनाथ टैगो
इंडिया फ्राम कर्जन टू नेहरू एण्ड आफ्टर	दुर्गादास
लाइफ डिवाइन, एसेज अन गीता सावित्री	अरविन्द घो
ब्रोकनविंग, सांग ऑफ इंडिया, गोल्डेन थ्रेश वर्ल्ड ऑफ टाइम	सरोजिनी नायड
रिलीजन एण्ड कल्चर, नेशन्स वायस, रिकान्सीलियेशन	सी० राजगोपालाचार
हिन्दू व्यू ऑफ लाइफ, रेलिजन एण्ड सोसाइटी, रेलिजन एण्ड कल्चर इंडियन फिलासफी, ईस्ट एण्ड वेस्ट इन रेलिजन, आइडियलोजिस्ट व्यू ऑफ लाइफ	डॉ० राधाकृष्णन
द स्टोरी ऑफ माई लाइफ	मोरार जी देसा
द स्कोप ऑफ हैपीनेस	विजयलक्ष्मी पंडित
वायसराय जनरल (लार्ड वैवेल)	विंस्टन चर्चिल
मैदरिंग स्टार्म्स, हिस्ट्री ऑफ द सेकेण्ड वर्ल्डवार	
माउन्ट बेटन एण्ड पार्टिशन ऑफ इण्डिया	लैरीकालिन्स डोमिनिक
फ्रीडम एट मिडनाइट, फिफ्थ हार्समेन	लैपियरे
भारत विभाजन के गुनहगार	डॉ० राम मनोहर लोहिया
इंडिया टूडे	रजनी पामदत्त
इंडियाजपास्ट	आर्थर-ए-मैक्डोनिल
इंडियन रेनेसा	सी० एफ० एन्ड्रुज
इंडियन इस्लाम	टाइटस
इनफैन्ट मैरेज एण्ड इनफोर्सड विडोहुड इन इंडिया	बी० एम० मालाबारी
अहमदिया मूवमेन्ट (अहमदिया आन्दोलन)	एच० ए० वाटर
ब्रह्म समाज	मनीलाल सी० पारोखि
क्रिश्चियानिटी इन इंडिया	सर जान० के०
कान्फेशन ऑफ ए-ठग	मीडोज टायलर
एजूकेशन इन इंडिया	आर्थर मेहाऊ
एसेज ऑन इंडियन आइडियलिज्म	ए० के० कुमारस्वामी
हिस्ट्री ऑफ द हिन्दूज	वार्ड
हिस्ट्री ऑफ इंडियन लिटरेचर	एम० विन्टरनित्ज
इंडिया अन्डर कर्जन एण्ड आफ्टर	लोवट फ्रेजर
इंडिया एण्ड इंडियन मिशन	अलेकजेन्डर डफ
लार्ड कर्जन इन इंडिया	सर टी० रेले
मार्डन इंडिया एण्ड द इंडियन्स	मोनियर विलियम्स
रेलिजन एण्ड सोशल रिफॉर्म्स	एम० जी० रानाडे
मॉर्डन वरनाक्यूलर लिटरेचर ऑफ हिन्दुस्तान	जार्ज प्रियर्सन
मिसेज बेसेन्ट-ए साइकोलाजिकल स्टडी	विपिनचन्द्र पाल
एलन आक्टोपियन ह्यूम	सर विलियम वेडरवर्न
इंडिया	सर वेलेन्टाइन शिरोल
इंडियाज स्ट्रगल फॉरफ्रीडम	हरेन्द्रनाथ मुकर्जी
इंडियन डायरी	इ० एस० मान्टेग्यू
नेशन इन मेकिंग	सुरेन्द्रनाथ बनर्जी
पाकिस्तान और द पार्टीशियन ऑफ इंडिया	बी० आर० अम्बेडकर
द रीडल्स ऑफ हिन्दूइज्म	बी० आर० अम्बेडकर
इंडिया अन्डर रिपन	डब्लू, एस० ब्लन्ट
इंडिया ए नेशन	एनी बेसेन्ट (1915)

प्रमुख किसान आन्दोलन

किसान आन्दोलन	क्षेत्र	वर्ष	कारण	परिणाम
संथाल विद्रोह	मानभूम, बड़ाभूम सिंहभूमि, हजारी-बाग, मिदिनापुर, बांकुड़ा	1855-56	1793 के स्थायी बन्दोबस्त के कारण भूमि पर जमींदारों का अधिकार, बंगाल व उत्तर भारत के साहूकारों की सूदखोरी, पुलिस तथा न्याय प्रशासकों द्वारा भी साहूकारों का पक्ष लेना। इस शोषण व अत्याचार से तंग आकर सीदू व कान्हू के नेतृत्व में विद्रोह।	1856 ई० में विद्रोह कठोरतापूर्वक दबा दिया गया व नेता बन्दी बना लिये गये।
नील विद्रोह	बंगाल	1860	अंग्रेजों द्वारा बिहार व बंगाल के जमींदारों से भूमि प्राप्त कर नील खेती करना जबकि पहले यह खेती भारतीय किसानों द्वारा की जाती थी। अंग्रेजों द्वारा भारतीय किसानों के साथ दास जैसा व्यवहार करना। फलस्वरूप 1860 में पाबना व नदिया के किसानों द्वारा हड़ताल। हड़ताल का अन्य स्थानों जैसे खुलना, ढाका मालदा, दिनाजपुर आदि कई स्थानों पर फैलना।	बाध्य होकर 1860 ई० में अंग्रेजों द्वारा एक नील आयोग नियुक्त किया गया। बंगाल में नील उत्पन्न करने वाले अंग्रेजों ने मात खायी। अन्त में बिहार व यू० पी० में चले गये।
मराठा कृषकों का विद्रोह	दक्षिण भारत	1875	मारवाड़ी तथा गुजराती साहूकारों के विरुद्ध क्योंकि ये साहूकार ऋणों में हेराफेरी करके किसानों का शोषण करते थे।	1879 में कृषक राहत अधिनियम बनाया गया।
पंजाबी कृषकों का असंतोष	पंजाब	1899-1900	अत्यधिक भूमिकर तथा अकाल, कृषकों की भूमि का कृषक वर्ग के पास हस्तान्तरण।	1900 में पंजाब भूमि अन्य क्रामण अधिनियम (Punjab Land Alienation Act) पारित होना।
चम्पारन विद्रोह	बिहार	1917	यूरोपीय नील उत्पादकों द्वारा भारतीय किसानों को उत्पीड़ित किया जाना, गाँधी द्वारा डॉ० राजेन्द्र प्रसाद की सहायता से उन्हें सत्याग्रह के लिये प्रेरित करना।	'चम्पारन कृषि अधिनियम' पारित होना। इसके द्वारा नील उत्पादकों द्वारा विशेष प्राप्ति बन्द कर दी गई। परन्तु कांग्रेस नेताओं ने इस सफलता को अन्त तक नहीं पहुंचाया। साहूकारों द्वारा अत्यधिक भाटक वसूल करना तथा अधिक ब्याज दरें लेना बन्द नहीं हुआ।
खेड़ा आन्दोलन	बम्बई	1918	सूखे के कारण फसलें नष्ट होना जिससे कृषकों का कर देने में असमर्थ होना परन्तु सरकार द्वारा बिना किसी छूट के कर वसूल करना, गांधी के नेतृत्व में सत्याग्रह।	बम्बई सरकार को माँगे मानने के लिये बाध्य होना पड़ा।
बारदोली आंदोलन	गुजरात	1922, 1928	सरकार द्वारा लगान में 25% वृद्धि करना, गाँधी के नेतृत्व में यह आन्दोलन हुआ। 1928 में दोबारा सरदार वल्लभ भाई पटेल के नेतृत्व में विद्रोह।	गाँधी के असहयोग आन्दोलन स्थगित करने पर यह आन्दोलन भी समाप्त हो गया। इस बार किसानों के समक्ष सरकार को झुकना पड़ा।
तेलिंगाना विद्रोह	हैदराबाद	1946	यह विद्रोह जमींदारों, साहूकारों तथा निजाम के अधिकारियों के विरुद्ध था। इस विद्रोह में कम्यू-निस्ट पार्टी ने विशेष भूमिका निभाई।	बहुत से अधिकारी या तो भाग गये या उनकी हत्या कर दी गई।
वर्ली विद्रोह	बम्बई	1945	आदिम जाति के लोगों ने किसान सभा की सहायता से यह आन्दोलन किया। यह आन्दोलन साहूकारों भूमिपतियों तथा जंगल के ठेकेदारों के शोषण के विरुद्ध था।	पुलिस का दमन-चक्र इन्हें झुका नहीं सका। धीरे-धीरे ये साम्यवादी दल के प्रभाव में आ गये।
तेभाणा आन्दोलन	बंगाल		यह आन्दोलन बर्गदारों (फसल के भागीदारों, द्वारा साहूकारों, व्यापारियों के शोषण के विरुद्ध था।	सुहरावर्दी की सरकार ने एक बर्गदारी विधेयक पारित किया, जिससे भाटक देने वालों को कुछ राहत मिली।

1857 के विद्रोह के बारे में इतिहासकारों के मत

मत	इतिहासकार
1. एक संस्थापित सरकार के विरुद्ध भारतीय सेना का विद्रोह	सर जॉन सीले
2. इसाई धर्म के विरुद्ध एक धर्म युद्ध	एल. ई. आर. रीज
3. सभ्यता एवं बर्बरता के बीच संघर्ष	टी.आर. होम्ज
4. हिन्दू-मुस्लिम षड्यन्त्र	सर जेम्स आउट्रम
5. राष्ट्रीय विद्रोह	बेन्जामिन डिजरैली
6. राष्ट्रीय स्वतंत्रता के लिये सुनियोजित संग्राम	वीर सावरकर, अशोक मेहता
7. सामन्ती विद्रोह	पंडित जवाहर लाल नेहरू
8. सैनिक विद्रोह (स्वतंत्रता संग्राम नहीं था)	आर. सी. मजूमदार
9. स्वतंत्रता संग्राम	एस. एन. सेन, डॉ. ईश्वरी प्रसाद
10. सैनिक विप्लव तथा नागरिक विद्रोह	एस. बी. चौधरी
11. केवल सैनिक विद्रोह था जिसका तात्कालिक कारण चर्बी वाले कारतूस थे	पी. ई. राबर्टस (P.E. Roberts)

धार्मिक, सामाजिक एवं राजनीतिक चेतना उत्पन्न करने के लिये प्रकाशित समाचार-पत्र

समाचार पत्र	संपादक	भाषा	वर्ष
संवाद कौमुदी	राजाराम मोहन राय	बंगाली	1821
मिरातुल अखबार	राजाराम मोहन राय	फारसी	1822
सत्य प्रकाश	करसोनदास मुलजी	गुजराती	1852
सोम प्रकाश	ईश्वरचन्द्र विद्यासागर	बंगाली	1859
अमृत बाजार पत्रिका	मोती लाल घोष	बंगाली	1868
		अंग्रेजी	1878
लॉयल मुहम्मडेन्स ऑफ इंडिया	सर सैय्यद अहमद खाँ	उर्दू	1870
तहजीब-उल-अखलाक	सर सैय्यद अहमद खाँ	उर्दू	1870
हिन्दू	रानाडे	अंग्रेजी	1881
केसरी	तिलक	मराठी	1881
मराठा	तिलक	अंग्रेजी	1881
सत्यशोधक	मुकुन्दराव पाटिल	मराठी	1910
कॉमनवील न्यू इण्डिया	एनी बेसेन्ट	अंग्रेजी	1914
जस्टिस	ज्योतिबा फूले	अंग्रेजी	1917
नवजीवन	गाँधी	गुजराती, हिन्दी	1919
यंग इण्डिया	गाँधी	अंग्रेजी	1919
हरिजन	गाँधी	गुजराती, हिन्दी	1933
स्वदेश सेवक	जी० डी० कुमार	गुरुमुखी	

भारत का संवैधानिक विकास (1774 से 1947 तक)

अधिनियम	महत्वपूर्ण निर्णय
1. रेग्यूलेटिंग एक्ट, 1772	ब्रिटिश सत्ता का केन्द्रीकरण तथा बंगाल में एक सर्वोच्च न्यायालय की स्थापना।
2. चार्टर एक्ट, 1813	प्रथम बार भारतीयों की शिक्षा के खर्च के लिये प्रतिवर्ष एक लाख रुपये की व्यवस्था की गयी।
3. चार्टर एक्ट, 1833	कम्पनी का भारतीय व्यापार पर से एकाधिकार समाप्त कर दिया गया।
4. चार्टर एक्ट 1853	नियुक्तियाँ बिना किसी भेदभाव के प्रतियोगी परीक्षा द्वारा की जाने लगीं। कम्पनी, भारतीय प्रदेश एक निश्चित समय तक नहीं अपितु जब तक साम्राज्ञी व उसके उत्तराधिकारी चाहें तब तक रख सकती थी।
5. भारतीय परिषद अधिनियम, 1858	कम्पनी का भारतीय शासन ब्रिटिश क्राउन को हस्तांतरित कर दिया गया। शासन की देखभाल के लिये भारत सचिव तथा भारत मंत्री की व्यवस्था की गई।
6. भारतीय परिषद अधिनियम, 1861	पहली बार विभागीय एवं मंत्रिमंडलीय प्रणाली की नींव रखी गई।
7. भारतीय परिषद अधिनियम, 1892	पहली बार विधान परिषद को बजट पर बहस करने का अधिकार मिला।
8. भारतीय परिषद अधिनियम, 1909	मुसलमानों को पृथक् निर्वाचन क्षेत्र की सुविधा तथा परिषद में अध्यक्ष की अनुमति से सार्वजनिक हित के प्रश्न पूछने का अधिकार दिया गया।
9. भारतीय परिषद अधिनियम, 1919	प्रान्तों में द्वैध शासन व्यवस्था स्थापित की गई व केन्द्र को दो सदनीय सभा बनाया गया (विधान सभा एवं राज्य परिषद)।
10. भारतीय परिषद अधिनियम, 1935	प्रान्तों में स्वायत्त शासन की व्यवस्था की गई तथा केन्द्र में द्वैध शासन।
11. भारतीय स्वाधीनता अधिनियम, 1947	विभक्त भारत की स्वतन्त्रता स्वीकार की गई।

क्रान्तिकारी आन्दोलन (1920 के पश्चात्)

1. काकोरी षडयन्त्र केस	1925	क्रान्तिकारियों के एक दल ने हरदोई से लखनऊ जा रही एक रेल को काकोरी स्थान पर रोका और एक बक्से में बन्द सरकारी खजाने को लूट लिया। काकोरी केस के अन्तर्गत रामप्रसाद बिस्मिल, रोशन सिंह, राजेन्द्र लाहिड़ी, अशफाकउल्ला खाँ को फाँसी दी गई।
2. सैंडर्स की हत्या	1928	पुलिस द्वारा लाठी चार्ज करने पर लाला लाजपतराय की मृत्यु हो गई थी। पुलिस अफसर सैंडर्स को इस घटना के लिये उत्तरदायी समझा गया था। अतः क्रान्तिकारियों ने दिसम्बर 1928 को सैंडर्स की हत्या कर दी।
3. केन्द्रीय विधानसभा में बम बिस्फोट	1929	अप्रैल 1929 को भगतसिंह एवं बटुकेश्वरदत्त ने विधानसभा में दो बम फेंके। ये बम किसी भी हत्या के लिये नहीं वरन् विरोध प्रकट करने के लिये थे। 23 मार्च 1931 को भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव को फाँसी की सजा दी गई।
4. चटगाँव के पुलिस शस्त्रागार पर हमला	1930	इण्डियन रिपब्लिकन आर्मी के क्रान्तिकारियों ने सूर्यसेन के नेतृत्व में यह हमला किया।
5. जेल के पुलिस अधीक्षक की हत्या	1930	दिसम्बर 1930 में विनय घोष, बादल गुप्ता, दिनेश गुप्ता ने कलकत्ता की राइटर्स बिल्डिंग में प्रवेश कर जेल के पुलिस अधीक्षक की हत्या कर दी।

प्रमुख गुप्त क्रान्तिकारी संगठन

संगठन का नाम	स्थापना वर्ष	स्थान	संस्थापक
मित्र मेला	1899	महाराष्ट्र	सावरकर बन्धु (गणेश एवं वी० डी० सावरकर)
अनुशीलन समिति	1902	बंगाल	वारिन्द्र कुमार घोष, जतीन्द्र नाथ बैनर्जी, प्रबोध मित्र, पुलिन दास ने 1902 में ही इसका शाखा ढाका में स्थापित की।
अभिनव भारत	1907	महाराष्ट्र	गणेश सावरकर
गदर पार्टी	1918		सेन फ्रांसिस्को (अमेरिका) ला हरदयाल तथा सोहनसिंह भकना
हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसियेशन	1924	बंगाल	सचिन सान्याल तथा जोगेश चटर्जी
इण्डियन इण्डिपेंडेंस लीग	1942	जापान	रास बिहारी घोष

क्रान्तिकारी संगठनों द्वारा प्रकाशित समाचार पत्र/पत्रिका

समाचार पत्र/पत्रिका	स्थान	प्रकाशक
युगान्तर (1906)	बंगाल	वारिन्द्र घोष और भूपेन्द्र दत्त
काल (1906)	महाराष्ट्र	महाराष्ट्र के क्रान्तिकारी
संध्या (1906)	बंगाल	ब्रह्मदेव उपाध्याय
वन्दे मातरम्	पेरिस	मैडम कामा
फ्री हिन्दुस्तान	वेन्कूवर	तारकनाथ दास
गदर	सेन फ्रांसिस्को	गदर पार्टी
तलवार	बर्लिन	वीरेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय
इण्डियन सोशियोलॉजिस्ट	लन्दन	श्यामजी कृष्ण वर्मा
गणवाणी	बंगाल	गोपू चक्रवर्ती तथा धरानी गोस्वामी
क्रान्ति (1927)	महाराष्ट्र	एस० एस० मिराजकर, के० एन० लौगलेकर तथा एस० वी० घाटे।
बन्दी जीवन	बंगाल	सचीन्द्रनाथ सान्याल।
कीर्ति (1926)	पंजाब	संतोष सिंह
आत्म शक्ति, सारथी धूमकेतु, बिजली	बंगाल	बंगाल के आतंकवादी राष्ट्रवादियों द्वारा